॥ श्री ॥

आदर्श नगरी

प्रथम भाग

बा. बेणीप्रसाद द्वारा लिखित

माधो प्रसाद स्वामि पुस्तक कार्य्यालय
धर्मकूप काशी द्वारा
प्रकाशित।

Printed by Madho Prasad
Dharmakoop, Bharat Press, Benares City.

Only cover Printed by B. L. Pawagi
at the Hitchintak Press, Ramghat, Benares City

(प्रथमबार १०००)   १९१३.   मूल्य ॥)

ओ३म्

आदर्श नगरी

प्रथम परिच्छेद ।
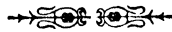
"इन अंगरेज़ी अख़बारों के लेख भी क्या ही अच्छे होते हैं" यह कहते हुये हमारे सुयोग्य डाक्टर साहब एक आराम कुर्सी के सहारे से बैठ गए ।

डाक्टर हरिनाथ को आप ही आप बड़बड़ाने की जन्म से बान थी, जिस से इनका मिज़ाज कुछ सनकी सा मालूम होता था ॥ इन की उम्र लगभग पचास वर्ष के होगी; और इन के सूरत शकल से भलमनसाहत टपकती थी ॥ सोने की कमानी के चशमे के अन्दर से इन की रसीली स्वच्छ आंखें और चेहरे का भोला भाला गंभीर भाव बतला रहा था कि "यह मनुष्य ज़रूर एक सज्जन पुरुष" है ॥

यद्यपि अभी सूर्य अच्छी तरह से उदय नहीं हुए थे, पर हमारे डाक्टर साहब स्नानादि से निश्चिन्त हो एक पञ्जाबी आस्तीन का ढीला ढाला कुर्ता पहने एक कुर्सी पर ढासना लगाए हाथ में एक अंगरेज़ी अख़बार लिये पढ़ रहे थे और उन के दिल्ली वाले बाग़ के इस कमरे के फ़र्श के गलीचे पर "अमृतबाज़ार पत्रिका", "बङ्गाली" और "स्टेट्समैन" की ताज़ी कापियां पड़ी थीं और उन के सामने टेबुल पर कांच की रक़ाबियों में किसमिस, छुआरा, बदाम वगैरः चुना हुआ था जिस में से वह बीच बीच में एक आध फंका मार लेते

थे॥ उस अखबार को पढ़ते पढ़ते बीच में फिर वह बोल उठे कि " इन अखबारों के आर्टिकिल बड़ी खूबी के साथ लिखे गये हैं, इस में ज़रा भी सन्देह नहीं है, इस में प्रेसीडेन्ट की स्पीच, डाक्टर अमरनाथ का जवाब और मेरा पूरा व्याख्यान ज्यों का त्यों छपा है मानों इन्हें हवा ही में पकड़ के सम्पादक जी ने इन का फोटो उतार लिया है" "डाक्टर साहब ने यों पढ़ना शुरू किया"-"इस के बाद दिल्ली के डाक्टर हरिनाथ साहब उठे और अपना व्याख्यान आरम्भ किया, हमारे माननीय डाक्टर साहब ने हिन्दी में व्याख्यान आरम्भ करते हुए कहा कि आशा है कि आप लोग बुरा न मानेंगे यदि इस अंगरेजी शिक्षा दीक्षा के ज़माने में अपनी मातृभाषा हिन्दी ही को आप तक अपने ख्यालात पहुंचाने का सब से उत्तम उपाय समझ कर काम में लाऊं, क्योंकि मुझे विश्वास है कि यदि आदत न होने के कारण चाहे मैं अच्छी हिन्दी न बोल सकूं, पर आप लोगों को इस के समझने में ज़रूर सुगमता होगी" ।

"ओहो! ऐसे महीन अक्षरों में भरपूर पांच कालम" !

"मैं किस की रिपोर्ट को अच्छा कहूं, 'पत्रिका' या 'बंगाली' को, पूरा पूरा यथार्थ वृतान्त छापने में एक दूसरे से चढ़े बढ़े हैं" ।

डाक्टर साहब अभी यहीं तक अपने विचार के घोड़े को दौड़ा पाए थे कि इतने में दरवाज़ा खोल कर हाथ में एक कार्ड लिए हुए एक छोकरे ने कमरे में प्रवेश किया और डाक्टर साहब के हाथ में कार्ड दे कर खड़ा हो गया ।

"बाबू हरेन्द्र कुमार चौधरी वकील हाईकोर्ट नम्बर ३४ वेलिंगटन स्कायर कलकत्ता", यह वकील साहब कौन हैं? मुझ से इन का क्या काम? मुझ पर किसीने मेरे बिना

जाने ही कोई मुक़द्मा तो नहीं कायम कर दिया", अबे रामधन क्या यह कार्ड मुझे ही देने के लिये उन्होंने कहा है? "जी हुजूर" रामधन ने जवाब दिया, "अच्छा उन्हें बुला ला" "डाक्टर साहब बोले"। पतली झुर्री पड़ी हुई होंठ, बाहर निकले हुये लम्बे लम्बे दांत, ऊंची ऊंची उठी हुई गाल की हड्डियां और झुररियां पड़ा हुआ चेहरे का चमड़ा तथा गड़हे में धंसी हुई आंखों ने इसे खासा कब्र का मुर्दा बना रखा था। यह महाशय एक लम्बा काला चपकन तथा सफ़ेद ज़ीन का पतलून पहने हुये थे और हाथ में एक विलायती चमड़े का बैग लिये हुये थे।

वे कमरे में आते ही डाक्टर साहब को सलाम कर बिना कहे ही एक कुर्सी खींच कर बैठ गये और अपनी बातों का सिलसिला यों कह कर शुरू कर दिया "माफ़ कीजियेगा, जनाब यदि मुझ से कुछ बेअदबी हुई हो, मेरा नाम हरेन्द्र कुमार चौधरी है और मैं मिसर्स चौधरी एण्ड को एटर्नी हाईकोर्ट के फ़र्म का एक हिस्सेदार हूं। क्या आप ही डाक्टर हरिनाथ साहब हैं?

जी, हां।

डाक्टर हरिनाथ एल० एम० एस० वकील ने कहा!

जी, हां मैं ही हूं, डाक्टर साहब ने जवाब दिया:--

आप काश्मीरी सारस्वत ब्राह्मण हैं न?

जी,

आप के पिता का नाम हरनारायण था?

जी, हां यही नाम था--

ठीक है उन्हें लोग पण्डित हरनारायण कहते थे, इतना कह कर हरेन्द्र बाबू ने एक पाकेट बुक निकाली उसे उलट

पुलट कर देख और फिर कहने लगे, पण्डित हरनारायण साहब का देहान्त सन् १८५७ ईस्वी की ७वीं जुलाई को महल्ला अनारकली लाहौर में हुआ"

"आप ठीक कहते हैं" डाक्टर साहब ने बड़े ताज्जुब में आकर कहा; पर क्या आप कृपा कर बतलायेंगे कि आपने मेरे पास आने की तकलीफ़............?

हां, "उन की माता का नाम" वकील साहब ने बिना अपनी धुन छोड़े हुये कहा "हरकुमारी था, जो जम्बू के पण्डित राजीव लोचन की कन्या थीं, और जो सन् १८१२ ई० में स्वर्गारोहण कर गईं जैसा कि वहां के म्युनिसिपल रजिस्टर से विदित हुआ है ।

यह रजिस्टर सब बड़े काम के हैं -जी, जनाब- बड़े ही ज़रूरी हैं, और हां हां इस हरकुमरी का एक भाई भी था न, जो ३६ वीं डोगरा पलटन में सूबेदार मेजर----" डाक्टर साहब बड़े चकित थे कि इस वकील को हमारी पूरी बंसावली क्यों कर मालूम हो गई और मुसकरा कर उन्हों ने कहा कि "मुझ से आप क्या पूछते हैं, मैं तो देखता हूं कि आप ही मुझ से ज्यादा मेरी बंसावली जानते हैं, ठीक है मेरी दादी का नाम हरकुमारी था, पर और ज्यादा मैं उन के बारे में कुछ नही जानता" ॥

सन् १८०७ ई० के करीब आप की दादी आप के दादा महाराज नारायण के साथ जम्बू छोड़ कर जालन्धर में आ बसीं जहां आप के दादा एक सरकारी विद्यालय में हेड पण्डित का कार्य्य करने लगे और वहीं सन् १८११ ईस्वी में आप की दादी आप के पिता हरनारायण नाम के एक पुत्र को छोड़ कर स्वर्ग सिधार गईं, तब से ले कर लाहौर में पण्डित महाराज नारायण की मृत्यु तक का पता तो चलता

है, पर उस के बाद का फिर कुछ पता नहीं लगता" ।

"लीजिये मैं न बतलाये देता हूं" डाक्टर साहब ने अपनी बंसावली का ज्यों का त्यों हाल सुन कर कुछ उत्सुक हो कहा "मेरे दादा अपने दूसरे लड़के को रुड़की कालिज़ में इञ्जिनियरिंग की शिक्षा दिलवाने के लिये लाहौर में जा बसे थे, उन का वह लड़का १८३२ ईस्वी को रुड़की में मर गया जहां मेरे पिता वैद्यगी करते थे और जहां सन् १८२२ ई० में मेरा जन्म हुआ था ॥

"बस बस, आप ही हैं" हरेन्द्र बाबू चिल्ला उठे" "आप के और कोई भाई बहिन नहीं हैं न ?

कोई नहीं "मैं ही अपने पिता का एकलौता लड़का था; मेरे जन्म के दो वर्ष बाद मेरी माता का देहान्त हो गया" ॥

अच्छा जनाब अब आप कृपा कर ज़रा...........?

डाक्टर साहब की बातों का कुछ जवाब न देकर, हरेन्द्र बाबू सहसा खड़े हो गये और बड़े अदब के साथ झुककर बीसों सलाम करते हुए चिल्ला कर बोले "महाराजाधिराज महाराज सिताबचन्द्र बहादुर" बड़े आनन्द की बात है कि मैं हुजूर का पता लगा सका और मुझे ही पहले पहल हुजूर को इस पदवी से अभिवादन करने का अवसर प्राप्त हुआ है, यह मेरे बड़े सौभाग्य हैं" । डाक्टर साहब वकील साहब की यह हरकत देख कर भौचक्के हो गये और सहसा उन के जी में यह ख्याल पैदा हुआ कि "क्या यह आदमी पागल तो नहीं है, क्या ताज्जुब है कि ऐसा ही हो, क्योंकि इस की जैसी शकल सूरत है इस के दिमाग़ में कुछ ख़लल होना असम्भव नहीं", पर हमारे चतुर वकील साहब ने डाक्टर साहब के जी की बात उन के आंखों ही से ताड़ ली और

मुसकराकर कहने लगे, "हुजूर ! आप क्या मुझे पागल समझते हैं, पर यह ताबेदार आप को यक़ीन दिलाता है कि सब बातें जो हुजूर ने सुनी हैं ऐसी सच हैं जैसे सूर्य की रोशनी, आप ही इस समय महाराज सिताबचन्द्र की पदवी के वारिस हैं, जिन्हें महारानी शैलकुमारी ने अपनी कुल जायदाद एक वसीयत द्वारा दान कर दिया था। उक्त महाराजा केवल एक पागल लड़के को छोड़ कर परलोक सिधार गये थे, जो सन् १८६९ ईस्वी में निस्संतान मर गया और जिस की ज़िन्दगी भर स्टेट का कुल इन्तिज़ाम पञ्जाब गवर्णमेण्ट करती थी" गवर्णमेण्ट की सरपरस्ती में सूद इत्यादि से बढ़ते बढ़ते इस स्टेट की पूंजी कई करोड़ रुपये की हो गई थी ॥

सन् १८७० ईस्वी में पंजाब गवर्नमेण्ट की ओर से प्रकाशित किया गया था कि कुल जायदाद की कीमत इस समय ३६०००००० (छत्तीस करोड़) रुपये हैं, और लाहौर के चीफ़ कोर्ट तथा हाईकोर्ट की आज्ञा और विलायत की "प्रीवी कौंसिल" के अनुमोदन अनुसार सारी जायदाद बेंच कर ३६ करोड़ नक़द रुपया बंक बङ्गाल में जमा कर दिया गया ॥ "यह छत्तीस करोड़ रुपया आप ज्योंहीं पञ्जाब हाईकोर्ट में अपनी बंसावली पेश कर देंगे त्योंहीं आप मालिक हो जायँगे। तब तक आप को जो कुछ रुपये की ज़रूरत हो, तो मैं आप को अपनी ज़मानत पर राय गागरमल साहब अमृतसर वाले से दिलवा दूंगा" ।

कुछ देर तक तो डाक्टर साहब हक्के बक्के से होकर छत की ओर देखते रहे, फिर यह बिश्वास कर कि यह अद्भुत कहानी बे बुनियाद गढ़ी गई है, शान्ति भाव से बोले 'सब कुछ है सही, पर जनाब यह तो बतलाइये कि इन बातों

का प्रमाण क्या है और मेरा पता ही आप को किस ज़रिये से लगा ?

'हुजूर प्रमाण सब इस में है' हरेन्द्र बाबू ने हाथ वाले चमड़े के बैग को थपथपा कर कहा॥ और हुजूर का पता मुझे क्योंकर लगा सो सुनिये; मैं ५ वर्ष से हुजूर के खोज में हूं॥ जितने बड़े बड़े स्टेट गवर्नमेण्ट के क़ब्ज़े में पड़े हैं और जिन के वारिसों का कुछ पता नहीं है उन का पता लगाना ही हमारे वकीलों के फर्म का 'विशेष' काम है॥

पांच वर्ष से महारानी शैलकुमारी की जायदाद के वारिस के खोज में हम अपना सारा परिश्रम और बुद्धि खर्च कर रहे हैं॥ हमने सब तरफ़ खोज की, सैकड़ों घराने की वंशावलियों का छानबीन किया पर पण्डित हरनारायण के नाम का पता कहीं भी न लगा॥ मुझे प्रायः विश्वास सा हो गया था कि भारतवर्ष भर में इस नाम के काश्मीरी सारस्वत ब्राह्मण का पता नहीं लग सकता, कि एक दिन अमृतबाज़ार पत्रिका पढ़ते पढ़ते मेरी निगाह एक 'मीटिङ्ग' के रिपोर्ट पर पड़ी, जिस के मेम्बरों में डाक्टर हरिनाथ एक काश्मीरी सारस्वत के नाम का ज़िक्र था नाम हरिनाथ यह तो हरनारायण के नाम से मिलता जुलता है फिर काश्मीरी सारस्वत ब्राह्मण जरा खोजो तो सही इस विचार से मैं घर से चल पड़ा और उक्त सभा में जाकर आप के पिता के नाम का पता लगाया और जब सुना कि उन का नाम हरनारायण था तो मेरी खुशी का कुछ ठिकाना न रहा। हुजूर की शकल ठीक ठीक आप के दादा के बड़े भाई पंडित शान्तिनाथ से मिलती है जिनका एक 'फ़ोटो' मौजूद है

यह कह कर हरेन्द्र बाबू ने अपने पाकेट बुक से एक 'फ़ोटो' निकाल कर डाक्टर साहब के हाथ में दिया। यह

एक सफ़ेद लम्बी दाढ़ी वाले भरपूर क़द्के सुन्दर पुरुष की आकृति थी, जिस के सिर पर सफ़ेद साफ़ा बन्धा हुआ था और कुरते की जगह एक मूल्यवान् काश्मीरी दुशाले का चोगा पड़ा हुआ था, तथा सिर के साफ़े पर मझोले कद के दानों की मोती की एक लड़ी लिपटी हुई थी, और गले में पञ्जाबी जरी का जूता और सफ़ेद पैजामे का थोड़ा सा हिस्सा दिखाई देता था बाकी का भाग चोगे से ढका हुआ था ॥

'आप ज़रा इन काग़जों को खूब ध्यान से पढ़ जाइये फिर आप को सब हाल मालूम हो जायगा' हरेन्द्र बाबू कहने लगे और 'तब तक घंटे दो घंटे में मैं फिर हुजूर की सेवा में हाज़िर होऊंगा फिर हुजूर की जैसी आज्ञा होगी बजा लाऊंगा' यह कह कर हमारे वक़ील साहब ने अपने बेग से सात आठ बंडल कागज़ों के जिन में से कुछ छपे हुये और कुछ हाथ के लिखे थे, डाक्टर साहब के सामने टेबुल पर रख दिये और बड़े ही अदब के साथ झुक कर प्रणाम करते हुये कमरे के बाहर चले गये ।

डाक्टर साहब की विचित्र हालत थी, कभी तो उनको इन सब बातों पर कुछ कुछ विश्वास आता, फिर कभी तमाम बातें स्वप्न सी मालूम पड़तीं और इसी शशपञ्ज में उन्होंने एक एक करके उन काग़जों को देखना शुरू किया ।

उन काग़जों के पढ़ने से थोड़ी ही देर में उन का सब सन्देह जाता रहा और वक़ील की बातों पर उन का विश्वास हो गया ॥ छपे हुये दलीलों में से एक को डाक्टर साहब ने यों पढ़ा :---

'तारीख़ ५ जनवरी सन् १८७० ईस्वी को कैसरे हिन्द मल्का मुअज़्ज़मा के माननीय प्रवी कौंसिल के महामहिम

लार्डों के सन्मुख पञ्जाब की महारानी शैलकुमारी के जायदाद के उत्तराधिकारी न होने का प्रमाण उपस्थित किया गया ॥ इस मुक़द्दमे का पञ्जाब के ज़िला होशियारपुर की रानी शैलकुमारी के छोड़े हुये मकानात, ज़मीन, ग्राम, कोठी ज्वाहिरात, स्वर्णमुद्रा और हथियार इत्यादि के मालिकाना हक़्क़ से सम्बन्ध है' ।

'पञ्जाब हाईकोर्ट में जो गवाह पेश किये गये और जो प्रमाण संगृहीत हुये उन से साबित होता है कि महाराजा लक्ष्मीशङ्कर की बिधवा रानी शैलकुमारी अपने पति की मृत्यु के बाद उन के जायदाद की एक मात्र अधिकारिणी हुई, उस के कुछ ही दिन बाद पण्डित शान्तिनाथ नाम के एक काश्मीरी सारस्वत ब्राह्मण से रानी साहिबा का लाहौर आर्य्य समाज के उद्योग से पुनर्विवाह हुआ ॥ महाराजा लक्ष्मीशङ्कर की गद्दी के राजाओं को महाराज सिताबचन्द्र बहादुर की परम्परागत उपाधि थी अत एव रानी शैलकुमारी के उद्योग और नाना प्रकार के उपाय से पण्डित जी भी इस उपाधि से बिभूषित हो गये ॥ इस बिवाह से रानी शैलकुमारी को एक पुत्र हुआ जो जन्म से ही पागल था । सन् १८३९ इस्वी में रानी शैलकुमारी की मृत्यु हो गई और उसी के दो वर्ष बाद पण्डित शान्तिनाथ भी चल बसे, और उक्त पागल लड़का सरपरस्तों के आधीन रक्खा गया तथा ट्रस्टी लोग बड़ी सावधानी से कुल जायदाद का इन्तिजाम करने लगे । सन् १८६९ ईस्वी में वह पागल लड़का भी मर गया' ॥

इस अतुल सम्पत्ति के किसी वारिस का कुछ पता नहीं है । पञ्जाब हाईकोर्ट ने इस सारी जायदाद को लीलाम द्वारा बेचने की आज्ञा दी है, इस लिये लोकल गवर्नमेण्ट की

दरख्वास्त पर हम लोग प्रभी कौंसिल की ओर से उक्त कोर्ट के फैसले का अनुमोदन करते हैं--इत्यादि इस के नीचे प्रिवी कौंसिल के न्यायाधीशों के हस्ताक्षर थे।

और भी कई कागज़ातों को डाक्टर साहब ने खूब ध्यान से पढ़ा जिन में से पञ्जाब हाईकोर्ट के दलीलों की नक़ल, कई एक बैनामा, पञ्जाब में पण्डित शान्तिनाथ के घराने के खोज में जो जो कोशिशें की गई थीं उस का व्योरा और भी बहुत से प्रमाण पत्र थे, जिन के पढ़ने के बाद डाक्टर साहब के मन में कुछ भी सन्देह बाकी न रह गया॥

क्या ही अद्भुत बात थी। बङ्क बङ्गाल में जमा हुये छत्तीस करोड़ रुपये में और उन में केवल इतना ही फर्क था, जितना कि अपने कुछ पुरुषाओं की मृत्यु की तारीख का प्रमाण पत्र हाईकोर्ट में पेश करने में॥

बड़े से बड़ा गम्भीर आदमी भी इस महान् भाग्योदय के विचार से सहसा घबड़ा जाता, फिर हमारे डाक्टर साहब किस गिनती में थे, पर नहीं इन्होंने इस समय असाधारण गम्भीरता और धैर्य्य दिखाया और उठ कर कमरे में इधर उधर कुछ देर तक तेज़ी के साथ चहल कदमी कर उठते हुये उमङ्ग को शान्ति करने की चेष्टा करने लगे। थोड़ी ही देर में चित्त को ठिकाने लाकर वह अपने आप को इस उमङ्ग के वशीभूत होने के लिये धिक्कारने लगे और कुर्सी पर बैठ कर आंख मूंद किसी गहरी चिन्ता में डूब गये। फिर थोड़ी देर बाद होश में आकर उठ खड़े हुये और कमरे में पांच सात बार टहलते टहलते उन की आंखों से निकली हुई स्वच्छ और मन मोहनी ज्योति से ऐसा भास होने लगा मानों उन के मन में कोई महान् पवित्र भाव उदय हो रहा है और फिर चेहरे का स्थिर भाव देख कर बोध होने लगा कि

उन्होंने उक्त श्रेष्ठ विचार को काम में लाने का पक्का इरादा कर लिया है ॥ इतने ही देर में किसी के द्वार खटखटाने का शब्द हुआ ॥ यह वकील साहब थे जो अपनी प्रतिज्ञानुसार घंटे भर में लौट आये थे ॥ उन्हें देखते ही डाक्टर साहब बोले 'मैं ने आप की बातों में सन्देह किया था, इस लिये यदि आप नाराज़ हुये हों तो क्षमा कीजिये, मुझे आप की बातों का पूरा भरोसा हो गया है और आपने जो मेरे लिये तकलीफ़ उठा कर मेरा इतना उपकार किया उस का बदला मैं किसी तरह नहीं चुका सकता' ॥

नहीं जनाब । इस में तकलीफ़ काहे की यह तो मेरा पेशा ही है--मैंने तो फ़क़त अपना कर्त्तव्य पालन किया है और कुछ भी अहसान मैं आप पर नहीं कर सका हूं, पर मैं क्या आशा करूं कि हुजुर मेरे ही मुअक्किल रह कर मुझे सन्मानित करेंगे'? ॥

'यह भी क्या कहना होगा', डाकृर साहब बोले 'मैं इन सब बातों का कुल इन्तिज़ाम तुम्हारे ही ज़िम्मे छोड़ता हूं, फ़क़त आप से यही अर्ज़ है कि आप मुझे 'हुजूर हुजूर' कह कर न पुकारा करें मुझे यह पदवी एक बोझ सी मालूम पड़ती है' ॥

'हुजूर ! आप यह क्या फ़रमाते हैं, छत्तीस करोड़ की पदवी से इङ्कार', वकील साहब यह कहने ही को थे कि कुछ सोच कर रुक गये और कहा कि 'अच्छा जनाब, यदि आप की ऐसी मनसा है तो मुझे भी आप की आज्ञा सिर माथों पर है और यदि आप की आज्ञा हो तो अब मैं रुख़सत होऊं, क्योंकि मुझे इसी ट्रेन से लाहौर जाना है, फिर आप को जब ज़रूरत हो लिखियेगा, मैं आप की सेवा के लिये हाज़िर रहूंगा' ।

"क्या मैं इन दलीलों को अपने पास रखलूं" डाकृर साहब ने पूछा॥ खुशी से वकील साहब ने कहा और डाकृर साहब को सलाम करके चलते बने।

वकील साहब के चले जाने बाद डाकृर हरिनाथ जब अकेले हुये तो डेस्क के पास बैठ कर एक चिट्ठी लिखने लगे, जिस का भावार्थ यह है :—

दिल्ली २८—१०—११

प्यारे सुकुमार !

तुम्हें सुन कर अपार आनन्द होगा कि हम लोग सहसा बड़े धनवान हो गये हैं! शायद तुमने कभी इतने द्रव्य की बात सोची भी न होगी॥ यह मत समझो कि मैं पागल हो गया हूं—नहीं नहीं—चीट्ठी के साथ जो छपे हुये काग़ज़ भेजते हैं, उसे पढ़ना तो तुम्हें साफ़ मालूम हो जायगा, कि मैं एक बड़ी भारी सम्पत्ति का वारिस क़रार पाया हूं, जिस का मूल्य कई करोड़ रुपया है जो बङ्क बङ्गाल में जमा है॥ मैं उन उमङ्गों से अनजान नहीं हूं, जो इस पत्र के पढ़ते ही मेरे प्यारे सुकुमार के हृदय में लहरें मारेंगी॥ हम समझते हैं कि तुम्हारे दिल में इतनी भारी सम्पत्ति के सद्व्य करने की जवाब देही का ख्याल ज़रूर उदय होगा और यह भी ख्याल रखना कि इस अगाध धन ने हम पर बड़ी भारी जवाब देही डाल दी है, हमें अब बड़े सावधानी से सब तरफ़ का ख्याल रखते और लालच से बचते हुये इस धन को काम में लाना पड़ेगा॥ इस बात का पता लगे मुझे अभी एक घण्टा भी नहीं हुआ है, पर अभी से इस धन के सद्व्य करने की चिन्ता ने मेरे उमड़ते हुये आनन्द सागर को रोक दिया है॥ कौन कह सकता है कि इस परिवर्तन से सुख के बदले हमें दुःख नसीब हो॥ सामान्य गृहस्थ की अवस्था में हम बड़े

सन्तुष्ट और प्रसन्न थे क्या हम अब वैसे रहेंगे? मुझे तो सन्देह होता है—पर हां—एक बात—बस एक ही विचार— (क्या मैं तुम्हें दिल खोल कर, सहसा मेरे चित्त में जो विचार आया है बतला दूं?) जो मुझे संतोष देता है—हां—इस अतुल धन से हम अपनी रुचि अनुसार पदार्थ विज्ञान की उन्नति बड़े मज़े में कर सकेंगे और आहा! इस धन से मनुष्य जाति का उपकार और सभ्यता की उन्नति करके मुझे क्या ही प्रसन्नता होगी इस का जवाब जल्दी देना और लिखना कि इस अनहोनी बात का तुम्हारे चित्त पर क्या असर हुआ —अपनी मा को भी यह चिट्ठी सुना देना॥ मुझे विश्वास है कि वह जैसी समझदार स्त्री रत्न हैं वह इस समाचार को सुनकर कदापि विचलित नहीं होंगी और तुम्हारी बहिन तो अभी बच्ची है उस के नन्हें से दिमाग़ में इन बातों का कुछ असर होने ही क्यों लगा है,—हां उस का नन्हा दिमाग़ जरा शान्त भी तो है इस लिये हमें उम्मैद है कि यदि हम लोगों के इस भाग्योदय का कुछ अभास उसे मालूम होगा भी तो वह इसे बड़ी शान्ति से ग्रहण करेगी॥

रवीन्द्र को मेरी ओर से आशीर्वाद देना; आगे से अपने सारे कार्य्यों में उसे शामिल रक्खूंगा॥

तुम्हारा स्नेही पिता

हरिनाथ

इस चिट्ठी पर—

पण्डित सुकुमार चन्द्र मिश्र

विद्यार्थी प्रथम श्रेणी

रुड़की इनजिनियरिंग कालिज

रुड़की

यह ठिकाना लिखकर पत्र डांक में भेज दिया गया॥ इस के बाद डाकूर साहब कपड़ा पहिन कर स्वास्थ्य बर्द्धिनी

सभा की मीटिङ्ग में शामिल होने को घर से चल दिये ॥

पन्द्रह बीस मिन्ट में ही हमारे सीधे सादे डाकृर साहब ने करोड़ों रुपये की बात मन से भुला दी ॥

द्वितीय परिच्छेद ।
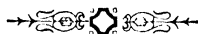
" यौवनं धन सम्पत्ती प्रभूत्वं अविवेकता ।
एकैक मपि अनर्थाय किमुयत्र चतुष्टयम्" ॥

हितोपदेश

दो विद्यार्थी ।

डाकृर हरिनाथ का एकलौता पुत्र सुकुमार कुछ गंवार सा था ॥ ऐसा मूर्ख भी न था कि उसे गधे की उपाधि दी जाती और न ऐसा सुजान ही था कि उसे बुद्धिमान कहा जाता, सूरत शकल में भी उसे न तो बदसूरत ही कह सकते हैं और न स्वरूपवान युवाओं की पंक्ति ही में उसे सहसा स्थान देने को जी चाहता है, कद भी मझोला ही था रंग भी यदि काला नहीं तो गुलाबी भी न था ॥ थोड़े ही में समझ लीजिये कि देखते ही एक भले मानुष सामान्य गृहस्थ का लड़का मालूम होता था ॥ कालिज में भी यह कभी उच्च स्थान अधिकार नहीं कर सका था, पर हां कभी यदि वृत्ति नहीं तो कुछ न कुछ इनाम इस के बांटे ज़रूर पड़ा था ॥ पहली साल इञ्जिनियरिङ्ग के एन्ट्रेन्स की परिक्षा में वह फेल हो गया था पर दूसरी बार ज्यों त्यों कर उस के "पास मार्कस" हो गये थे और उस ने कालिज डिपार्टमेण्ठ में पढ़ना आरम्भ कर

दिया था॥ इस का स्वभाव दृढ़ न था और बहुत कुछ सिर खपाने पर भी किसी विषय का वह कुछ मीमांसा नहीं कर सकता था॥ पाठ का विषय केवल कण्ठ कर लेना और इञ्जि-नियरिङ्ग के उपरटप्पू बातों के सामान्य ज्ञान ही को उसने पर्याप्त समझ रक्खा था॥ उस के मिज़ाज में थोड़ी बेपरवाही भी थी॥ इस में सन्देह नहीं कि ऐसे आदमी हाथ पैर छोड़ कर संसार समुद्र मे बहते रहते हैं, हवा के झकोरों और समुद्र की लहर ने उन्हें जहां लेजाकर फेंक दिया वहीं जागिरे । ऐसे आदमी कभी संसार रूपी समुद्र के गुप्त शत्रु रूपी पर्वतों के टक्कर से चूरचूर होकर लय को भी प्राप्त हो जाते हैं और कभी इत्ति-फ़ाक़ से किसी धन धान्य शाली टापू पर भी जा गिरते हैं, पर भाग्य के भरोसे हाथ पैर छोड़ कर संसार समुद्र में बह जाना शायद आज कल के विज्ञान के ज़माने में महा पाप माना जाता है, क्या करें हमारा सुकुमार केवल नामही का नहीं वर काम का भी सुकुमार था बलकि और यदि हमारे समझदार डाक्टर साहब अपने पुत्र के इस स्वभाव का पूरा ख्याल रखते तो वह पुत्र को ऐसा पत्र लिखते ज़रूर कुछ हिचकते, पर आप लोग तो जानतेही हैं कि वात्सल्य स्नेह कभी कभी बुद्धिमानों की बुद्धि पर भी परदा डाल देती है॥ पर सुकुमार के भाग्य कुछ अच्छे थे॥ कालिज में उसे एक ऐसा साथी मिल गया था कि जो उसकी सारी कमजोरियों पर इसे गिरने से बचाए हुआ था और अपने चरित्र बल और तीक्ष्ण बुद्धि से ज़बर्दस्ती उसे उच्च और महान् बातों की ओर खीचे लिये जाता था॥ कालिज में रविन्द्र नाम के एक ब्राह्मण कुमार से उस की गहरी मित्रता हो गई थी॥ यह लड़का पेशावर का रहने वाला था और यदि उम्र में सुकुमार से एक वर्ष छोटा था

पर बल बुद्धी और चरित्र की महानता में उस से कई दर्जे बढ़ा हुआ था ॥

इस के पिता पण्डित अमरेन्द्रनाथ इसे बारह वर्ष की उम्र में अनाथ छोड़ कर चल बसे थे और कुछ थोड़ी सी सम्पति छोड़ गये थे, जिस की आमदनी से ज्यों त्यों रविन्द्र के भोजन वस्त्र और पढ़ने का ख़र्चा चलता था ॥ पिता की मृत्यु के बाद संसार में अपना कहने वाला इस का कोई न रहा और वास्तव में उस का विद्यार्थी जीवन एक बोझ सा हो जाता यदि छुट्टी के मौके पर वह अपने सहाध्याई और मित्र सुकुमार के घर जाकर दिन न बिताता और हां—सुकुमार के माता पिता भी उस के अच्छे स्वभाव के कारण उसे पुत्र की नाईं स्नेह करने लग गये थे और यह भी उन्हें अपने पिता माता की नाईं श्रद्धा भक्ति करने लग गया था ॥ यद्यपि ऊपर से रविन्द्र का स्वभाव कुछ रूखा सा मालूम पड़ता था पर हमारे सुयोग्य डाकृर साहब ने शीघ्र ही ताड़ लिया कि रुखाई के आवरण में एक अति महान्, उदार, और कोमल स्नेह शाली हृदय छिपा हुआ है॥ वह सुकुमार के पिता माता की अन्तर से श्रद्धा करता और छुट्टी के समय जब उस के साथ घर आता तो उस की छोटी बहिन सरोजिनी को बड़े प्रेम और उत्साह से "बाल बोध" "हितोपदेश" "बनिता बिनोद" तथा तुलसी कृत रामायण इत्यादि का पाठ बतलादेता और बड़े ही कोमल स्नेह पूर्ण उपदेश दिया करता, यह बालिका भी अपना पाठ याद करने में नित्य नवीन उत्साह दिखाती और रविन्द्र के अमृत मय उपदेश बाक्यों को तन्मय होकर सुना करती थी॥ जब तक रविन्द्र घर पर रहता सरोजिनी का पाठ बड़ी शीघ्रता से चलता था पर उसके जाने बाद वैसी तेजी नहीं

रहती थी॥ उत्साही युवक घर पर बहिन और कालिज में भाई दोनों के चरित्र, मानसिक बल और वृत्ति तथा विद्या और ज्ञान की उन्नति के लिये जी जान से लगा रहता था॥ यद्यपि सुकुमार को लेकर उसे कभी कभी कुछ कठिनता पड़ती पर, अपनी दृढ़ता को अविचलित रख कर बन्धुहित के पवित्र कर्त्तव्य में सदा लगा रहता था॥

रविन्द्र नाथ उन विश्वासी और साहसी युवकों में से था जो जीवन के युद्ध में प्रायः विजयी होते हैं और अपने दुर्बल चित्त साथियों को भी खींचते खांचते उन्नति के शिखर पर ला बिठाते हैं॥

मानसिक और शारीरिक सब ओर की उन्नति का यह पूरा ख्याल रखता था, यद्यपि इस की उम्र अभी बीस वर्ष से अधिक न थी पर देखने वाला इन्हें सहसा सत्ताईस अठ्ठाईस वर्ष का जवान पुरुष कह सकता था, सारा शरीर मानों सांचे में ढला हुआ था और बड़ी बड़ी आंखों में तेजी और प्रतिभा झलकती थी, ऊंचे और चौड़े ललाट से बुद्धिमानी टपकती थी और सदा का हंसता हुआ चेहरा प्रफुल्लता और पूर्ण स्वस्थता का परिचायक था॥ कालिज में हर साल वह अच्छे अच्छे पुरष्कार का भागी होता था और हर प्रकार के खेल में अपते साथियों से सदा अव्वल रहा करता था॥ सुकुमार और यह दोनों एक ही साल कालिज में भर्ती हुये थे पर पहले ही वर्ष यह सेकेण्ड रहा और आगामी वर्ष अव्वल होने का पक्का इरादा रखता था॥ यदि यह सुकुमार को ज़बर्दस्ती खींच खींच कर, बरजोरी पाठ में उसे लगा कर अपने साथ साथ न लिये जाता तो वह कब का नीचे ही के दर्जे में पड़ा रहता॥ सुकुमार जब कालिज में भर्ती हुआ तो पढ़ने लिखने में उस का ज्यादे मन न था, पर रविन्द्र ने सारे वर्ष उस का

पिण्ड न छोड़ा और कोचमैन जैसे चाबुक लेकर घोड़े के सिर खड़ा हुआ उसे दौड़ाने के लिये विबस करता है वही हाल यहां भी था॥ यह तो स्वतः सिद्ध बात है कि बलवान हृदय कमजोर दिल पर अपना प्रभाव शीघ्र ही जमा लेता है और दुर्बल हृदय उसे भय करने लगता है, इसी लिये हमेशा अपने बलवान् हृदय वाले मित्र के भय से सुकुमार सदा पाठ में लगा रहता और अपने मित्र की रुचि के खिलफ़ कोइ काम करने में उस की सहसा हिम्मत नहीं पड़ती थी॥ इस के जी में देश हितैषिता भी अपार थी, यह सर्वदा स्वदेशी वस्त्र पहिरता और अपने साथियों को भी ऐसा ही करने का उपदेश देता था, लाहौर में जिस बर्ष कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था, कम उम्र होने पर भी अपनी योग्यता के कारण यह बलनटेरों का कप्तान बनाया गया और इस काम को पूरी दक्षता और सुयोग्यता से निभाहने के कारण कांग्रेस के महामान्य सभापति दादा भाई नौरोज़ी ने अपने हाथ से इस के बांई छाती पर सोने का एक तमग़ा लटकाया था॥ सुकुमार भी सब कामों में अपने मित्र के साथ ही साथ था, पर न जाने उस की इतनी सुख्याती क्यों न हुई, शायद वह हर काम में अपने मित्र के पीछे पीछे सदा रहता और इसी आगे पीछे ही में तो उन्नति का सारा भेद है॥ हमारा साहसी रविन्द्र भारत की दशा पर सदा आंसू बहाया करता और मौक़ा पड़ने पर यथा साध्य देश हित की चेष्टा से बाज़ न आता, वह सदा यही कहा करता कि "केवल अपने कठिन उद्योग, परम पुरुषार्थ और निरन्तर स्वार्थ्य त्याग ही से हम अपने बाप दादों की की हुई त्रुटियों का सुधार कर सकते हैं; केवल उन की त्रुटियों को याद करके आंसू बहाने और हाथ मलने से कुछ लाभ नहीं हो सकता॥

यह सबेरे ४ बजे उठता और बरजोरी अपने मित्र सुकुमार को भी उसी समय उठाता॥ कालिज में ठीक ठीक समय पर पहुंचने के लिये उसे बिवस करता और छुट्टी के समय सदा उसे अपने आंखें ही के सामने रखता था॥ कालिज में छुट्टी होने पर शाम को यह दोनों अपना नया पाठ अभ्यास करते और बीच बीच में दो चार बीड़ा पान चबाते या चुरुट पिया करते थे॥ फिर रात को दस बजते ही सो जाते थे, सप्ताह में दो एक बेर घुड़दौड़, मुक्केबाजी, नक़ली लड़ाई, ग्राम पर्य्यटन, किश्ती की दौड़, इत्यादि इसी प्रकार से यह लोग अपना दिल बहलाते थे, कभी कभी सुकुमार कालिज के अन्य विद्यार्थियों के खेल में जो तास, चौपड़ बाजी लगाकर खेला करते, या गरमी के दिनों में भङ्ग ठण्डाई की ठहराते, शामिल होने की इच्छा प्रगट करता, या उन लोगों की गार्डन पार्टी या गाने बजाने में शामिल होने के लिये अपने मित्र से झगड़ बैठता, पर रविन्द्र उस के इन प्रस्तावों को बड़ी ही घृणा और बेपरवाही से सुनता और ऐसी दृढ़ता और तेज़ी के साथ हर एक बातों पर ज़ोर देकर सुकुमार को समझाता कि फिर विचारे सुकुमार की सहसा हिम्मत नही पड़ती कि कुछ कहें और मन मसोस कर उसे उन खेलों में शामिल होने की लालसा को तिलांजली देनी पड़ती॥ २९ तारीख़ अक्टूबर सन् १८७१ ई० को एक दिन सन्ध्या को ऐसे समय जब कि अभी ७ नहीं बजा था हमारे दोनों विद्यार्थी आमने सामने कुर्सी पर बैठे हुये थे और सामने टेबुल पर शमादान में मोमबत्ती की धीमी, पर ठंढी रोशनी हो रही थी, रविन्द्र तो रेखा गणित का एक हिसाब फैलाने में लवलीन था और हमारे सुकुमार बाबू बगल की डिब्बीमें से निकाल निकाल कर पान चबा रहे थे और चुरुट पी रहे थे, और मन मन में

सोच रहे थे कि यह भी अजब सिड़ी है, रात दिन क, ख, के बराबर है और ग, केन्द्र से यदि एक वृत्त खींचा जाय तो उक्त क, ख, के बराबर हो तो—बस इसी रगड़े में पड़ा रहता है, यह नहीं कि शाम को दो घण्टे गप्प सप्प करें या चल कर नहर में किश्ती पर सैर करें, अजब आदमी है, चुप चाप बैठे जी भी तो नहीं लगता, अरे भाई! सुनो सुनो मुझे एक बात याद आई है,—यह चुरुट बड़ा कड़ुआ है अब बम्बई की बीड़ी पीया करेंगे—रविन्द्र ने पोथी से बिना सिर उठाये ही जवाब दिया "अच्छा है वही पीया करो, दिमाग़ कम ख़राब होगा; और ज्यादा कारबन भी फेफड़ों में न जायगा" और फिर अपने हिसाब में तन्मय हो गया ॥ "क, ख, ग, तीन असमान रेखाएं हैं, जिन में से कोई दो तीसरे से बड़ी हैं, अब एक ऐसा त्रिकोण बनाना है जिस की दो भुजायें यदि जोड़ी जाय तो तीसरे---" इतने ही में बाहर से किसी ने द्वार खट खटाया ॥

"पण्डित सुकुमार मिश्र के नाम की एक चिट्ठी है" डाकिये ने कहा और फौरन ही हमारे सुकुमार बाबू ने द्वार खोल कर हाथ बढ़ा के चिट्ठी ले ली और लिफाफे का सिरा फाड़ते हुये कहा, "आहा! पिता जी की चिट्ठी है,-- हां हां यह दस्तख़त तो उन्ही के से मालूम पड़ते हैं---अरे और यह क्या, इतना भारी काग़ज़ का बण्डल ॥ रविन्द्र जानता था कि ठाकुर साहब आज कल दिल्ली में हैं और थोड़े ही दिन हुये जब वह लाहौर आये थे तो कालिज से दोनों को साथ लेते हुये लाहौरस्थित "रोज़ भिला" (गुलाब बाग) में ठहरे थे और वहां भोजन किश्ती की दौड़ तथा बसन्त की बहार का आनन्द दिला कर एक ही सप्ताह में उन्हें कालिज में छोड़ते हुये दिल्ली को लौट गये थे, यद्यपि उक्त बाग शाहाना

ठाट बाट से सजा हुआ नहीं था पर डाक्टर साहब उसी साफ़ सुथरे सब्ज़ मखमली घास के मैदान, किनारे किनारे हर क़िस्म के गुलाब की क्यारियां और बीच में हरे हरे पानी से परिपूर्ण एक पतली झील ही को परम रम्य समझते थे, और झील के किनारे घास की छाजन का एक अठपहला बङ्गला था जिस में केवल एक दालान आमने सामने दो कोठरियां और चारों ओर लोहे की एक फुट ऊंचा रेलिङ्गदार बरामदा था जिस के बीच बीच में छोटे छोटे खंबे बने हुये थे और उन पर चीनी गमलों में छोटे छोटे फूलों के पौधे लगे हुये थे॥ जब कभी इच्छा होती, डाक्टर साहब महीना पन्द्रह रोज़ इस साफ़ सुथरे "गुलाब बाग" में आकर रहते थे और कभी कभी अपनी स्नेहमयी कन्या 'सरोजिनी और रविन्द्र कुमार को भी यहां ले आते थे॥ सुकुमारी सरोजिनी सब्ज़ घास पर हाथ के सहारे सिर रख कर लेटी हुई "रामायण" पढ़ना बड़ा पसन्द करती थी, कभी कभी पढ़ते पढ़ते सामने मैदान में अपने भाई और रबिन्द्र का गेंद का खेल देखने लगती और जब रविन्द्र की उसकी चार आंखें होतीं तो बाल्य चपलता बस खिलखिला कर हंस पड़ती और फिर पोथी पढ़ने लगती थी॥ अस्तु उसी बाग का ध्यान अभी रविन्द्र के चित्त में उदय हुआ ही था, कि फौरन ही पर्चे के एक कोने में "स्वास्थ्य बर्द्धिनी सभा" का नाम पढ़ते ही वह बोल उठा, "ज़रा इस नवीन सभा का हाल यदि पिता जी ने कुछ लिखा हो तो सुनाओ तो" बस---ज़रा सब्र करो यार---अरे यह क्या---ओ हो, सुकुमार ज़ोर से चिल्ला उठा---

क्या हुआ, क्या हुआ---रविन्द्र ने चौंक कर कहा, क्योंकि उसके मित्र का चेहरा ज़र्द हो रहा था "लो पढ़ो" यह कह

कर सुकुमार ने चिट्ठी रविन्द्र के हाथ में दे दी---रविन्द्र ने चिट्ठी को अद्योपान्त दो बार पढ़ा और साथ के काग़ज़ातोंको भी ध्यान से देखा और कुछ विस्मित से होके कहा :---

"बड़ी ही अद्भुत बात है"

और फिर टेलीग्राफ़ सीखने का यन्त्र निकाल कर खटखट करने लगा, पर हमारे सुकुमार बाबू बड़े आग्रह से अपने मित्र की ओर देख रहे थे और सोच रहे थे कि देखो इस बारे में यह क्या कहते हैं," जब ज्यादे देर चुप न रहा गया तो उस ने पूछा "क्या तुम यह बात सच समझते हो" ॥

"बेशक" रविन्द्र ने जवाब दिया, मैं तुम्हारे पिता के स्वभाव को खूब जानता हूं, बिना पक्का सबूत पाये वह किसी बात पर विश्वास नहीं करते साथ ही जो काग़ज़ात वग़ैरः उन्होंने भेजे हैं, उस से भी तो सब बातें साफ़ साबित हो जाती हैं ॥

यह कह कर हमारे उत्साही युवा ने फिर तार सीखने के यन्त्र पर हाथ रक्खा और खट खट करने लगे, पर सुकुमार बाबू चुप चाप हाथ पर सिर रख कर बैठ गए और सोचने लगे, जब फिर ज्यादे देर तक चुप न रहा गया तो बोल उठे, "भाई रविन्द्र, यदि यह सच है तो ओ हो क्या ही आनन्द है ॥ करोड़ों रुपया---विश्वास नहीं आता---अगाध धन --अतुल सम्पत्ति---अब मे धन राशि के समुद्र में मेरे जीवन की नौका सुख से चलेगी ॥ रविन्द्र ने सिर हिला कर जवाब दिया, "है ही, है---अगाध ही धन कहना चाहिये ॥ शायद भारतवर्ष में ऐसे धनवान् पांच सात हों तो---सारे संसार में भी पचीस तीस से ज्यादे न होंगे ॥

"अरे दोस्त" सुकुमार ने उमङ्ग में आकर कहा "और महाराजा की पदवी घलुये में" रविन्द्र ने इस का जवाब नहीं दिया और अपने तार यन्त्र को खटखटाने लगा, जिस का शब्द शायद सुकुमार ने खट खट" सुना, पर हमारे सुकुमार ने इसका कुछ ख्याल न करके बातोंका सिलसिला यों जारी रक्खा "भाई रविन्द्र तुम चाहे जो कुछ कहो, इतने द्रव्य के स्वामी होकर महाराजा की पदवी के साथ भारतवर्ष के स्वाधीन नृपति वृन्दों में कुर्सी पाना वास्तव में बड़े गौरव की बात है" इसके उत्तर में केवल रविन्द्र का तार यन्त्र 'खट, खट", बोलता रहा॥

प्यारे रविन्द्र क्या तुम्हें याद है कि जब हम लोग नीचे के दर्जे में गणित पढ़ते थे तो हमारे पुराने गणिताध्यापक काली बाबू कहा करते थे कि छत्तीस करोड़ एक ऐसी संख्या है जो लिखी जाने पर भी ठीक ठीक मनुष्य के दिमाग़ में नहीं आ सकती---हां यदि हज़ार रुपया भी रोज़ खर्च किया जाय तौ भी इसे ख़र्च करने में एक हज़ार वर्ष चाहिये॥ ओ हो---सोचते भी कलेजा मुंह को आता है कि एक आदमीके पास छत्तीस करोड़ रुपया हो॥---"क्या कहा! छत्तीस करोड़ क्या छत्तीस करोड़ रुपया है"---रविन्द्र ने अब की बेर कुछ ज्यादे मन देकर कहा--"सुनो सुनो यह रुपया सब जातीय विश्व विद्यालय फण्ड में दान कर दो, बस इस से बढ़ कर और कौन सा अच्छा काम है जिसमें इस अगाध धन राशि को ख़र्च करोगे---आहा भिखारी भारत सन्तान के ज्ञान नेत्र खुल जायंगे और भारत के उद्धार कर्त्ता का नाम भावी भारत सन्तान के रग रग में समाया रहेगा---क्या इस महान् चिर-स्थाई, गौरवशाली पदवी के सामने "महाराजा" की पदवी हेच और नाचीज़ नहीं है?"

'अरे, बापरे, ईश्वर के लिये कहीं पिता जी को ऐसी सलाह न दे बैठना' सुकुमार ने घबड़ा कर कहा, वह हैं भी तुम्हारे ही ऐसे--शायद ऐसा ही न कर बैठें ॥ उन की चिट्ठी से भी इस की कुछ कुछ गन्ध आती है---किसी न किसी देशोपकारी काम में वह यह धन लगाने का इरादा रखते हैं, पर, भाई सब नहीं तो इस रुपये के सूद का आनन्द ही हमें भोगने दो"

अरे यार, इतना घबड़ाते क्यों हो" रविन्द्र ने हंस कर कहा मैं तुम्हारे पिता से कह दूंगा कि इस को खज़ाञ्ची बना दीजिये, पर भाई मुझे बड़ा डर लगता है, इतने भारी खजाने से कहीं तुम्हारा दिमाग़ गर्म न हो जाय," अच्छा होता यदि इस द्रव्य का परिमाण कुछ कम होता, मैं बड़ा प्रसन्न होता यदि दो तीन लाख रुपया सालाना आमदनी के साथ तुम सुख पूर्वक अपनी सुशीला छोटी बहिन सरोजिनी के साथ दिन बिताते, इतना अधिक धन तो मुझे एक सोने का पहाड़ मालूम पड़ता है और भय है कि मेरा प्यारा सुकुमार इस के तले दब न जाय---नहीं नहीं मैं तुम्हे खजाञ्ची बनवाने को सिफ़ारिश नहीं करूंगा, ईश्वर न करे यदि इस पहाड़ के नीचे तुम दब गये तो बिचारी कोमल हृदया बालिका सरोजिनी को अपार कष्ट होगा---क्यों कि वह सुशीला तुम से बड़ा स्नेह करती है", यह कह कर रविन्द्र फिर अपने काम में लगा और हमारे सुकुमार बाबू कि कर्त्तव्य बिमूढ़ होकर कमरे में धपधप कर टहलने लगे, यहां तक कि उस के इस धपधप से रविन्द्र कुछ विरक्त हो उठा और बोला, "अरे भाई तुम बाहर जाकर घण्ठा आध घण्ठा ठण्ढी हवा खा आवो आज तुम से कुछ काम नहीं होने का" ॥

"ठीक कहते हो यार हक़ीक़त में मैं इस समय किसी लायक नहीं हूं" सुकुमार ने पढ़ने से जान बचाने के लिये ऐसा अनायास मौका पाकर कहा और कोट टोपी पहिर तथा हाथ में छड़ी ले और एक चुरुट सुलगा कर खट खट सीढ़ी से उतर कर सड़क पर आ पहुंचा वहां पर फिर उसने निश्चय करने के लिये जेब से पिता की चिट्ठी निकाली और सड़क के लम्प की रोशनी में उसे दो बार पढ़ा और निश्चय कर लिया कि यह सब असली घटना है, स्वप्न नहीं—"छत्तीस करोड़ रुपया! ऐं! छत्तीस करोड़! सौ लाख का एक करोड़! ऐसे ऐसे छत्तीस सौ लाख! ओह!" यही धीरे धीरे बारबार कहने लगा—हां—हां यदि चार आना सैकड़ा भी सूद मिले तो नव लाख रुपये महीनेकी आमदनी हो—अच्छा यदि बाबू जी इस में से मुझे एक लाख रुपया महीना—नहीं तो पचास हज़ार—पचास हज़ार न सही--कम से कम पचीस हज़ार रुपया महीना भी यदि पिता जी ख़र्च के लिये हमें दें--अहा --तो क्या ही मज़े में ज़िन्दगी गुज़रेगी--रुपये ही से सब कुछ होता है--पर नहीं इसे मैं अच्छे काम में ख़र्च करूंगा--क्या मैं मूर्ख हूं कि बुरे काम में रुपया बिगाड़ूं--हूं--देखो तो मैं कैसे अच्छे अच्छे कामों में रुपया ख़र्च करता हूं--अब तो अव्वल दर्जे के रईसों में मेरी गिनती होगी,--और क्यों न हो, यह जितने पुस्तैनी अमीर हैं सब गधे हैं--मैं तो सामान्य अवस्था से अमीर हुआ हूं और ऊंच नीच सब बातों से वाकिफ़ हूं, फिर उनके नाईं बेवकूफ़ी थोड़े ही करने लगा--राह चलते चलते जब दूकानों की तरफ़ उस की निगाह पड़ी, तो वह मनही मन कहने लगा--और हां इस के पहिले मुझे अपनी हैसियत के मुताबिक़ एक आलीशान मकान सुन्दर सामानों से सजा हुआ भी तो बनवाना पड़ेगा, और गाड़ी घोड़े बिना तो गुज़ारा

होना कठिन है--रविन्द्र विचारे को पैदल चलना पड़ता है, एक घोड़ा उसे भी ख़रीद दूंगा--हां जब मैं धनवान् हो गया हूं तो क्या मेरा दोस्त न होगा--ज़रूर होगा--अरे छत्तीस करोड़! छत्तीस!--मैं तो पहिलेही जानता था कि किताबों में सारा दिन सिर गड़ाये रखने के लिये मेरा जन्म नहीं हुआ है, एक न एक दिन मैं ज़रूर धनवान् होऊंगा, जो होना था वही हुआ यह कोई नई बात थोढ़े ही हुई है-यही सोचता सोचता सुकुमार चौक वज़ाजे की तरफ़ जा निकला और वहां के दूकानों को बड़े ख़ुशी से देखता और सोचता चला जाता था-क्या ख़ुशी है?-मैं जब चाहूं इन सब चीज़ों को ख़रीद सकता हूं-अरे यह सब बनारसी ज़री के साफे, मख़मली कार चोपी चोगे, मोती और पन्ने के माले, हीरे की अंगूठियां, जड़ाऊ हीरे के सिर पेंच कलगी मेरे ही लिये तो बने हीं हैं-और क्या यह सामने घड़ी वाले की दूकान में शीशे के भीतर जो जड़ाऊ जेब घड़ी लगी हैं मेरे लिये नहीं बनीं, ज़रूर बनी हैं—मेरे ही लिये तो थीयेटर और तावायफ़ों की भी तो सृष्टि हुई है और हारमोनियम, पीआनो, बीन, सितार बांसुरी वग़ैरः अपनी रसीली और सुरीली गान अलापने के लिये क्या मेरी राह नही देख रहे हैं? यह सामने जो आगा जान अरबी घोड़ों को मैदान में फेरी दे रहा है, वह भी मेरे ही लिये है, और यह विजली की रोशनी मेरे ही चित्त बिनोद के लिये है-सारा शहर ही मेरा है-जो चाहूं सो करूं आज से फ़र्स्ट क्लास में सफ़र किया करूंगा- सफ़र- हां- हां- अभी ही क्यों न आरम्भ कर दूं- मैं पहले सारे भारत वर्ष फिर तमाम यूरोप, अमेरिका और जापान में भ्रमण करूंगा एक सारा जहाज़ किराये कर लूंगा खैर अभी तो फ़र्स्ट क्लास में एक बार सफ़र करूं लाहोर ही क्यों न जाऊं अच्छा

कालिज का क्या होगा, ओह! कालिज से अब मुझे ज़रूरत ही क्या है? क्या किसी की नौकरी करनी है? पर हां बिना रबिन्द्र को जनाए एकाएकी चले जाना भी तो मुनासिब नहीं है, खैर क्या हरज है उसे यहां से ख़बर भेज दूंगा, वह भी जानते ही हैं कि ऐसी हालत में मैं पिता माता से मिलने के लिये कैसा बेकरार होऊंगा॥

इसके बाद ही सुकुमार सामने के तार घर में जा घुसा और मित्र को इस आशय का एक संवाद भेज दिया कि मैं घर जाता हूं और दो तीन दिन में लौट आऊंगा" फिर एक गाड़ी किराए कर स्टेशन पर पहुंच फ़स्र्ट क्लास का एक टिकट ले मेल पर सवार हो लाहौर को रवाना हो गया और रेल गाड़ी के एक कोने में बैठा बैठा वह पहले की नाईं अपने अतुल धन के सद्व्य की उधेड़ बिन में लगा हुआ, रात को दो बजे लाहौर के स्टेशन पर पहुंचा और फ़ौरन एक गाड़ी कर घर के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ और बड़े ज़ोर से दरवाज़े का कुंडा खड़खड़ाने लगा, यहां तक कि महल्ले के सारे लोग जाग उठे, और कई लोग खिड़की से सिर निकाल कर आपुस में आस्फुट स्वर से कहने लगे,-कोई बीमार है क्या, जो इतनी रात को डाकृर साहब के द्वार का कुन्डा इतने ज़ोर से खटखटाता है, शायद कोई सख़्त बीमार होगा- क्या जानें कौन है दूसरे ने जवाब दिया, इतने ही में भीतर से बुढ़िया दाई रामधनियां चिल्ला उठी 'अरे कौन है डाकृर साहब घर में नहीं हैं॥

'अरे धनिया किवाड़ी खोल, मैं हूं मैं, सुकुमार ने चिल्ला कर कहा॥ बुढ़िया ने थोड़ी देर में किवाड़ खोल दिया॥

सुकुमार बाबू डासन का बूट मचमचाते हुये उस कमरे में जहां इन की माता और बहिन सोई हुई थी

और एक लम्प मन्द मन्द जल रहा था जा पहुंचे॥ ठाकूर साहब की स्त्री की नींद पहिले ही से खुल गई थी और अपने प्यारे सुकुमार के गले की आवाज़ पहचान कर वह सीढ़ी पर आने ही के लिये कमरे से बाहर निकलती थी कि सुकुमार ने सहन में पैर रक्खा। 'अरे बेटा सुकुमार इतनी रात को एकाएकी घबड़ाया हुआ कहां से आया सब राज़ी ख़ुशी तो हैं! सुकुमार की माता ने कुछ उद्विग्न होकर पूछा'॥

'सब राज़ी ख़ुशी हैं; कुछ फ़िक्र मत करो चलो भीतर तो सब हाल कहें' यह कहते हुये सुकुमार कमरे के भीतर जा एक कुर्सी खींच कर बैठ गया और जेब से चिट्ठी निकाल कर ज़ोर ज़ोर से पढ़ कर अपनी माता को सुनाने लगा, यहां तक कि इन की आवाज़ से सुकुमारी सरोजनी जो अब तक सोई थी उठ बैठी और बिछौने से कूद कर सुकुमार की भुजा जा पकड़ी और ज़ोर से हिला कर कहा, 'भैया भैया तुम कब आये—यह क्या बाबू जी की चिट्ठी है—तुमने कहा था कि अब की बेर तेरे लिये 'भाग्यवती' की पोथी लावेंगे सो लाये कि नहीं—मैं अभी सुपने में देख रही थी कि तुम रविन्द्र भैया के संग गेंद खेल रहे हो'—'अरे सब्र कर पगली॥ सुकुमार ने उसे रोक कर कहा मुझे मा को सारी चिट्ठी सुना लेने दे' यह कह कर अपनी बहन का हाथ पकड़े हुये सुकुमार ने सारी चिट्ठी का मर्म अपनी माता को अच्छी तरह समझा दिया जिस के सुनते ही ठाकुर साहब की गुणवती भार्या की आंखों से मारे आनन्द के आंसू बहने लगे और उसने लपक कर पहले सुकुमार को और फिर सरोजिनी को गले से लगा कर चूम लिया और आंखों की अश्रुधारा से दोनों का सिर भिङ्गोती हुई बार बार दोनों का गाल चूमने सिर सूंघने और गले लगाने लगी

उस का दिल कहने लगा कि अब सारी दुनिया तुम्हारी ही है और जिस के पास करोड़ों रुपये हैं दुःख दरिद्र उस के पास कभी नहीं आवेगा—

इस सृष्टि में स्त्रियां कई विषयों में पुरुषों से श्रेष्ठ हैं देखो जब आप पर सहसा कोई बिपत्ति पड़ती है और आप का संचित धन नष्ट हो जाता है तो आप बहुत दिनों तक व्याकुल से रहते हैं और जल्दी आपको शान्ति नहीं आती पर आप की वह सुशीला स्त्री जिस की सेवा में चार चार दासियां हमेशा लगी रहती थी समय पड़ने पर धीरज धर कर अपने हाथ से सामान्य दासी की नाईं घर की टहल करने लगती है और जब दुर्भाग्य वस आप की अवस्था मन्द से मन्दतर होती चली जाती है तो ज़रूरत पड़ने पर अपने बदन से वह अपने अमूल्य स्त्री धन आभूषण दे देती है कहां तक कहें परम प्रीतम पति की मृत्यु पर वज्राघात सा दुःख सहकर भी शिशुपुत्र कन्याओं के पालनार्थ नाना कष्ट सह कर सूतकात और कसीदा करके माता के पवित्र कर्त्तव्य को पालन करती हुई निर्दई संसार के थपेड़ों को दृढ़ता से सहती अन्त समय तक पति का ध्यान करती हुई स्वर्ग सिधारती है वही स्त्री जो सहसा महान ऐश्वर्य्य से घोर दरिद्रता में पतित होने पर भी शीघ्र ही अपने स्वभाव को तदानुकूल बना लेती है उसे यदि सहसा राज्य भी मिल जाय तो थोड़ी ही देर में उस का जी ठिकाने हो जाना क्या कुछ आश्चर्य्य है॥ हम पुरुष अवश्य ही सहसा के भाग्य परिवर्तन से अप्रकृतिस्थ हो जायं तो कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों के सब कार्य्यों में तीव्रता कुछ अधिक रहती है पर अबलाओं की कोमलता तो स्वभाविक है फिर सहसा के

उलट फेर से यदि शीघ्र ही उन का मिज़ाज ठिकाने आ जाय तो हम इसे अस्वाभाविक नहीं कह सकते वही हाल यहां भी हुआ यद्यपि पहले पहल सरोजिनी के माता के हृदय में बड़ी बेग से उमङ्ग उठी सही पर अबलाओं की स्वाभाविक कोमलता ने उस उमङ्ग के तुफ़ान को धीरे धीरे शान्त कर दिया और उसने सुकुमार के हाथ से पत्र ले स्वयं उसे फिर से पढ़ा और इस अगाध धन से भविष्यत में अपने बच्चों के लिये कौन सा ऐसा काम किया जाय जिस में वह सुख से रहें, इसी सोच विचार ने उसे आ घेरा॥ पाठकों! देखो माता का स्वार्थ त्याग और सन्तानों के प्रति निष्काम प्रेम॥ ॥ देखो देखो एक स्त्री रत्न स्नेह शालिनी देवी सहसा करोड़ों रुपयों की स्वामिनी होने पर भी पहले अपने सुख स्वच्छन्दता की चिन्ता नहीं करती सबके पहले उस का ध्यान संतानो ही के सुख संपादन की ओर जाता है—हमें दुःख है कि उपन्यास होने के कारण शायद पाठकों के हृदय पर इस घठना का कुछ ऐसा असर न हो पर हम सच कहते हैं यदि आप आजमाएंगे तो इस अवस्था को ऐसा सच्चा पाएंगे जैसे सूर्य की रोशनी—अस्तु, असली घटना छोड़ कर हम कहां चले आए—अपनी माता और भाई को ऐसा खुशी खुशी देख कर बालिका सरोजिनी फूली नहीं समाती थी अवश्य ही अपने शान्तिमय घर में नाना प्रकार की मनोरञ्जक और उपदेश पूर्ण पुस्तकों के पढ़ने माता पिता के लाड चाव में खेलते हुये दिन बिताने के अलावः संसार में और किसे सुख कहते हैं यह उस के भोले भाले स्वभाव और नन्हे से मगज़ में नहीं आया था और सुकुमार भाई और मा को ऐसा सानन्दित देख कर वह फूली नहीं समाती थी। उस का कोमल और निष्कलङ्क दिमाग़

यह समझने में बिल्कुल असमर्थ था कि दो चार मुट्ठे करन्सी नोटों से उसके जीवन की गति क्योंकर फिर जायगी और अब तक जिस तरह वह रहती आई है उस से विशेष सुख मय परिवर्तन और क्या होगा अत एव हमारे सुकुमार बाबू की नाई उस के दिमाग़ का "क्रेनियम" विशेष न फड़का और बारबार वह सुकुमार भय्या का हाथ पकड़ २ कर हिलाने और अपने बातों से उसे तङ्ग करने लगी ॥

सुकुमार की माता का बिवाह बचपन ही में डाकृर साहब से हो गया था जब उस की उम्र दस और डाकृर साहब की पच्चीस वर्ष की थी ऐसे समय उस का बिवाह हुआ था डाकृर हरिनाथ को पदार्थ विज्ञानके अभ्यास का बड़ा शौक था और वह जब घर पर रहते तब भी सदा या तो पुस्तकों के कीड़े बने रहते या नाना प्रकार के विचित्र यन्त्रों को ले कर एक निराली कोठरी में ठुकू ठुक किया करते थे जिस का तात्पर्य विचारी यशोदा कुछ भी नही समझती थी और पति बिना उसे घर अकेला सा मालूम पड़ता था इसी लिये उसे जब दो सन्तान हुये तो उस का दिल कुछ बहला रहने लगा और वह सदा पति से पहिले उन्हीं की सुख शान्ति का अधिक ध्यान रखने लगी ॥ यही कारण था कि इस मौके पर भी उस का ध्यान पहले पहल अपने बच्चों ही के आराम की ओर गया क्योंकि पहिले से भी तो वह अपना सारा आशा भरोसा उन्हीं पर रखती थी ॥

रविन्द्रनाथ को वह एक होनहार युवा समझती थी जब से उस ने इञ्जियरिंग कालिज में प्रवेश किया वह मन मन में यह जान कर बड़ी खुश थी कि मेरे सुकुमार को ऐसा श्रेष्ठ मित्र प्राप्त हो गया, पर हां उसे कभी कभी यह चिन्ता आ घेरती थी, शायद द्रव्याभाव से इस की उच्च शिक्षा

में बाधा पड़े और सरोजिनी की शादी अच्छे घराने में न हो, पर अब पति के पत्र से उसे इन बातों की ओर से निश्चिन्ताई हो गई और उसके सुन्दर और शान्त चेहरे से सन्तोष की आभा झलकने लगी॥ रात भर मा बेटा दोनों बैठे हुये धुन से अपनी उन्नति के लिये क्या क्या किस किस तरह से करना होगा इसी का मसौदा करते रहे और भोली सरोजिनी आगे की बातों से बेख़बर, बर्तमान के कोमल बिछावन पर घोर नींद में ख़ुर्राटे लेने लगी॥

'अरे लड़के तैने रविन्द्र का कुछ हाल नहीं कहा? क्यो तैनें उसे अपने बाबू जी की चिठ्ठी नहीं दिखाई, वह क्या बोला?' यशोदा ने पूछा, 'अम्मा! तुम क्या रविन्द्र का स्वभाव नहीं जानती—उस की बुद्धि एक तरफ़ और सारी दुनिया एक तरफ़—बुद्धिमान जी को इस बात का बड़ा फ़िक्र है कि कहीं इस अगाध धन से हम लोगों का दिमाग़बिगड़ न जाय-कहां तक कहें वह तो कहता था कि 'यद्यपि तुम्हारे बाबू जी के शान्त और विप्रस्वभाव का मुझे पुरा भरोसा है पर इस अगाध धन से उन का दिमाग़ भी बिचलित हो जाय तो कुछ आश्चर्य नहीं और सुनो उस की अक़्लमन्दी—कहता क्या है कि लाख़ दो लाख रुपए साल की आमदनी ही तुम लोगों के लिये बड़े आनन्द से ज़िन्दगी बिताने के लिये बहुत है॥

'इतना कहने में बिचारे रविन्द्र का अधिक अपराध नहीं है' मा ने मुसकरा कर जवाब दिया—'क्या तैनें नहीं सुना है कि एकाएकी बड़ी भारी ख़ुशी की ख़बर से कई आदमी पागल हो गये या मर गये—रबिन्द्र का भय यथार्थ है'—माता की आख़ीरी बात सरोजिनी के कान में पड़ी और वह आंख मलती हुई उठ बैठी और मा के गले से लग कर कहने लगी 'अम्मा, अम्मा, तुझे याद है एक दिन तैनें कहा

था कि रविन्द्र भैया सब सच्ची और ठीक बात कहते हैं, मुझे तो उन की बातों पर पूरा भरोसा है' यह कह कर हमारी भोली भाली सरोजिनी कमरे से बाहर चली गई ॥

—— ... ——

तृतीय परिच्छेद ।

'अर्थेन बलवान लोके अर्थात् भवति पण्डितः' पाठको! ज़रा आप हमारे साथ आइये हम आप को दिल्ली की ठण्डी सड़क की सैर करावें, यद्यपि नाना प्रकार के लोग अपने २ धुन में इधर उधर चले जा रहे हैं, पर हम आप का ध्यान जुमा मसजिद के सामने वाले उस सुबिशाल इमारत की ओर दिलाते हैं जो 'गोथिक स्टाइल' (यूरोपियन ग्राम्य निर्माण) का बना हुआ है और जिस के द्वार पर पत्थर के बड़े बड़े अक्षरों में 'स्वास्थ्यबर्द्धिनी सभा" यह अक्षर ऐसे साफ़ तौर से खुदे हुये हैं कि दूर से सहज ही में पढ़ाई देते हैं, इसी इमारत की ओर हम अपने पूर्व परिचित डाकृर हरिनाथ साहब को सन्ध्या के चार बजे हाथ में एक मोटी छड़ी लिये हुये, तेज़ी से जाते हुये देख रहे हैं, देखिये अब उन्हों ने सभा के द्वार में प्रवेश किया जहां के द्वारपाल ने बड़े अदब से झुक कर उन्हें सलाम किया, जिस के जवाब में डाकृर साहब ने मुसकराहट के साथ सिर हिला दिया और हाल के भीतर जाते ही सारे सभासद उठ खड़े हुये और सभापति महाशय ने जो एक उच्च घराने के पेन्शन प्राप्त सिविल सर्जन थे और जिन के पीछे और आगे रायबहादुर तथा एल० एल० डी" के० सी० एस० आई० इत्यादि की उपाधि लगी हुई थी, मुसकरा कर बड़े ही दोस्ताना तौर से डाकृर साहब को बुला

कर अपने बगल में दहिने हाथ कुर्सी पर बैठाया ॥ पहले तो डाकृर साहब ने समझा कि शायद मैंने जो नूतन आविष्कार की बात उस रोज़ कही थी उसी पर पुनः विचार करने से शायद अधिक उपयोगी सिद्ध हुई है, इसी लिये आज मेरा इतना सन्मान है, नहीं तो यही प्रधान साहब जो मेरे अभिवादन के उत्तर में ज़रा कभी सिर भी नहीं हिलाते थे, आज मेरा इतना सन्मान क्यों करते हैं, पर थोड़ी ही देर में जब सभापति जी ने झुक कर उन के कान में कहा कि 'आप के सहसा इस सौभाग्योदय को सुनकर मुझे परम प्रसन्नता प्राप्त हुई है और इसके लिये मैं आप को बधाई देता हूं, सुनते हैं कि आप करोड़ों के आदमी हुए, क्षमा कीजिये मुझे मालूम न था, डाकृर को आज अपने इस असाधारण सन्मान का करण मालूम हुआ ॥ उनके चित्तमें इसबात ने ज़रा भी जगह नहीं की थी कि पहिलीबार जब मैं इस सभा में आया था तब से अब मेरी कुछ इज्जत बढ़गई है या मेरा मूल्य अधिक हो गया है इन उच्चाभिलाषों का विचार तकभी हमारे भोले भाले सज्जन डाकृर साहब के दिमाग़ में नहीं आया था अत एव वह कुछ चकित से थे कि इसी बीच में डाकृर साहब के पीछे बैठे हुए डाकृर महेन्द्रनाथ ने झुककर कहा अरे यार हरीनाथ ! तुम तो बड़े उस्ताद निकले हमें ज़रा ख़बर भी न की ॥ खैर तुम्हारे दिल में चाहे कुछ हो, हम तो तुम्हें हमेशा से वैसाही मानते हैं ॥ ईश्वर करे इस नई दौलत का सुख भोगकर तुम खूब फूलो फ़लो ॥ "

तुम्हारी बात का पूरा पूरा मतलब मेरे समझ में नहीं आया "डाकृर साहेब ने जबाब दिया

ज़रा इसे पढ़जाओ तो सब समझ में आजायगा महेन्द्र

बाबू ने यह कहते हुए "पञ्जाबी" अख़बार के बृहस्पति बार वाला परचा हरिनाथ के हाथ में दे कर कहा लीजिए पढ़िए पर्चे के सिरे पर ही यह इबारत लिखी हुई थी ॥

"अद्भुत भाग्योदय"

अन्त को महारानी शैलकुमारी की जायदाद के वारिस का पता लग गया ॥ कलकत्ता हाईकोर्ट के वकील 'मिसर्स चौधरी एण्ड को" की ही परिश्रम और बुद्धिमानी से यह सुफलता प्राप्त हुई है ॥

इस अगाध धन छत्तीस कोटि मुद्रा (जो इस समय बंक बंगाल में जमा है) के स्वामी एक लाहौर निवासी कश्मीरी ब्राह्मण हरीनाथ हैं, जो डाक्तरी का पेशा करते हैं और जिन के विद्वत्ता पूर्ण व्याख्यान का ब्योरा जो उन्हों ने दिल्ली की स्वास्थ्य बर्द्धिनी सभा में दिया था तीन सप्ताह पहिले इसी अख़बार में छप चुका है ॥

बड़े ही कठिन परिश्रम और नाना प्रकार की कठिनाइयों को झेल कर जिस का बर्णन खासा एक उपन्यास है, डाक्तर साहब ने अकाट्य प्रमाणो से सिद्ध कर दिया है कि "मैं ही महारानी शैलकुमारी के दूसरे स्वामी पण्डित शान्ति नाथ का एक मात्र जीवित बंशधर हूं ॥ अब केवल थोड़ी सी कानूनी कार्रवाई के बाद उक्त अगाध द्रव्य डाक्तर साहब के अधिकार में आ जायगा इसके लिये दरख़ास्त भी दे दी है ॥

इस का वृत्तान्त बड़ा ही विचित्र है क्यों कर एक राज घराने के कई पुश्त तक के इकट्ठे किये द्रव्य का स्वामी सहसा एक काश्मीरी ब्राह्मण हो गया ॥ प्रायः देखा जाता है कि सरस्वती और लक्ष्मी एक जगह नहीं रहती, पर बड़े ही आनन्द की बात है कि इस मौके पर दोनों का

साथ हुना प्रतीत होता है, क्योंकि हमें विश्वास है कि डाकृर साहब ऐसे विद्वान और सुयोग्य पुरुष इस अगाध धन का अवश्य ही अच्छा सद्वय करेंगे ॥"

शायद आप में से कुछ लोग यह सुन कर हंसेंगे कि डाकृर साहब को अपनी ख़बर का इतना शीघ्र फैल जाना अच्छा नहीं लगा और उन्हें यह सोच कर कुछ चिन्ता भी हुई कि आगे से इसी कारण मुझे नाना प्रकार की असुविधाएं भोगनी पड़ेगी ॥ लोगों के सन्मान दान से मैं तो मानो दबा सा जा रहा हूं ॥ क्या ही अफ़सोस की बात है? क्या मैंने आज तक जो कुछ योग्यता और बिद्वत्ता सम्पादन की है उसे लोगोंने सोने चांदी के कंकड़ो के नीचे दबा दिया? बात भी ऐसी ही थी क्योंकि जब से डाकृर साहब के भाग्य परिवर्तन का समाचार फैला था, तब से उन के मित्रों की निगाह में अब नवीन नवीन सिद्धान्तों के अविष्कार करने वाले सुयोग्य बिद्वान डाकृर न थे, वरन एक कोटाधिपति महाराजा उपाधि धारी रईस हो गये थे ॥

यदि डाकृर साहब कैसे ही बदशकल क्यों न होते, चाहे उन के पीठ में बड़ासा कुब्ब ही क्यों न निकला हुवा होता और सुयोग्य बिद्वान होने के बदले वह महानीच दुष्ट ऐय्याश ही क्यों न होते, पर तो भी उनका मोल उतना ही होता जैसे कि एक बूढ़े ने डाकृर साहब से कहा था कि अब से आप का मोल छत्तीस करोड़ रुपया है—एक बात, कम बेशी एक कानी कौड़ी भी नहीं—

इन्हीं सब बातों से हमारे डाकृर साहब का मन कुछ मलीन सा हो रहा था और सभा के उपस्थित लोगों को जो बार बार उन की ओर इस लिये देख रहे थे कि

देखें करोड़पति की शकल कैसी होती है उन्हें यह देख कर कुछ ताज्जुब सा हुआ कि उनका मुख कुछ मलीन सा हो रहा है, पर यह सोच क्षणस्थाई था ॥ सहसा उन के दिल में जब उक्त धन के सदुपयोग और महान् उपकार का ध्यान आया तो उन का मन ठिकाने आगया और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान आते ही उनका चेहरा दमकने लगा ॥

इस समय डाकृर गङ्गासिंह 'पागल बालकों की शिक्षा का उपाय' इस विषय पर एक निबन्ध पाठ कर रहे थे और इस के बाद कविराज सीतानाथ की पारी थी कि इसी बीच में डाकृर हरिनाथ ने कुछ कहने की आज्ञा मांगी, अत एव डाकृर गङ्गासिंह का निबन्ध समाप्त होने पर सभापति महाशय ने उठ कर कहा 'डाकृर हरिनाथ साहब इस के बाद कुछ कहेंगे" और डाक्टर हरिनाथ ने उठ कर अपना कथन यों आरंभ किया :—'महाशयो मेरी यह इच्छा थी कि अपने इस भाग्य परिवर्तन का हाल और इस से पदार्थ विज्ञान को जो लाभ पहुंचने वाला है, उस का समाचार आप को किसी उपयुक्त मौके पर सुनाता, पर जब कि यह बात इतनी जल्द ही फैल गई है, तो अब इसे छिपाना शायद सभ्यता के विरुद्ध होगा ।

आप लोगों ने जो बात सुनी है वह सच है—कई करोड़ रुपया जो इस समय बङ्क बङ्गाल में जमा है कानूनी ज़रिये से मेरे हाथ में आया ही समझिये, पर आप लोगों की सेवा में यह भी निवेदन करना आवश्यक है, कि मैं अपने को केवल इस रुपये का कोषाध्यक्ष और इसे पदार्थ विज्ञान की सम्पत्ति समझता हूं । (इस पर उपस्थित सभ्यों में विस्मय सा फैल गया) महाशयो! यह द्रव्य मेरा नहीं वरन् मनुष्य जाति मात्र का है—मनुष्य जाति की उन्नति के

लिये है! (अभी डाक्टर साहब यहीं तक कह पाये थे कि उपस्थित श्रोता सब विस्मय और उमङ्ग में उतराते हुए उठ खड़े हुए और ताली पर तालियां पड़ने लगीं) ॥

मान्यवर महाशयो! मुझे धन्यवाद देने की कोई ज़रूरत नहीं है, मुझे विश्वास है कि मेरी जगह यदि कोई दूसरा पदार्थ विज्ञान का प्रेमी होता तो वह भी ऐसा ही करता। सम्भव है कि कुछ लोग यह सोंचें कि नाम और गौरव के लिये मैं ऐसा कर रहा हूं (नहीं, नहीं श्रोता गण! चिल्ला उठे) कुछ निस्वार्थ भाव से परोपकार के लिये नहीं—ख़ैर इस पर अधिक तूल न बढ़ा कर अब हमें इस के परिणाम की ओर ध्यान देना चाहिये, अत एव अब मैं भूमिका को अधिक लम्बी न कर बिना हिचके साफ़ साफ़ कहे देता हूं कि यह ३६ करोड़ रुपया मेरा नहीं वरन् पदार्थविज्ञान का है! महाशयो! क्या आप कृपा पूर्वक इसे यथोपयुक्त कार्य्य में लगाने का भार लेते हैं? मेरी तुच्छ बुद्धि इस अगाध धन के सद्व्यय करने के योग्य नहीं है, इसलिये मैं आप लोगों को उस धन का ट्रस्टी (रक्षक) नियत करता हूं आशा है कि आप लोग स्वयं निश्चय कर लेंगे कि इस धन को विज्ञान की उन्नति में लगाने का सब से उत्तम कौन उपाय है (बड़े ही जोर ज़ोर से चियर्स होने लगे और श्रोता गण एकदम से उत्तेजित और उमङ्गपूर्ण हो उठे)"।

सारी सभा उठ खड़ी हुई और कोई कोई सभासद उत्तेजना के बस हो टेबुल पर जा चढ़े ॥ प्रोफ़ेसर वोस को मुर्छा सी आने लगी और कलकत्ते के डाक्टर नन्दी का आनन्द के मारे कण्ठ रुन्धने लगा, केवल सभापति महाशय अपनी उच्च पदवी के उपयुक्त धीर और शान्तभाव से कुर्सी पर विराजमान रहे ॥ उन्होंने मन में यही समझा कि

हरिनाथ दिल्लगी कर रहे हैं – अरे राम राम यह बात भी कभी क्या होने की है" । जब सभास्थ पुरुष कुछ शान्त हुए तो, डाक्टर साहब ने फिर से अपने व्याख्यान का सिलसिला आरंभ करते हुए कहा 'यदि आप लोग कृपा पूर्वक ध्यान देकर सुनें तो मैं इस द्रव्य को किस काम में लगाना चाहिये, इस विषय पर मेरी जो सम्मति है आप लोगों की सेवा में निवेदन करूं" ।

'महाशयो संसार में आप लोग हमेशा देखते होंगे कि बीमारी, महामारी इत्यादि से लोग अकाल मृत्यु के ग्रास हो जाते हैं और बहुत से लोग सारी आयु ऐसी बीमारी भोगते हुए बिताते हैं जिस से उनको तो प्राणान्त कष्ट होता ही है पर उन के रिश्तेदारों और स्त्री पुत्रों के भी दुःख दरिद्रता की सीमा नहीं रहती और वे बच्चे जो बड़े हो कर एक महा पुरुष हो सकते हैं देश पर बोझ से हो जाते हैं मेरी सम्मति में इन आपत्तियों का कारण केवल यह है कि हम लोग शुद्ध जल वायु जैसा कि उचित है नहीं पाते, देखते हैं कि शहरों में कबूतरों की नाईं झुण्ड के झुण्ड लोग एक से एक सटे हुए मकानों में रहते हैं, जहां उन्हें जीवन के दो प्रधान उपयोगी वस्तु रोशनी और वायु की बड़ी तङ्गिश रहती है, शुद्ध वायु का तो ज़िक्र ही क्या है ॥"

"क्यों महाशयो ! क्या हम लोगों का यह कर्त्तव्य नहीं कि इस दुःख दायक बुराई का कोई इलाज सोंचें और केवल लेक्चर बाज़ी और तर्क बितर्क ही में समय न बिता कर आदर्श दिखला लोगों के ख्याल को इस तरफ खींचें ?

"फिर क्यों नहीं हम सब लोग अपनी इकट्ठी बुद्धि बल को एक "आदर्श नगरी" के स्थापन करने में लगावें

जो ठीक ठीक वैज्ञानिक रीति पर बनाई जावे और जिसका प्रबन्ध वैज्ञानिक तरीक़े पर बड़ी सावधानी से किया जावे (सुनिये सुनिये की पुकार चारों ओर से गूंज उठी) फिर क्यों न हम इस अगाध धन को ऐसी नगरी के बनाने में खर्च करैं और संसार को प्रत्यक्ष नमूना दिखादें कि 'देखो ऐसी नगरी बसाकर रहो, तब पूरे सुख चैन से दिन बीतेंगे (सुनिये सुनिये की आवाज़ और करताल ध्वनि से हाल गूंज उठा (॥ जोश में आकर सब सभासद् एक दूसरे से हाथ मिलाने और परस्पर आनन्द बधावा देने लगे और फिर डाकृर सहब को घेर कर सब लोगोंने उन को कुर्सी समेत कन्धों पर उठा कर हाल में उनकी एक खासी सवारी सी निकालदी ॥ फिर यथा स्थान स्थित होने पर डाकृर साहब बोले' इस शहर में जिस की बनावट का आप लोग अपने अपने ध्यान में अच्छी तरह खाका खींच सकते हैं—और जो समय पाकर अपने असली रंगरूप में मौजूद होगा—मेरा बिचार है कि संसार की मुख्य मुख्य भाषाओं में एक नोटिस छपवा कर जिस में इस नगरी की कुल कैफ़ियत हो, बंटवाई जाय, ताकि बस्ती बढ़ जाने के कारण वे लोग जो स्वदेश छोड़ने के लिये बिवस होते हैं, इस आनन्द नगरी में आ बसें ॥ इन नोटिसों में उक्त नगरी की बनावट इस में रहने से तन्दुरुस्ती और चित्त प्रसन्न रहने का कारण और सुख शान्ति का ऐसा विवरण हो जिस से लोग सहज ही में वहां खिंचे चले आवें। जो विचारे किसी राजनैतिक झमेल के कारण अपने देश से निकाले जाते हैं (महाशयो! उन का ख्याल मैं रखता हूं, यह जान कर आप विस्मित न हूजिये) और नाना प्रकार के महान् गुणो के रहते भी जिन्हें कहीं जगह नहीं मिलती और

सदा छिपे रहना पड़ता है उन्हें हम इस नगरी में बड़े आदर से ला बसावेंगे और उन की विद्या बुद्धि, बीरता और योग्यता से हमारी नगरी की उन्नति का मार्ग सुगम हो जायगा, क्योंकि चाहे किसी नगर में कितने ही धनशाली क्यों न बसते हों जब तक वहां बुद्धिमान् शूर बीर और योग्य कर्म्म बीर पुरुषों की संख्या अधिक न होगी वह नगरी कभी भी प्रतापशाली नहीं कही जा सकती ॥ इसी नगरी में हम ऐसे विश्व विद्यालय स्थापित करेंगे जहां युवकों को रटन्तू तोते बनाने के बदले सच्ची योग्यता की शिक्षा दी जायगी और इसी प्रकार से हम आने वाली सन्तान को संसार का भूषण बना सकेंगे॥ हमारी लेखिनी में वह ताक़त नहीं जो उस उत्साह को प्रगट कर सके जो डाक्टर साहब के व्याख्यान समाप्त होने पर, उपस्थित सभासदों ने चीयर्स पर चीयर्स और करताल ध्वनि द्वारा प्रकट किया यहां तक कि सारे हाल में क़रीब १५ मिन्ट तक सिवाय चीयर्स की ध्वनी की गूंज के और कुछ सुनाई ही नहीं दिया ॥ डाक्टर हरीनाथ के बैठ जाने पर सभापति महाशय ने पलक झपका करसैन मारते हुए डाक्टर सासब के कान में धीरे से कहा "वाह भाई! तुम ने रोज़गार तो अच्छा तज बीजा, चुंगी से तुम्हें भरपूर आमदनी होगी इस में कोई सन्देह नहीं कि यह काम जरूर ही सिद्ध हो जायगा, बशर्ते कि नोटिसों में बड़े २ लोगों के नाम छापे जायं और हम में से जो बीमार और निर्बल लोग हैं वह तो फौरन् ही वहां जा बसेंगे ॥ लो देखते क्या हो, तुम्हारी डाक्टरी भी खूब चमक निकलेगी ॥ हां, हां, मेरा नाम एक अच्छी इमारत और ज़मीन के लिये पहिले ही लिख लो ॥ सभापति की इस ओछी बातों से हमारे सज्जन डाक्टर

साहब को बड़ा दुःख हुआ और मन में उन्होंने इस बात से अपनी बेइज़्ज़ती समझी, क्योंकि वह बिचारे स्वप्न में भी लालच को अपने पास फटकने देने वाले आदमी न थे. और वह सभापति जी को इस का उत्तर दिया ही चाहते थे कि इसी बीच में उन्होंने उपसभापति को खड़े हो कर उक्त उदार प्रस्ताव कर्ता के निमित्त धन्यबाद का प्रस्ताव करते सुना, उन्हों ने धन्यवाद का प्रस्ताव करते हुये कहा कि 'इस स्वास्थ्यवर्द्धिनी सभा का गौरव चिरकाल तक इस लिये विख्यात रहेगा कि ऐसे सर्व श्रेष्ठ विचार का अंकुर यहां ही से पैदा हुआ है। ऐसे उच्च भावसंयुक्त विचार अति उन्नत और उदार चित्त में ही समा सकते हैं और जब यह विचार प्रगट किया गया है तो एक ताज्जुब सा होता है पहले हम में से किसी के दिमाग़ में इस विचार ने जगह क्यों न की।

करोड़ों रुपये मूर्खता बस व्यर्थ युद्धों में स्वाहा कर दिये गये, लक्षों की बड़ी बड़ी पूंजियां बेवकूफ़ी के रोज़गारों में नष्ट कर दी गई क्या ही अच्छा होता यदि वह सब द्रव्य ऐसे श्रेष्ठ कार्य्य की सुफलता में लगाया जाता' इसके बाद वक्ताने यह प्रस्ताव किया कि 'इस नगरी के स्थापन कर्त्ता की प्रतिष्ठा स्थापन के लिये उस आदर्श नगरी का नाम हरिपुर रक्खा जाय—यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हो गया होता पर हमारे डाक्टर साहब ने खड़े होकर इस का विरोध करते हुए कहा 'नहीं, नहीं, इस प्रस्ताव से मेरे नाम का कुछ भी सम्बन्ध नहीं होना चाहिये और इस भावी नगरी का हम लम्बा चौड़ा संस्कृत या अरबी से निकला हुआ नाम रखना भी पसन्द नहीं करते। यह आनन्द और सुख शान्ति का स्थान होगा इस लिये इसका नाम शान्तिपुर रखिये'॥

डाक्टर की राय से सब लोग सहमत हुए, क्योंकि सब लोग इन्हें सन्तुष्ट करना चाहते थे, और इस प्रकार से आदर्श नगरी की स्थापना का पहला काम अर्थात् उस का नाम करण हो गया ।

इस के बाद उस नगरी की अन्य बातों पर सभा में बहस होने लगी, पर हम यहां उस का खुलासा वृत्तान्त न लिख कर 'टेलीग्राफ़ पत्रिका इत्यादि अख़बारों में दूसरे रोज़ सबेरे इस बारे में जो लेख निकले उस का कुछ हाल लिखेंगे । ट्रीब्यून ने इस का कुल हाल छापा और उस समाचार को शीघ्र ही भारत वर्ष भर में फैला दिया यों ही फैलते फैलते ट्रीब्यून अख़बार का यह पर्चा रुड़की कालिज के एक लम्बे चौड़े पहलवान की सूरत के प्रोफ़ेसर निशा-नाथ के हाथों में जा पहुंचा । प्रोफ़ेसर निशानाथ भी जाति के काश्मीरी ब्राह्मण थे, इन की उम्र लगभग ४५ या ४६ वर्ष के होगी, पर इन की चौड़ी छाती, और लम्बी मज़बूत भुजदण्डों ने इन्हें ख़ासा ३०, ३२ वर्ष का पट्ठा बना रक्खा था इन के सामने के मस्तक पर केश न थे केवल कान और सिर के पीछे थोड़े से अधपके केशों ने मस्तक का चिकना और चमकता हुआ ऊपरी हिस्सा ऊंचा कर रक्खा था । इन की आंखें चमकदार और स्थिर थी, जिन की स्थिरता के कारण इन के चित्त का कोई भाव परखना कठिन था, इन का मुंह कुछ बड़ा सा था जिस के भीतर बड़े बड़े सफ़ेद दांत ऐसी मज़बूती से जड़े हुये थे मानों उन के गिरने का ज़माना अभी दूर है और होंठ का नीचे का हिस्सा ऊपर ही की नाईं पतला था, और जब वह मुंह बन्द किये रहते थे तो मालूम होता कि मानो केवल शब्द की स्वर को ठीक रखने के अलावे इन होठों का और कुछ काम ही नहीं है ।

इन की दाढ़ी मूंछ सब मुड़ी हुई थी ॥ प्रोफ़ेसर साहब का चेहरा चाहे हमें आप को भले ही लङ्गुर सा मालूम पड़े पर वे तो अपने आप को मजनूं ही समझते थे"। यही प्रोफ़ेसर साहब कमरे में एक बड़ीसी कुर्सी पर बैठे हुए थे सामने टेबुल पर इधर उधर मोटी मोटी किताबें की जिल्दें पड़ी हुई थीं और आले में एक बड़ा सा क्लाक खट खट कर रहा था, अभी प्रोफ़ेसर साहब ने कलम उठाकर फुलस्केप के एक कापी पर कुछ लिखना शुरू किया ही था कि हाथ में कुछ अख़बार और चिट्ठी लिये हुये एक नौकर ने प्रवेश किया, जिसे देखते ही प्रोफेसर साहब ने उच्च स्वर से जल्दी से कहा—छः बज के ५५ मिनट! डांक ६॥ बजे आती है ॥ मेरी चिट्ठी लाने में तैने २५ मिन्ट की देरी कर दी। कल्ह से यदि चिट्ठियां साढ़े छः बजे मैंने टेबुल न पर पाई तो तेरा कान पकड़ के निकाल दूंगा"। 'व्यालू तैय्यर है, क्या सरकार इस समय भोजन करेंगे' नौकर ने जाते जाते कहा, 'नामाकूल कहीं का', जानता नहीं कि मैं ७ बजे व्यालू करता हूं, अभी ५ मिन्ट बाकी है, तुझे यहां आये तीन हफ़्ते हो गये और अभी तक तुझे इस की ख़बर नहीं ख़बरदार!, याद रख कि मैं कभी भी एक मिन्ट नहीं बदलता और न दो बारा आज्ञा देता हूं' ॥

प्रोफ़ेसर साहब ने अख़बार और चिट्ठी सब टेबुल पर रख दी और अपना लेख जो पहले से लिख रहे थे लिखने लगे॥ यह लेख दूसरे दिन "पंजाबी" में छपने वाला था जिस में कभी कभी प्रोफ़ेसर साहब लिखा करते थे॥ पाठको! ज़रा पीछे से छिप कर हमें देखने तो दीजिये कि प्रोफ़ेसर साहब कौन सा लेख लिख रहे हैं "हिन्दुस्तानी डाकृरों की अयोग्यता और बेइमानी"—लीजिये नमूना देख लीजिये यही उन के लेख का सिरनामा है॥

अभी प्रोफ़ेसर साहब अपने लेख में मग्न थे, कि इसी बीच में पास ही की टेबुल पर नौकर ने एक बड़ी सी थाली में रोटी पीयाज के तले हुए कुछ गट्ठे पांच चार केला और एक बड़े से कटोरे में गोश्त की तरकारी ला रक्खी, अतएव प्रोफ़ेसर साहब ने डेक्स पर क़लम रख कर भोजन की ओर हाथ बढ़ाया और थोड़ी ही देर में सारे सामान को अपनी उददरी में पहुंचाकर जल पी टेबुल पर से एक सीगरेट उठा और उसे जला कर भकाभक धूआं छोड़ने और पूर्ब्बवत् लिखने लगे ॥ रात आधी से ज्यादे जा चुकी थी, जब प्रोफ़ेसर साहब ने लेख के आख़री पन्ने पर अपना दस्तख़त कर डेक्स पर रख दिया और सोने के कमरे की ओर निद्रा देवी के गोद में थकावट मिटाने के लिये जा लेटे॥ पलङ्ग पर लेटते हुए उन्होंने अख़बार पढ़ना चाहा पर आंखों में खुमारी भरी आती थी कि "अद्भुत भाग्योदय" का हाल पढ़ते२ उन का ध्यान हर कुमरी के नाम की ओर जा पड़ा ॥ उन्हों ने अपने उड़ते हुए बिचारों को जो इस नाम से उन के ध्यान में आ रहे थे इकट्ठे करने की कोशिश की पर जब कुछ समझ में न आया तो चंद मिनटों के बाद अख़बार फेंक और लंप बुझा बिस्तरे पर हाथ पैर फैला कर खुर्राटा लेने लगे ॥

ऐसा अक्सर होता है कि जब सोते वक्त हमें किसी चीज़ का ध्यान आ जाता है तो सुपने में भी हमें वही बातें दिखाई देती हैं वही बात यहां भी हुई अर्थात् रात भर में प्रोफ़ेसर साहब वही हर कुमरी और उन की बहिन को नाना रूप से देखते रहे और सबेरे जब बिस्तरे पर से उठे तो मन में भी वही धुन सुमाई रही, उठ कर ज्यों ही वह घड़ी देखने चले कि इसी बीच में एका एकी उन के

मन में एक विचार की रोशिनी चमक गई ॥ अख़बार को जल्दी से उठा कर उन्हों ने उसे बराबर पढ़ा और हाथ पर सिर रख कर एक दृष्टि से उस पंक्ति की तरफ़ निहारते रहे जिस पर रात को सोने की हड़ बड़ी में उन की निगाह नहीं पड़ी थी ॥ धीरे२ उन्हें वह बात जिस के खोज में वह थे याद आने लगी और चट से लपक कर दीवाल पर आइने के पास जो छोटी सी तस्वीर लटक रही थी उसे उन्हों ने उतार कर हाथ में ले लिया और उस को उलट कर उस के पीछे की जमी हुई धूल को गंजी की अस्तीन से पोंछ डाला ॥ प्रोफ़ेसर साहब का ख्याल सही था क्योंकि चित्र के पीछे फ़ारसी अक्षरों में लिखा हुआ था ॥ यद्यपि स्याही पुरानी पड़ जाने के कारण अक्षर कुछ मिट से गये थे पर "श्याम कुमारी" यह नाम ध्यान दे कर पढ़ने से मजे में पढ़ाई देता था ॥ उसी रोज़ शाम को पंजाब मेल पर सवार हो कर प्रोफ़ेसर साहब कलकत्ते को रवाने हो गये ॥

चतुर्थ परिच्छेद ।
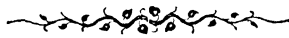
दो हक़्दार

ता: ६ नवेम्बर को सबेरे ६ बजे प्रोफ़ेसर निशानाथ हब्ड़े स्टेसन पर जा पहुंचे ॥ दो पहर को नं० ३४ बिलिंगटन स्कायर के ठिकाने से पता लगा कर वह 'मिसर्स चौधरी एन्ड को वकील के दफ़्तर में दाखिल हुए ॥ दफ़्तर के भीतर घुसते ही उन्होंने अपने को एक बड़े दालान में पाया जिस के एक तरफ़ क्लर्क लोग बेंचों पर सामने डेकस रक्ख के लिख रहे थे और दूसरी तरफ़ आम लोगों के बैठने के लिए बेंचें

रक्खी हुई थी ॥ दालान से सटी हुई सामने ही एक चौकोन कोठरी थी जहां एक टेबुल के सामने पांच कुर्सियां रक्खी हुई थीं और कोने में एक ब्रेंच पर सब्ज रंग के टीन के बीसीयों बक्स रक्खे हुए थे और टेबुल पर एक "इन्डियन डाइरेक्टरी" पड़ी हुई थी और टेबुल के आमने सामने दो कुर्सियों पर दो युवा बैठे हुए कुछ लिख रहे थे ॥ "मिस्टर हरेन्द्रनाथ चौधरी वकील कहां हैं" निशानाथ ने कोठरी में पैर रखते हुए ऐसे ढंग से पूछा मानों अपने नौकर से पूछ रहे हैं ॥ "हरेन्द्र बाबू उपर अपने प्राइवेट कमरे में हैं क्या नाम है आप का ; और क्या काम है ; "उन में से एक ने कहा" ॥

"मैं रुड़की कालिज का प्रोफ़ेसर निशानाथ हूं" काम महारानी शैलकुमारी की जायदाद के बारे में है" ॥

वकील साहब के प्राइवेट कमरे से टेबुल के पास दिवाल तक एक नल लगा हुआ था जिस के पास मुंह ले जाकर हेडक्लर्क ने धीरे से प्रोफ़सर साहब का हाल कहा जिस के जवाब में नल में से यह जवाब आया" जहन्नम में जाय शैलकुमारी और उस की जायदाद ! क्या आफत है अब दूसरा जूआचोर इस पर अपना दावा जतलाने आया । "पर क्लर्क ने निशानाथ को इसका आशय न जतला कर फिर नल में फूंका "यह आदमी इज्ज़तदार मालूम पड़ता है, पर हां इस के शकल में कुछ रुढ़ता ज़रूर है" क्या 'वह रुड़की से आया' है फिर नल में से उत्तर आया ॥ 'जी हां ऐसा ही तो कहता है" क्लर्क ने प्रति उत्तर दिया ॥ एक लम्बी आह के बाद यह आवाज़ आई अच्छा ऊपर भेज दो ॥

हेडक्लर्क ने दिवाल के पीछे की किवाड़ खोल और सीढ़ी दिखा कर प्रोफ़ेसर साहब से कहा" बस दूसरे खंड पर जाते

ही सामने वाला दरवाज़ा" अत एव प्रोफ़ेसर साहब खटा खट कूदते फांदते सीढ़ी पर चढ़ गये और सीढ़ी पर चढ़ कर उन्हों ने सामने द्वार पर सब्ज बनात का एक पर्दा पड़ा देखा और द्वार के ऊपर एक पीतल की तख़्ती पर काले काले अक्षरों में एच० के० चौधरी यह लिखा हुआ पाया ॥ वकील साहब एक बड़े से मेहागनी काठ के टेबुल के पास एक चमड़े से मढ़ी हुई कुर्सी पर बैठे हुये थे और उनके सामने टेबुल पर कई टीन के खुले हुए बकस और कागज़ तथा बहुत से दलील इधर उधर बिखरे पड़े थे ॥ प्रोफ़ेसर साहब को देखते ही हरेन्द्र बाबू ने कुर्सी से जरासा उठ कर उनका अभिवादन किया और फिर यह देखाने के लिये कि' मैं बड़े झंझट में हूं" कागज़ातों को उलट पुलट करने लगे और अन्त में प्रोफ़ेसर साहब की ओर रुख़ कर के जो बिचारे अभी तक खड़े ही थे, बोले ॥ कृपा कर अपना काम संछेप ही में कह जाइये, मुझे फुरसत बहोत कम है, आपके लिये चंद मिन्टों से ज्याद: मैं नहीं लगा सक्ता" ॥

हमारे प्रोफ़ेसर साहब कुछ मुस्कराये और वकील साहब की बेअदबी का कुछ ख्याल न कर के "उन्होंने कहा" जब आपको मालूम होगा कि मैं किस लिये यहां आया हूं तो शायद आप मेरे लिये कुछ अधिक समय लगावेंगे" ॥ अच्छा जनाब अपना काम कहिये" वकील साहब बोले 'मेरे काम का सम्बन्ध होशियारपुर के पं० शान्तिनाथ के छोड़े हुए जायदाद से है ॥ मैं पं० शान्तिनाथ की बहिन का दोहता हूं जिनका नाम श्यामकुमारी था और जिनका बिवाह १७९२ ईस्बी में मेरे नाना पं० कृपाशङ्कर से हुआ था जो ३६ वीं डोगरा पल्टन में असिस्टेन्ट सर्जन थे और जिन की मृत्यु भी हो गई है ॥ मेरे पास पं० शान्तिनाथ के हाथ की लिखी

हुई तीन चिठ्ठियां मौजूद हैं जो उन्हों ने अपनी बहिन को इस बारे में लिखी थीं कि 'मैं तुम्हें कुल जायदाद का वारिस कर जाऊंगा" इसके अलावे अपनी बंसावली का सम्बन्ध उन से साबित करने के लिये मेरे पास और सब ज़रूरी काग़ज़ात भी मौजूद हैं ॥

इस के अलावे प्रोफ़ेसर साहब और वकील साहब से और जो कुछ कानूनी बातें हुईं उस का लम्बा चौड़ा बिस्तार यहां न कर हम इतना ही कहना काफ़ी समझते हैं कि प्रोफ़ेसर घण्टों तक अपना हक़ साबित कर ने के लिये हरेन्द्र बाबू से बहस करते रहे और बीच में यह भी कहा कि मेरी एक इच्छा यह भी है कि डाक्टर के हाथ से यह रक़म जिस किसी तरह से क्यों न हो निकाली जावे क्योंकि डाक्टर सब बडे गधे होते हैं, अधिक सम्भव है कि हरिनाथ इस धन को वाहियात कामों में उड़ावे और जब जायदाद का हक़दार अपना दस्तखती पत्र इस मज़मून का लिखता है कि उस की बहिन कुल जायदाद की मालिक होगी तो कोई सबब नहीं है कि हरिनाथ इस में टांग अड़ावे और जब कि कानूनन् मेरा हक़ हरिनाथ से जबर है तो मैं चाहे लक्षों क्यों न ख़र्च हो जाय चाहे मुझे जेल ही में क्यों न सडना पड़े मैं डाक्टर को कभी इस धन का स्वामि न होने दूंगा" ॥

चतुर वक़ील साहब ने मन में सोंचा कि प्रोफ़ेसर जो कुछ कहता है यदि सब सच भी हो तौ भी इसका हक़ डाक्टर से दूसरे ही दर्जे पर है, पर क्या हुआ यदि दोनों में मुक़द्दमें बाज़ी हो जाय, तो मेरे ही पौ बारह हैं और मुक़द्दमें के लिए दोनों को पेशगी रुपये दे दे कर जब सूद समेत दूना चौगुना हो जायगा तो फिर दोनों में मेल करा

कर द्रब्य और यश दोनों लाभ का भागी बनूगा इसी बीच में दोनों को संशय में डाल रखूं ख़ैर अब प्रोफ़ेसर साहब के दिल का भी ज़रा हाल लेना चाहिये, फिर डाक्टर को टटोला जायगा यह बिचार कर हमारे वक़ील साहब ने बड़ी गम्भीरता से कहा 'जनाब मैंने आपकी सब बातें ध्यान पूब्र्वक सुन ली पर डाक्टर हरिनाथ के हक़ में जैसे पायदार सबूत मौजूद हैं उसके मुक़ाबिल में आपके दावे का सबूत (यदि सबूत कहा जासके) छाया मात्र है और माफ़ कीजियेगा यदि मैं कहूं कि यह साबूत मुकद्दमे के लिए काफ़ी पायदार नहीं है पर जब आप अपना दावा साबित करने के लिये ऐसे कमर कसे तय्यार हैं तो ख़ैर अपने कागज़ात एक बेर मेरे पास भेज दीजिए मैं भी एक बेर उलट पलट कर ज़रा देख तो लूं पर निश्चय जानिये मुझसे जो कुछ सेवा आपकी होसकेगी उसके लिये मैं जी जान से तय्यार हुं" इसी प्रकार की लम्बी चप्पो कर वक़ील साहब ने प्रोफ़ेसर के दिल का हाल जानना चाहा,--समय की कमी का यहां कुछ ज़िक्र ही ना था--पर निशानाथ एक छटे हुआ धूर्त थे उसने भी केवल इतना ही कह कर कि अच्छा सब कागज़ात कल आप के पास भेज दूंगा ।अपना रास्ता लिया और मन में सोंचने लगा कि यह वकील भी क्या ही धूर्त है, पर क्या हुआ बचा जी मुझे धोखा थोड़े ही दे सक्ते हैं, यद्यपि उक्त जायदाद पर मेरा पूरा २ हक़्क़ नहीं पहुंचता पर मुकद्दमे में बेवकूफ़ हरिनाथ को तो छकाने का मौका मिलेगा, बस मेरे लिये यही परम सन्तोष है, जितने डाक्टरी पेशे के आदमी हैं सब बड़े बुरे और बेइमान होते हैं, अत एव अब जब उन में से एक को कुचलने का मौका मेरे हाथ आया तो भला मैं उसे क्यों छोड़ने लगा, अस्तु यों ही सोंचते प्रोफ़ेसर

साहब अपने घर पहुंचे, इधर वक़ील साहब ने फ़ौरन एक अर्जेण्ट तार दे कर हरिनाथ को अपने पास बुलाया और दूसरे ही दिन शाम को पांच बजे हमारे सज्जन डाक्टर साहब हरेन्द्र बाबू के आफ़िस में आ मौजूद हुए। वक़ील साहब ने समझा था कि डाक्टर प्रायः हाथ में आए धन की प्राप्ति में विघ्न का हाल सुन कर ज़रूर दुःखित होंगे, पर नहीं उन्होंने बड़ी धीरता और शान्ति से हरेन्द्र बाबू की सब बातें सुनी और साफ़ दिल से यह भी कह दिया कि हां मुझे मालूम है कि मेरे बड़े दादा शान्तिनाथ के एक बहिन थी पर उन का बिवाह कहां हुआ था और उनके कोई सन्तान इत्यादि हुई या नहीं अथवा शान्तिनाथ ने अपनी बहिन को अपनी जायदाद देने को लिखा था या नहीं, इस बात की मुझे कुछ ख़बर नहीं है॥ वकील साहब इसी बीच में एक काग़ज़ पर कुछ नोट कर रहे थे और सामने एक काग़ज़ का बड़ा सा बण्डल रक्खा हुआ था, जिसे उन्होंने खुशी खुशी डाक्टर साहब को दिखाया और दिखाते दिखाते अपने मवक्किल से कहने लगे कि सच जानिए, मैं आप से कुछ छिपाया नहीं चाहता यह तो आप को भी भास गया होगा कि एक भारी मुकद्दमें का सामाना हो रहा है और यह भी शायद आप को मालूम होगा कि ऐसे मुकद्दमें प्रायः पचासों वर्ष तक चलते हैं॥ मेरी राय तो यह है कि आप बिलकुल कबूल ही न करिये कि शान्तिनाथ की कोई बहिन थी, यद्यपि निशानाथ के पास शान्तिनाथ के हाथ की लिखी चिट्ठी मौजूद है, पर उस से क्या होता है॥ यद्यपि अपना हक्क साबित करने के लिए उस के पास यह अदना सा सबूत है सही लेनिक क़ानूनी बहस में मैं उस सबूत को धूल की नाईं उड़ा दूगा, पर भय केवल एक

ही बात का है कि निशानाथ ज़रूर खोज करके म्युनिसिपल आफ़िस के दफ़्तर खाने से अन्य सबूतों का पता लगावेगा, यदि वहां से कोई सबूत हाथ न आये तो उस का जाल से प्रमाण बना लेना भी कुछ आश्चर्य नहीं ॥ मुझे विश्वास है कि ध्यान लगा कर खोजने से उसे प्रमाण हाथ आसक्ते हैं जिस से निशानाथ का दावा आप के ऊपर साबित हो जाय? यदि ऐसा हुआ तो बड़े लम्बे झगड़े चलेंगे और बर्षों खोज बिनोद करते २ नाकोंदम आ जायगा ॥ दोनों ही तरफ़ कामयाबी की पूरी आशा है, अत एव उभय पक्ष वाले एक २ ऐसी लिमीटेड कम्पनी कायम कर जो उन्हें मुकद्दमें के लिए रुपया देगी अदालत की जान हलाकान कर सक्ते हैं ॥

इसी तरह का एक नामी मुकद्दमा प्रिबी कौन्सिल में तिरासी वर्ष तक चला और अन्त को जब जमा पूंजी मय ब्याज के सब ख़र्च हो गई तब मुकद्दमें का भी स्वभाविक अन्त हो गया ॥ क्या ताज्जुब है कि खोज खाज, कमिशन और अदल बदल में ख्याल से ज्यादा समय लग जाय। दस वर्ष में भी शायद इस मामिले का कुछ फ़ैसला न हो और छत्तीस करोड़ पर और भी बर्षों जङ्ग लगा करे ॥

डाक्डर साहब हरेन्द्र बाबू की चलती फिरती बातों को ध्यान से सुनते रहे मन २ में ताज्जुब करते थे कि इनकी बातें कभी समाप्त भी होंगी या नहीं ॥ वक़ील साहब की सलाह का उन्हों ने कुछ भी ख्याल न किया पर उन का जी इस ख्याल से टूटने सा लगा कि क्या मेरे हाथ का आया हुआ यह धन जिस से मैंने इतना भारी उपकार करना विचारा था, यों निकल जायगा। क्या मेरी किश्ती किनारे के निकट आकर भी तूफ़ान के ज़ोर से प्रबल धारा में बह जायगी, ख़ैर ईश्वर की जो मर्ज़ी ॥ दूसरा कोई मनुष्य होता

तो इस हालत में उसे मूर्छा आ गई होती, पर हमारे डाक्टर साहब स्वभाव ही से धीर प्रकृति के थे, यह आप लोगों को तभी मालूम हो गया होगा, जब कि इस सम्पत्ति के वारिस होने का हाल सुन कर उन्हों ने इस के सच मानने से पहले बहुत कुछ आना कानी की थी, इस लिए इस मौके पर भी कुछ घबड़ाहट प्रगट न कर उन्हों ने धीरे से वकील साहब से पूछा अब क्या किया जाय ?

क्या किया जाय ? (खांस कर) यही कहना तो मुश्किल है, और इस को निर्णय करना और भी कठिन है; पर इस में कुछ शक नहीं कि अन्त में सब बातें तय हो जांयगी॥ मुझे इस का पूरा निश्चय है । अंगरेज़ी कानून से बढ़ कर जगत में शायद ही और कोई श्रेष्ठ कानून होगा, पर क्या करें आख़िर कहते ही बनता है कि इस की चाल कुछ धीमी ज़रूर है--बहुत धीमी--ज़रा वादी प्रतिवादियों को झुराती है--(खांसी फिर खांसी)- पर अन्त में दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है॥ इस में ज़रा भी संदेह न करिये कि आप चन्द वर्षों में सम्पति पा सकेंगे क्योंकि (फिर खांसी और खांसी) आप का हक़्क़ पूरी तरह से साबित है।

डाक्टर साहब वकील साहब के कमरे से बाहर निकल कर अपने डेरे की ओर चले, वकील साहब की बातों से उन्हों ने यही निश्चय किया कि या तो लम्बे मुकद्दमें में सिर देना पड़ेगा, या धन पाने की सारी बात को सुपना समझ कर उस से हाथ धोना पड़ेगा ॥ डाक्टर साहब को यह सोच कर बड़ी पीड़ा हुई कि इस विघ्न के आ पड़ने से मेरे सोचे हुए ऐसे महान उपकार का मनसूबा मन का मन ही में रह जायगा । इसी बीच में हरेन्द्र बाबू ने प्रोफ़ेसर निशानाथ को बुला भेजा, जो इन के पास अपने ठिकाने

का कार्ड देते गए थे, और उन के आते ही कहा कि डाक्टर हरिनाथ यह स्वीकार ही नहीं करते कि मेरे दादा के कोई बहिन थी और न आपुस से मामला तय करने की ही उन की इच्छा है ॥ इस लिये यदि आप समझते हों कि मेरे पास काफ़ी सबूत है, तो सिवाय अदालत की शरण लेने के आप को और कोई चारा नहीं है । मेरा इस से कुछ लाभ नहीं है--मैं तो फकत सब देखता रहूंगा और न मैं आप को मुकद्दमा दायर करने से रोकना ही चाहता हूं ॥ मुझे क्या है--मेरा तो यह पेशा ही है--मैं तो यही चाहूंगा कि यह मुकद्दमा कम से कम तीस वर्ष तो चले, मुझे उल्टी इस से खुशी होगी, यदि आप को यह डर हो कि मैं आप से कुछ चाल चलूंगा, तो यदि आप की मर्जी हो तो अपने हाथ में यह मुकद्दमा न रख किसी दूसरे वकील से मैं आप की जान पहचान करवा दूंगा ॥ विश्वास रखिये कि मैं ऐसे वैसे के हाथ में आप का मुमद्दमा नहीं जाने देने का, वह वकील भी--जिस से मैं आप की भेंट करवाऊंगा काम में फ़र्द है ' क्या कहें आज कल का ज़माना ऐसा आ गया है कि वकील मुख़्तार मवक्किलों पर पूरी डकैती करने लगे हैं--मुझे खुद लज्जा आती है कि मैने यह पेशा क्यों अख़्तियार किया, पर क्या करें अब कोई दूसरा काम हो भी नहीं सक्ता" इत्यादि इसी प्रकार से हरेन्द्र बाबू ने अपनी लच्छेदार बातों में प्रोफ़ेसर साहब को फंसाना चाहा, पर निशानाथ ने इधर उधर की बातों को छोड़ फ़ौरन ही पूछा कि अच्छा अनुमान कर लें कि यदि डाक्टर हरिनाथ मामला तय करने की इच्छा रखता हो, तो मुझे इस में कितना छोड़ना पड़ेगा ॥

प्रोफ़ेसर निशानाथ भी बड़ा चतर और चालाक

आदमी था इस लिये इधर उधर की गप्प सप्प को ताक पर रख उसने फौरन ही असल काम की बात छेड़ी पर हमारे चालाक और स्वार्थी वकील साहब उनके इस बात से कुछ सहम से गए और बातों के घुमाव फिराव से प्रोफेसर साहब को यह जतलाया कि इस तरह की हड़ बड़ी से ऐसे काम नही हुआ करते—अभी तो शुरू ही नही हुआ और आप अन्त समय देखने लगे, यदि आपको डाकृर के साथ मामला तय ही करना है तो ऐसे उतावले पन से काम नहीं चलेगा हमें ज़रा ढ़ील दे देना चाहिए और ऐसे ढंग से बातें करनी चाहियें कि जिस से डाकृर को मालूम हो कि मामला तय करने की आपकी इच्छा नहीं है, "पर जनाब यदि मेरी बात मानिए तो सब बातें मेरे उपर छोड़ दीजिए सब मामला ठीक ठाक कर देने का मेरा ज़िम्मा रहा" ॥

बहुत अच्छा निशानाथ ने कहा, पर यह भी तो मालूम हो कि आखिर मेरे पल्ले क्या पड़ेगा ॥ पर वकील ने इसका कुछ आंय बांय शांय जवाब दे दिया, जिस पर बेसी तर्क बितर्क न कर प्रोफ़ेसर साहब यही कह कर चलते बने कि 'अच्छा जैसा उचित समझो करो मैं सब तुमही पर छोड़ देता हूं" ॥

दूसरे दिन सबेरे हरेन्द्र बाबू ने हरिनाथ को बुला भेजा और जब उन्हों ने आकर धीरे से इतनाही पूछा कि क्या कोई जरूरी बात है, तो हमारे वकील साहब डाकृर साहब की शान्ति देख कुछ अकबकाए और कहा कि 'बहुत कुछ जांच के बाद मुझे यह निश्चय हुआ है कि इस आने वाली आफ़त को बीचही में रोक देना चाहिए और मेरी राय तो यह है कि निशानाथ के साथ आप मामला तय

करलें मेरी जगह यदि कोई दूसरा वकील होता तो ज़रूर आपको मुक़द्दमा चलाने की सलाह देता पर मैं एसा नहीं कर सक्ता शुरू ही से न जाने क्यों मुझे आपसे बिरादराना मुहब्बत सी हो गई है और यदि यह मामला जल्दी तय हो जाय, तो मैं अपने को बड़ा भाग्य वान समझूगा ॥ डाक्टर हरिनाथ सहज ही में हरेन्द्र बाबू से सहमत हुए क्योंकि कुछ दिनों से अपने बेज्ञानिक स्वप्न अर्थात 'आदर्श नगरी' के बसाने के धुन में वह ऐसे मग्न से हो रहे थे कि इस लिए मुकद्दमें बाज़ी कर दस बारह वर्ष ठहरना उनके लिए मुहाल था ॥ वकील साहब की चलती फिरती बातों में न फंस कर (क्योंकि वह कानूनी झगड़ों से बेशी वाकिफ़ न थे) उन्हों ने यही सोंचा कि यदि मुझे भर पूर नगद रुपया मिलजाय जिस से मेरी 'आदर्श नगरी' बस जाय तो मैं सब कुछ करने को तय्यार हूं यही बिचार कर उन्होंने वकील साहब से कहा कि 'बाबू साहब मैं कुछ नहीं जानता मैं आपही पर सब छोड़ता हूं जो मुनासिब समझिये कीजिए ॥ अब क्या था अब तो हरेन्द्र बाबू के मन की हुई ॥ इस में कोई संदेह नहीं कि यदि उनकी जगह पर कोई दूसरा वकील होता तो ज़रूर मुकद्दमा लड़ा कर एक अच्छी सालियाना आमदनी पर हाथ मारता, पर हमारे वकील साहब ने सोंचा कि हाथ में आए हुए लाभ को छोड़ कर आगे की कौन आशा करे, क्या जाने आगे चल कर क्या हो, इस से अभी ही मामला तय कर क्यों न मज़े से हाथ रंगूं ॥ यही विचार कर उन्हों ने दूसरे रोज़ डाक्टर साहब को इस मज़मून की एक चिट्ठी लिखी कि निशानाथ को बहुत कुछ समझा बुझा कर मैंने मामला तय करने पर राज़ी किया है। पीछे से जब निशानाथ उन से

मिलने आए तो उन्हों ने कहा कि डाक्टर मामला तय करने पर अभी पूरे पूरे राज़ी नहीं हुए हैं और न कुछ निश्चय बात ही कही है, और सुनते हैं कि सुनगुनी पा कर कोई तीसरा दावेदार भी खड़ा होने वाला है। इसी प्रकार से जब डाक्टर मिलने आए तो उन्हें भी वही उड़ती पड़ती बातें सुनाईं॥ यों ही एक सप्ताह तक वह दोनों मवक्किलों को यह खेल खिलाते रहे॥ हफ़्ते भर तक तो उन की यह चाल चलती रही, पर एक रोज़ सबेरे एक ऐसी बात हुई, जिसे वकील साहब ने कभी सोंचा भी न था और जिस से सब मामला उलट पुलट हो जायगा एसी सूरत नज़र आने लगी॥ बात यह थी कि हमारे सज्जन और भोले डाक्टर साहब के दिल में वक़ील साहब के चालों से तरह २ का शक और खौफ़ पैदा होने लगा और उन का मन कुछ चञ्चल हो गया॥ वक़ील साहब जल्दी से अपने जाल में फंसी हुई मछली को खींचते हुए हिचकते थे और उन्हें डर था कि कहीं हाथ से जाल फिसल कर जल में न जा पड़े पर इस मौके पर उन के इतने फूंक फूंक कर पैर रखने में कुछ ज्यादती थी, क्योंकि हमारे भोले डाक्टर साहब ने शुरु ही से कह दिया था कि मैं मुकद्दमें के झञ्झट में नहीं पड़ना चाहता तुम जैसा मुनासिब समझो मामला जल्दी तय कर लो पर हमारे चालाक और मतलबी बकील साहब तो गहरे नफ़े का मौक़ा तक रहे थे और जब उन्हों ने देखा कि दोनों मवक्किल अब खूब उतावले हो रहे हैं, तो उन्हों ने अपनी नकाब उतारी और तुरन्त मामला तय करने का इन्तज़ाम करने लगे॥ फौरन ही सेठ गोकुलचन्द हरजीवन दास की सूरत में एक गुजराती कोठी वाल आ मौजूद हुए और इस शर्त पर कि छत्तिस करोड़ में से छः करोड़ कमीशन के मिले,

उन्हों ने सब मामला उसी रोज़ही तयकरवा देने के महान उपकार की बात कही ॥

डाक्टर हरिनाथ वकील साहब की ज़बानी यह हाल सुन कर फूले अङ्ग न समाए ॥ उन्हों ने यह भी ग़निमत समझा और चट पट इस मज़मून के दस्तावेज़ वग़ैरह पर दस्तख़त करने को तय्यार हो गए, अत एव फौरन ही ज़रूरी दस्ताबेज़ लिखी गई ॥ प्रोफ़ेसर निशानाथ को भी वकील साहब ने यह कह कर राज़ी कर लिया कि जनाब यदि हरिनाथ ऐसा भोला भाला प्रतिवादी न होता तो आप ही को कुल ख़र्च देना पड़ता ॥ ख़ैर ज्यों त्यों कर सब बातें तय हुईं दस्तावेज़ पर दोनों ने दस्तख़त कर दिए और कोठी वाल महाशय ने फौरन ही वङ्ग बङ्गाल पर पन्द्रह २ करोड़ की दो दर्शनी हुण्डी दोनों के हवाले की और कहा कि अब आप लोगों को कुछ नहीं करना पड़ेगा, इन दस्तावेज़ों के बदौलत कुल कारखाई कर मैं रुपया प्राप्त कर लूंगा ।

इसी प्रकार से हमारे 'ईमानदार' वकील बाबू हरेन्द्र कुमार चौधरी ने इस भारी मामले को तय कर दिया, और शाम को अपने मकान के सामने वाले नज़र बाग़ में कोठी वाल सेठ गोकुल चन्द साहब ने हरेन्द्र बाबू के सङ्ग ताश खेलते हुए कहा 'वाह' यार क्यों न हो, अबकी बार तो यह लम्बा हाथ मारा कि जन्म भर के लिए काफ़ी है--पर हम तो तुम्हें बड़ा चतुर समझे हुए थे, पर तुम निरे गधे ही निकले अरे ! एसे असामियों को और भी खूब मूड़ना था-- यह भी जो कुछ हुआ मेरी ही वदौलत समझो तुम तो कुल एक २ करोड़ ही के हिस्से से संतुष्ट थे, चलो कोठी पर चल के तुम्हारे हिस्से की तीन करोड़ की हुण्डी भी लिख दें यह कहते हुए हमारे सेठ साहब ने फौरन ही तीन करोड़ की

दर्शनी हुण्डी लिख कर वकील साहब के हवाले की और कुछ रोज़ बाद जरूरी कानूनी कारवाई के बाद छत्तिस करोड़ वसूल कर तीन करोड़ मुनाफ़े खाते जमा किया।

प्रोफ़ेसर निशानाथ ने भी डाक्टर साहब के इरादे के बारे में सब बातें सुनी थीं और उन्हें मालूम था कि वह ऐसा नगर बसाया चाहते हैं, जिस में वैज्ञानिक रीति से आब हवा अति शुद्ध और निर्मल रक्खी जावेगी, जिस में आगे चल कर हमारी सन्तान पूरी तन्दुरुस्त बलवान और शूर बीर हों॥

उन्हें यह ख्याल असम्भव सा मालूम पड़ा और वह सोंचने लगे कि यह मनसूबा कभी भी दुरुस्त नहीं उतरेगा, वह एक नगर बसा कर यश लिया चाहता है और क्या ताज्जुब कि एक दिन वहां का राजा ही बन बैठे राजा यह कभी होने का नहीं-बेईमान बेवकूफ़-मेरे दम में दम रहते यह कभी होने का नहीं-मेरी दौलत ले कर वह राज्य करेगा-नहीं नहीं-कभी नहीं-देखो तो उस के नगर को कैसा उड़ाता हूं और, उस के बाद उसी उपाय से संसार के बड़े २ राजाओं को भयभीत कर एक मात्र मैं ही सब पर अपना आतङ्क जमा लूंगा इस के लिये रुपया काफ़ी ही है-पर हां डाक्टर के मनसूबे का पहले सत्यानाश करना होगा॥ यद्यपि इस काम में बहुत लगेगा, पर खैर कोई हर्ज नही जो मनसूबा बान्धा है, उसे एक न एक दिन ज़रूर काम में लाऊँगा, डाक्टर का पहले सर्वनाश करना होगा उस की उन्नति मुझ से नहीं देखी जायगी-उह! (दांत पीस कर) मेरा बस चले तो अभी उसे कुत्ते से नुचवा डालूं-इसी प्रकार से अपनी द्वेषाग्नि में आपही जलते हुए निशानाथ शाम को पञ्जाब मेल पर सवार होकर दिल्ली की ओर रवाने

हुए॥ डाक्टर साहब पहले ही से दिल्ली रवाने हो चुके थे और वहां जाकर उन्हों ने 'स्वास्थ्यबर्धिनी सभा' के कई अधिवेशन किए जिस में 'आदर्श नगरी' की स्थापना और उस के इन्तज़ाम के बारे में कई बिलक्षण सभासदों के व्याख्यान हुए॥ एक दिन इसी प्रकार से उक्त नगरी के स्थापनार्थ विचार हो रहा था कि बीच ही से प्रोफ़ेसर निशानाथ ने खड़े हो कर सभापति से कुछ बोलने की आज्ञा मांगी और खड़े हो कर केवल इतना ही कहा कि आप लोगों को चिताए देता हूं कि मैं भी एक ऐसी नगरी बसाने वाला हूं जिस से आप के आदर्श नगरी शान्तिपुर का नाश हो जायगा और मुझे आशा है कि उस नमूने से दुनियां के और लोग भी फ़ायदा उठाएंगे॥

यद्यपि डाक्टर साहब सारी मनुष्य जाति को मुहब्बत की निगाह से देखते थे, पर उन्हें इस का अनुभव ज़रूर हो गया था कि दुनियां के सब मनुष्य ही निस्वार्थ परोपकारी नहीं होते, इस लिये अपने विरोधी की बातें उन्हों ने ध्यान से सुनी, और निशानाथ के रंग ढङ्ग से उन्हें निश्चय हो गया कि इस कि धमकी झूठी नहीं है'॥ थोड़े दिनों के बाद डाक्टर साहब ने रविन्द्र को एक चिट्ठी लिखी जिस में उन्हों ने सब कैफियत बयान करते हुय निशानाथ का भी पूरी हुलिया और धमकी का हाल लिख भेजा॥ और साथ ही यह भो लिख भेजा कि मैं चाहता हूं कि तुम इस आदर्श नगरी की स्थापना में सहायता करो, क्योंकि तुम्हें इनजीनियरिङ्ग का बहुत कुछ ज्ञान है, इस के अलावे हमें खूब चुस्त चालाक, फुरतीले और उत्साही युवकों की आवश्यकता भी है, जिन से केवल उक्त नगरी के बनाने ही में नहीं वरन उस की रक्षा में भी सहायता मिले, इस

के जवाब में रविन्द्रनाथ ने लिखा कि मैं प्रोफ़ेसर निशानाथ को खूब जानता हूं क्योंकि अब तक हमारे ही कालिज के प्रोफ़ेसर थे ॥ हकीकत में वह एक भयङ्कर ज़िद्दी और हिम्मती आदमी है ॥ यद्यपि मैं अभी तुरन्त ही आप की आदर्श नगरी के बनाने में सहायता नहीं दे सक्ता, पर जब समय आवेगा तो आप मुझे अपने पास पावेंगे ॥ मैं निशानाथ पर हर घड़ी निगाह रक्खूंगा । चाहे मैं आप के पास रहूं या दूर, आप की सेवा से मुंह नहीं मोड़ सक्ता यद्यपि किसी अनहोनी घटना बस आप को महीनों या वर्षों मेरा कुछ समाचार न मिले तो घबड़ाइयेगा नहीं ॥ चाहे मैं आप के पास रहूं या दूर मुझे यह ख्याल निरन्तर बना रहेगा कि आप की सेवा कर भारत का कुछ उपकार करूं ॥

पंचम परिच्छेद ।

लोहापुर ।

महारानी शैलकुमारी की सम्पति का बटवारा हुए कोई पांच वर्ष के करीब हो गए हैं, पर इस बीच में हमने दोनों वारिसों का कुछ भी समाचार नही पाया, खैर पाठक सबर कीजिए समय आने पर आप को सब मालूम हो जायगा, अभी थोड़ी देर के लिये हमारे साथ मध्य भारत के उज्जैन और इन्दौर नगर की सैर करते हुए दक्षिण की ओर बढ़ते चलिये ॥ चलते २ आप को ज़मीन पहाड़ी मिलने लगेगी और आप बीस या बाइस कोस से ज्यादः भी न चल पाएंगे कि विन्ध्याचल का सिलसिला नज़र आने लगेगा

जिस की सब्ज़ी से आंखें तर होने लगेंगी और पास ही चम्बल नदी का सोता बहता दिखाई देगा जो रतलाम होती हुई राजपुताने की ओर चली गई है॥ यद्यपि यह झरने और सब्ज़ी से शोभायमान पहाड़ी ज़मीन है, और आशा थी कि इस जगह सिवाय प्रकृति की छटा के सब ओर सन्नाटा छाया होगा और कदाचित किसी पहाड़ी पर कहीं दो एक भेड़ या बकरियों का झुण्ड चरता दिखाई देगा पर नहीं यहां तो मामला ही दूसरा है॥ अभी पहाड़ों के पास भी नहीं पहुंचे हैं कि एक ओर की पहाड़ी का सिल-सिला सब्ज़ी से खाली लोहे और कोयले के चूर से ढका हुआ काला भूत सा नज़र आने लगा॥ यहां यदि आप मन्द २ झरनों की ध्वनि गड़ेरियों की पहाड़ी गंवारी भाषा की गीत सुनने के लिए तनिक ठहर जायें, तो आप की आशा व्यर्थ होगी और उस के बदले आप के कान के पर्दे उड़ा देने वाला हज़ारों टन के स्टीम से गिरते हुए लोहे के हथौड़ों का महा शब्द सुनाई देगा और ऐसा मालूम होगा कि मानों पैर के नीचे की धरती बारूद से उड़ कर टुकड़े २ हुआ चाहती है॥ थियटर के स्टेज के नाईं यहां की सारी धरती आप तहख़ाने और गुप्त द्वारों से छिपी पाइयेगा और हज़ारों प्रकार के लोहे के पीटे जाने की आवाज़ से ऐसा मालूम होगा मानो इन के महा शब्द से टूट कर कोई चट्टान इन तहखानों में ग़ायब न हो जाय॥ जिधर निगाह दौड़ाइये चारों तरफ़ कोयले की राख और चूर से ढके हुए भयानक काले २ चट्टानों के और कुछ नज़र नहीं आता, पर हां जगह जगह पर कोयले के चूर और कीचड़ के ढेरों के ढीए नज़र आते हैं, जिन पर कहीं कहीं जङ्गली पौधे उग रहे हैं और जिन के पास इधर उधर बन्द हुए भए खानों के बड़े २ लम्बे

चोड़े गड़हे मुंह बाए बड़े २ पहाड़ी चट्टानों को हड़प्प करने को तैयार हैं, इन के उपर किनारे २ बहुत सा झाड़ झंखाड़ उग रहा है जिस से गड़हे का बहुत सा हिस्सा छिप सा गया है ॥ धूएं से भर कर हवा भारी हो गई है और बड़ी उदासी से मानों उस पहाड़ी को छाए हुए है यहां कोसों किसी पक्षी या कीड़े का नाम नहीं है और तितली इत्यादि सुन्दर फतंगे तो जन्म भर में किसी ने यहां देखा ही नहीं होगा ॥ पहाड़ी के उत्तर की धरती, जहां पहाड़ ढालुवां होता हुआ चौरस हो गया है लाल रंग की है ॥ इस मिट्टी में जले हुए लोहे के ज़र्रे मिले हुए हैं और यही कारण है कि इस का रंग कुछ फीका पन लिए हुए सुर्ख़ रंग का है इसी लिए इस का नाम 'सुर्ख़ ज़मीन था' पर अब धरती का यह हिस्सा लोहक्षेत्र (लोहे का खेत) कहलाता है ॥ यह समतल भूमि का घेरा प्रायः सत्रह या अठारह बर्ग मील है, यहां की धरती कठोर और बालू तथा पत्थर के टुकड़ों से पटी हुई है । यद्यपि कुदरत ने इस ज़मीन को महा ऊसर और कठोर बना रक्खा पर मनुष्य ने अपने कठिन उद्योग और साहस से इस की काया ही पलट दी है ॥ पांच वर्ष के भीतर ही इस उसर, और पहाड़ी चट्टानो के किनारे किनारे छोटे २ काठ के बंगले से अठारह गांव बस गए हैं ॥ यह बंगले सब बने बनाए बरेली से मंगवाए गए थे, और इस में असभ्य मजदूरों की एक बड़ी भारी बस्ती बसी हुई थी ॥ इन ग्रामों के बीचो बीच काले भूत पहाड़ी के नीचे ही लगातार लम्बी कतार में लाल खपड़े से छाई हुई बड़ी लम्बी चौड़ी इमारत है जिसका सिलसिला कई मील तक चला गया है ॥ इन इमारतों के छत पर लाल २ ईटों की बड़ी २ गोल चिमनियां बनी हुई

हैं, जिन से रात दिन धूवें के बादल के बादल निकला करते हैं॥ इस धूवें के गुब्बार में कभी २ लाल २ अग्नि की लपक भी देखिाई दे जाती है और मानों कसी पहाड़ी ज़मीन पर कोई नदी ज़ोर २ से टकरा रही हो इस प्रकार के बज्र पात सा शब्द भी दूर से गर्जता हुआ बीच २ में सुनाई दे जाता है ॥

यह प्रोफ़ेसर निशानाथ की खास जायदाद है और इस शहर का नाम लोहापुर है महारानी शैलकुमारी की जायदाद से जो पन्द्रह करोड़ रुपया निशानाथ को मिला था उसी से इन्हो ने यह लोहापुर बसाय है और थोड़े ही दिनों में इन का लोहे का कारखाना खूब प्रसिद्ध होगया, फिर जब इन्हों ने इस कारखाने में नये नये ढंग के तोप भी ढालने शुरु कर दिए तो अमीर काबुल, फारस के शाहंशाह और रूस गवर्नमिन्ट भी इन के कारखाने में तोपें ढलवाने लगी ॥ इसका प्रधान कारण यह था कि निशानाथ अपने दिमाग़ से सोंच सोंच कर नित्य ऐसे २ तोप आबिस्कार करता था कि जिन की मार यूरोप अमेरिका के आज तक के बनाए हुवे तोपों से कहीं अधिक होती थीं ॥ इस के अलावे बन्दूक की नलियां भी सब किस्म की इस कारखाने में तैयार होती थीं ॥

रुपया सब कुछ कर सक्ता है—फिर क्या था—पंद्रह करोड़ रुपया क्या कुल थोड़ी रकम है—अस्तु इसी की बदौलत यह बड़ा भारी कारखाना था यों कहिए कारखाने नुमा शहर मानो जादू की नाई तुरंत तैयार हो गया॥ तीस हज़ार मज़दूरे जिन में से अधिकांश पंजाब और मध्य प्रांत के बासी थे इस शहर में आ बसे थे और यहां के कारखानों में कामकरते थे ॥

प्रोफ़ेसर निशानाथ अपने ही खानों से लोहा और कोयला खोद कर निकालता और वहीं लोहे का इस्पात और फिर इस्पात का तोप बनाता था 'लोहे और कोयले के खान भी पास ही थे ॥ आज तक जो काम किसी ने भी नहीं किया था उसे निशानाथ ने कर दिखाया ॥ फ्रांस में अस्सी हज़ार पौण्ड के वज़न की तोप बनती है ॥ बिलायत में एक सौ टन की भी एक तोप ढाली गयी थी ॥ अस्ट्रिया के बड़े नामी कारखानेवाले मिस्टर कूप ने दस दस लाख पाउण्ड की तोप तक ढाली हैं, पर निशानाथ का नम्बर इन सभों से बढ़ा चढ़ा था-उसके काम का कोई हद्द नहीं है--उसे आप चाहे कितनोही दूर की मार वाली कितने ही भारी तोप ढालने की फ़रमाइश क्यों न दीजिए वह निश्चय उसे नियत समय के अन्दर तैयार करदेगा, पर हां दाम भी भर पूर लेता है, मानो पन्द्रह करोड़ को अब तीस किए बिना उसे चैन नहीं मिलेगा ॥ तोप ढालने में चाहे और ही किसी काम में क्यों न हो, वह आदमी जो औरों से न हो सके ऐसा काम कर दिखावे तो निस्सन्देह उस को पैसे की कमी नहीं रहेगी । निशानाथ की तोपें महा प्रचण्ड तो होती ही थीं, पर उन में एक तारीफ़ यह भी थी कि व्यवहार में वह बहुत कम घिसती थीं और फटने का तो कभी नाम भी न था ॥ थोड़े ही दिनों में लोहापुर का लोहा एक खास किस्म का समझा जाने लगा, इस की रसायनिक बनावट के बारे में बहुत सी अद्भुत २ कहानियां सुनने में आती हैं, पर चाहे जो हो अभी तक इस का भेद किसी ने नहीं पाया है। एक बात और भी पक्की है कि लोहापुर में सब भेद बड़ी सख़्ती से छिपाया जाता है । उज्जैन से लेकर इस शहर तक पन्द्रह मील के बीच में, जो २ ग्राम बसे हुए हैं वह सब

निशानाथ की ज़मींदारी में शामिल हैं, और विशाल कारखाने से सभों का कुछ न कुछ सम्बन्ध ज़रूर है। लोहापुर की चहार दीवारी के चारों ओर जो आने जाने के लिए जगह२ बड़े २ लोहे के फाटक बने हैं, वह हमेशा बन्द रहते हैं और फाटकों के दोनों तरफ़ सन्तरियों को कड़ा पहरा रहता है और बिना दस्तख़ती पास और निशानाथ की मोहर या उस दिन के लिए खास ठहराए हुए इशारे के नगर में किसी का जाना दुर्लभ है ॥

यह नवम्बर का महीना था; अभी सूर्य्य अच्छी तरह से उदय नहीं हुए थे, ऐसे समय में एक युवा मजदूरा लोहापुर की तरफ कदम बढ़ाए चला आ रहा था ॥ इस ने नज़दीक ही की सराय में अपनी गठरी वग़ैरह रख दी थी और हाथ में पास लिये हुए लोहापुर के सदर फाटक की ओर बढ़ा आ रहा था। यह जवान खूबसूरत हाथ पैर से तैयार और फुरतीला मालूम होतो था। मोटे ज़ीन का एक काला पतलून और उसी कपड़े का एक कोट तथा सिर पर एक मैला सा साफ़ा उसे मामूली मज़दूरों से कुछ अधिक मर्तबे वाला आदमी बतला रहा था और पैर में भारी सा भद्दा बूट उस के मज़दूराना स्वभाव को भी प्रगट किए देता था। फाटक पर पहुंच कर इस जवान ने एक छपा हुआ परवाना दिखाया, जिसे देखते ही द्वारपाल ने एक छोटी सी खिड़की खोल कर उसे भीतर ले लिया। भीतर जाते ही दूसरे सन्तरी ने परवाना देख कर कहा। तुम 'के' विभाग की 'नवीं सड़क पर जाकर ७४३ नम्बर के कारखाने में, मज़दूरों के सर्दार पहाड़सिंह से मिलो, तुम्हारे दाहिने जो गोलाकार रास्ता चला गया है, उसी पर चल कर तुम 'के' विभाग के हद्द पर पहुंच जाओगे और वहां जाकर अपना परवाना

द्वारपाल को दिखा देना ! तुम्हें यहां का क़ायदा मालूम है न ? यदि अपने 'विभाग' के अलावे दूसरे 'विभाग' में पैर भी रक्खोगे, तो फौरन फाटक से निकाल बाहर किए जाओगे, इस जवान ने संतरी की सब बातें ध्यान से सुन कर उस बतलाए हुए रास्ते पर कदम बढ़ाया ॥ उस के दाहिने एक खन्दक का सिलसिला चला गया था, जिस के उस पार सैंकड़ों संतरी दोनली बन्दूक लिये पहरा दे रहे थे और बाईं ओर चक्राकार चौड़ी सड़क और लम्बी इमारतों के सिलसिले के बीचो बीच रेल की डबल लाइन चली गई थी जैसा उसने शहर पनाह के चारों ओर देखा था। यह लाइन इतनी लम्बी थी कि एक ही दीवार और खाई से घिरे रहने पर भी यह एक हिस्से के चारों तरफ़ होती हुई ऐसे ढङ्ग से गई थी कि जिस्से कारखाने के सब विभाग अलग २ हो गये थे ॥ चलते २ यह जवान 'के' निशान वाली दीवार के हद्द पर पहुंचा, इस दीवार के बीचोबीच एक बड़ा ऊंचा सा द्वार बना हुआ था और लोहे के बड़े से अक्षर में द्वार के सिर प 'के' लिखा हुआ था तथा कन्धे पर बन्दूक लिये दो संतरी पहरा दे रहे थे ॥ वहां पहुंच कर जवान ने द्वारपाल को पास दिखाया। यह द्वार-पाल पहले की नाईं निरा संतरी ही न था वह एक पुराना पिनशिनर था, जिस का एक पैर लकड़ी का था और छाती पर कई तमग़े लटक रहे थे। उसने जवान के हाथ से पास लेकर उस पर अपनी मोहर कर दिया 'बायें हाथ की नवीं सड़क' यह कह कर जवान को परवाना लौटा दिया ॥ अब जवान इस दूसरी खन्दक को गिरे हुए पुल द्वारा पार कर 'के' विभाग में दाखिल हुआ ॥ फाटक के भीतर दोनों तरफ इमारतों का सिलसिला बना हुआ था

और मशीन की गड़गड़ाहट से कान के पर्दे फटे जाते थे। इमारतों के सिलसिले अपनी अनगिन्त खिड़कियां समेत धुवें से काली भूत सी नज़र आ रही थी, पर शायद यह जवान इन बातों का आनन्दी था, इस लिए इस नज़ारे पर ध्यान न देकर वह इच्छित स्थान की ओर आगे बढा। पांच मिनट तक नवीं सड़क पर चल कर ७४३ नम्बर के कारखाने में पहुंच गया और एक छोटे से दफ़्र में जो रजिस्टर और कागज़ों से पूर्ण था वह सर्दार पहाड़सिंह के सामने जा खड़ा हुआ। सर्दार ने जवान के हाथ से परवाना ले कर उस की तमाम मोहरों को अच्छी तरह जांचा और आने वाले को सिर से पैर तक घूर कर पूछा ठीक है-मालूम हुआ कि तुम फौलादगर के काम पर मुकर्रर करने के लिए बुलाए गये हो, पर हां 'तुम तो बहुत कम उम्र के मालूम होते हो॥

'उम्र से क्या सम्बन्ध है, थोड़े ही दिनों में मैं छब्बीस वर्ष का हो जाऊंगा और गत सात महीने से बराबर फौलादगरी करता चला आया हूं। यदि आप चाहें तो मैं आप को वह सार्टिफिकेट दिखा सक्ता हूं जिस की बदौलत मैं ने मिस्टर ताता के कारखाने में काम किया था, यह कहकर उसने एक चमड़े का पाकेट बुक निकाल सार्टिफिकेट सर्दार के हाथ में दिया'॥

ठीक है सर्दार ने सार्टिफिकेट लौटाते हुए कहा— 'जो कुछ हो, तुम जिस काम के लिये मुकर्रर हुए हो चलो उस की जगह तुम्हे दिखादूं' यह कह कर परवाने से नक़ल कर शोभासिंह का नाम उस ने एक रजिस्टर में लिख लिया और उसे एक नीले रंग का कार्ड (जिस पर उस का नाम और नम्बर ५१९३८ लिखा हुआ था) दे कर कहा' ठीक

सात बजे सबेरे रोज़ फाटक पर आ जाना होगा, बाहर के फाटक पर यह कार्ड दिखा देना, और भीतर आकर फिर हमें भी दिखा देना।

'मैं सब कायदे जानता हूं' जवान ने जवाब दिया 'पर क्या मैं इसी शहर में रह सक्ता हूं' उस ने पूछा--नहीं शहर के बाहर कोई रहने की जगह खोज लो, पर हां यदि भोजन करना चाहो तो यहां कारखाने के पास किफायत दाम से मिल सक्ता है तुम्हें आठ आना रोज मज़दूरी मिला करेगी, पर हां तीन २ महीने बाद मज़दूरी बढ़ाई जावेगी॥ काम में गफ़लत होने से फौरन निकाल दिये जाओगे, इस के अलावे यदि यहां का कोई भी नियम भङ्ग करोगे तो पहले मैं और फिर अपील करने पर इनजीनियर तुम्हें निकाल बाहर करेगा। क्या आज से काम शुरू करोगे? 'क्या हुआ, आज ही से सही, जवान ने जवाब दिया॥ 'पर आज आधा दिन बीत गया है, आध ही दिन की मज़दूरी मिलेगी॥ यह कहता हुआ सर्दार शोभा को एक भीतर बरामदे की राह से ले चला' जहां आगे बढ़ते ही एक हाता मिला और उसे पार कर दोनों एक बड़े लम्बे चौड़े दालान में दाखिल हुए। दालान के दोनों तरफ़ बड़े भारी भारी खम्भों के दो कतार थे, जिन का सिरा शीशे की छत के बहुत ऊपर उठा हुआ था॥ यह लोहा गलाने के भट्ठे की चिमनियां थीं जो एक कतार में पचास गिनाई देती थीं। दालान के एक मुहाने पर भट्ठे में डालने के लिए इञ्जन कोयले से पूर्ण गाड़ी खींचता हुआ ला खड़ा करता और दूसरे मुहाने पर ऐसा ही इंञ्जन खाली गाड़ियां लिए हुए फ़ौलादी लोहे को ढो ढो कर ले जाने के लिए खड़ा रहता था॥ कच्चे लोहे का फ़ौलाद इन्हीं भट्ठों में

बनता था, जहां मज़बूत बदन के अधनङ्गे मज़दूरे हाथों में लोहे के लम्बे २ पञ्जेनुमा छड़ लिये जी जान से कठोर परिश्रम कर रहे थे ॥

जब यह भट्टे खूब दहकने लगते, तो लोहे के बड़े २ ढेले उन में डाल दिये जाते थे ॥ जब लोहा गल जाता तो बहुत देर तक एक डण्डे से घोंटा जाता था, जब यह अच्छी तरह से एक दिल हो जाता तब फौलादगर बड़े २ पञ्जेनुमा डण्डों से गले हुए लोहे को उठा कर सांचे में डाल कर उन पर डण्डा फिराते थे, यह सांचे गोल गेंद के आकार के थे, जिन में डालने से लोहे की भी वैसी ही शकल हो जाती, फिर पञ्जे से उठा कर दूसरी काररवाई के लिए दूसरे मज़दूरे को दे देते थे ॥ यह काररवाई दालान के सामने स्टीम से चलने वाला एक २ बड़े भारी हथौड़े से होती थी ॥

मज़दूरे सब पैर में लोहे का जूता और कोहनी तक लोहे का बख़्तर और सिर से गर्दन तक मोटी लोहे की चद्दर का नकाब तथा चमड़े का एक मोटा चद्दरा ओढ़े हुए लम्बे २ सींखचों से लाल लाल गरम लोहे के गोले को उठा कर हथौड़े के नीचे रखते जाते थे, और साथ ही बड़े ज़ोर से उस पर हथौड़ा गिरता था, जिस्से गोला पिचकता जाता था और चारों तरफ़ चिनगारियों की झड़ी सी लग जाती थी । जब पीटते २ यह गोला ठण्डा हो जाता तो फिर भट्ठे में डाला जाता और गर्म कर फिर पीटा जाता था ॥

चारों तरफ़ भट्ठों में बड़े २ लाल २ अङ्गारों का दहकना, लाल २ अग्निवत लोहे के गोलों का ठनाठन पीटा जाना और लाल २ चिनगारियों की वृष्टि, एक भयानक नज़ारा था ॥ यहां ऐसे वैसे आदमी का काम न था ॥

मज़बूत से मज़बूत आदमी भी ऐसी कड़ी आंच के

सामने इतनी सख़्त मेहनत कर दस बारह वर्ष से ज्यादे नहीं जी सक्ता पर हमारे जवान ने कारखाने में जाते ही अपने कपड़े उतार कर कारखाने के बख़्तर वग़ैरह पहिन लिये और एक लम्बा सा सींकचा ले तुरंत काम में हाथ लगा दिया॥ सर्दार इस जवान की मुस्तैदी से संतुष्ट होता हुआ अपनी जगह पर लौट गया॥ यह नया मज़दूरा तीसरे पहर तक काम करता रहा पर अब आगे काम करने की उसमें हिम्मत न रही क्योंकि कड़ी मेहनत से वह थक गया और ज़ोर २ से हांफने लगा॥ उसकी यह दशा देखकर मज़दूरों के हेड ने कहा, तुमसे फौलादगीरी का काम नहीं होसकेगा बेहतर है कि तुम अभी से दूसरे बिभाग में अपनी बदली कर वालो क्योंकि फिर पीछे यह नहीं हो सकेगा पर जवान ने कहा 'कुछ नहीं' मैं अभी थकावट दूर किये देता हूं फौलादगीरी के काम में मैं किसी से कम नहीं हूं, पर हेड ने इसका कुछ ध्यान न कर चीफ़इन्जीनियर को इसकी रिपोर्ट कर दी और 'शोभा' फौरनही उनके सामने हाज़िर किया गया॥ चीफइन्जीनियर ने उस सब कागजात को अच्छी तरह से जांचाकर सिर हिलाया और पूछा" तुम क्या ताता के कारखाने में फ़ौलादगर थे इन्जीनियर के इस सवाल से जवान के चेहरे पर घबराहट छागई पर जी सम्हाल कर उसने जबाब दिया जनाब माफ़ कीजिये मैं अपना कसूर मंजूर करता हूं मैं ढालने के काम में था पर मज़दूरी की लालच से मैने फौलादगरी के काम में हाथ लगाने की कोशिश की है॥

'मज़दूरी दोनों की एक ही है" इञ्जीनियर ने जवाब दिया अभी तुम पूरे पचीस के भी नहीं हुए हो और ऐसे काम में हाथ डाला चाहते हो जो पैंतीस वर्ष वालों से भी मुशकिल

से होता है ॥ ख़ैर क्या तुम ढलाई का काम अच्छा कर सक्ते हो ॥ 'मैं दो महिने तक फ़र्स्ट क्लास में रह चुका हूं, जवान ने जबाब दिया ॥ 'वहीं रहते तो अच्छा था, इन्जीनियर ने कहा यहां तो थर्ड क्लास से शुरू करना पड़ेगा ॥ तुम नसीब वर हो नही तो इतनी जल्दी एक बिभाग से दूसरे बिभाग में जाना कठिन होता है ॥

उस इञ्जीनियर ने एक पास पर कुछ लिखकर तार में कुछ खबर भेजी और उस जवान से कहा कि 'अपने नम्बर वाला टिकट दे दो और यह बिभाग छोड़ कर सीधे 'ओ' बिभाग के चीफ इन्जीनियर के दफ़्र की ओर चले जाओ उसे खबर कर दिया गया है ॥

इस दूसरे बिभाग में जाने पर भी इस युवक को उन तमाम नियमों की पाबंदी करनी पड़ी जो पहले 'के' बिभाग में आते समय करनी पड़ी थी ॥ सबेरे के नाई यहां के भी सर्दार ने उस से ज़रूरी सवाल पूछ कर ढालने के कारखाने में भेज दिया जहां का काम पहले की अपेक्षा सहज था और काम सब बड़े नियम पूर्बक होता था ॥

'यह बयालिस पौन्ड वाले तोपों के ढ़ालने वाला एक छोटा सा कारखाना था 'सरदार ने कहा" बड़े २ तोपों के ढ़ालने का काम फ़क्त फ़र्स्ट क्लास कारीगरों के ज़िम्मे है ॥ यह छोटा कारखाना भी चार सौ फीट लम्बा और दो सौ फीट चौड़ा था ॥ शोभासिंह ने जब इधर उधर निगाह दौड़ाई तो उसने आस पास के भट्ठों में चार, आठ, और ऐक साथ बारह २ घड़ियों को तपते देखा ॥

गले हुये फौलाद के ढ़ालने का सांचा दालान के बीचों बीच एक लम्बे गड़हे में बना हुआ था इस गड़हे के दोनों तरफ़ एक चलुआं क्रेन (भारी बोझ उठाने की कल) रक्खा

हुआ था जो एक रेल की लाइन पर चलता फिरता हरदम भारी से भारी बोझों के उठाने के काम में आता था॥ फौलाद बनने वाले कारखाने की नाईं इस दालान के भी दोनों मुहानों पर रेल की सड़क बनी हुई थी, जिन में से एक तरफ़ से लोहे के छड़ लाये जाते और दूसरी ओर से सांचे से निकलने पर तोपें रवाना होती थीं॥

हर एक सांचे के पास हाथ में लोहे का एक एक डण्डा लिये एक आदमी खड़ा रहता है, जो कढ़ाइयों में गलते हुए फौलाद की बराबर जांच किया करता है।

शोभासिंह ने तोप ढालने का तरीका जो दूसरी जगह सीखा था, वह यहां बड़ी खूबी के साथ काम में लाया था॥

जब किसी तोप के ढालने का समय आता तो एक घण्टे के आवाज़ से कढ़ाइयों के तमाम जांचने वालों को होशियार कर दिया जाता था। तब समान ऊंचान के दो दो मज़दूरें कन्धे पर लम्बी लोहे की छड़ रक्खे हुए, धीरे २ हर एक भट्ठे के सामने आ खड़े होते थे। एक अफ़सर एक हाथ में सीटी और दूसरे में घड़ी लिये हुआ सांचे के पास इस अन्दाज़ से खड़ा हो जाता था कि तमाम भट्ठों पर उस की निगाह पहुंचती रहे। हर एक तरफ़ एक भिट्टी पर लोहा मढ़ा हुआ एक लम्बा सा ढालवां नाला बना है जो सांचे के ठीक ऊपर है॥ अफ़सर के सीटी बजाते ही बड़े से चिमटे से फ़ौरन ही भट्ठे से कढ़ाइयां उठा कर उस डण्डे में लटका दी जाती थी जिसे दो मज़दूरे कन्धे पर उठाये हुये थे। सीटी लगातार सुर से बजने लगी और दोनों मज़दूरे उसी के ताल से कदम रखते हुए धीरे २ सांचे की तरफ़ बढ़े और गले हुए इस्पात को उसी नाले में डाल दिया जिस से

बह कर वह फ़ौरन सांचे में जा गिरा। फिर उन्हों ने गरमा गरम कढ़ाइयों को एक चौबच्चे में फेंक दिया।

इस प्रकार से दूसरे भट्ठे से भी मज़दूरों के झुण्ड के झुण्ड इस ढलाई के काम में लगे रहे और काम हर दम जारी रहा। सब काम ऐसी फुरती और नियम पूर्वक होता था कि ठीक नियत समय तक आखीर कढ़ाई एक साथ खाली करके चौबच्चे में फेंक दी जाती थी, यहां के काम को देख कर मन में यही बात आती थी कि मानों सैंकड़ो आदमियों के बदले जड़ पिण्ड रूपी हथकलें काम कर रही हैं॥ शीघ्र ही शोभा भी इस काम में लग गया और अपने बराबर कद वाले एक आदमी के साथ उसने भी बड़ी खूबी के साथ सब काम कर दिखाया, जिसे देख कर सर्दार पूरा सन्तुष्ट हुआ और उसे शीघ्र ही तरक्की की उम्मेद दिलाई॥

शाम को काम ख़तम होने पर शोभासिंह बाहर सराय में जाकर अपनी गठरी वग़ैरः ले आया, और फिर एक बाहरी सड़क पर चल कर उसे इमारतों का एक सिलसिला नज़र पड़ा जिसे सवेरे जाते समय वह देखता गया था॥ वहां पहुंच कर एक दयावान बुढ़िया से उस ने एक कोठरी किराये पर ले ली जो उसी मकान के पिछले हिस्से में रहती थी, इस कारखाने के मज़दूर रात्री के भोजन से निश्चिन्त हो कर शराब खाने में इकट्ठे हो कर चुक्कड़ चढ़ा २ कर गप्पें मारा करते थे, पर हमारे नौजवान ने भोजन से निश्चिन्त हो अपनी कोठरी का द्वार बन्द कर लिया और जेब से फौलाद और (मिट्टी की) कढ़ाइयों की मिट्टी का टुकड़ा निकाल (जो वह आंख बचा कर कारखाने से उठा लाया था) हाथ में ले लैम्प के सामने जाचने लगा। कुछ देर तक इन चीजों को उलट पलट कर देखने के बाद, गठरी से उसने एक

पाकेटबुक् निकाली (जो टिप्पणियों से आधी भरी हुई थी) और सङ्केत के हर्फ़ों में जो उस के सिवाय दूसरा नहीं पढ़ सक्ता था उसने नीचे लिखी इबारत लिखी ॥

ता० १० नवम्बर--लोहापुर--इस कारखाने में फौलाद जिस तरीके से बनाया जाता है उस में कोई विशेशता नहीं है, पर हां पहली बार आंच कुछ कम कड़ी दी जाती है और फिर दूसरी बार के गलाने में चारनफ़ साहब के बतलाये हुये नियम काम में लाये जाते हैं। ढलाई का काम क्रुप साहब के ईजाद किये हुये तरीके पर होता है, पर हां ढालने वालों का सीटी के सुर के ताल से कदम मिला कर चलना और ढालने इत्यादि का सब काम करना एक ख़ास असर रखता है ॥ मैं जहां तक समझता हूं, इन कामों में कोई विशेशता नहीं है पर हां फौलाद का जो नमूना मैं ने संग्रह किया है, सब से अव्वल लोहे का बना मालूम होता है ॥ कोयला जो फौलाद बनाने के काम में लाया जाता है निहायत ही अच्छा है, पर इस में कुछ विशेशता नहीं है।

'इस कारखाने में इस बात का बड़ा ख्याल रक्खा जाता है कि किसी चीज़ के संग दूसरी चीज़ का कुछ भी ज़र्रा मिला न रहने पावे और हर एक चीजों को अच्छी तरह से साफ करके तब काम में लाया जाता है । उस का नतीजा प्रगट ही है ॥ बाकी बात यह रही कि कढ़ाइयां जिस मिट्टी की बनी हैं उसे अच्छी तरह जांचा जाय, पर मुझे अभी तक इस का थाह नहीं मिला है । यदि इस का भी पूरा २ भेद मिल जाय और कारीगरों को अमेरिकन तरीके पर कवायद इत्यादि से दुरुस्त कर काम में लगाया जाय तो मुझे निश्चय है कि हर कोई इस कारखाने की बराबरी कर सक्ता है ॥ पर शायद ऐसा न हो, क्योंकि

चौबीस विभागों में से मैं ने तो अभी केवल दो विभाग देखे हैं, इस के अलावे कारखाने का मध्य भाग सांचे और नक़शे बनने का विभाग, तथा गुप्त सलाह करने कराने का कमरा अलग रहा ! न जाने इन तहखानों में क्या २ भयानक तद्बीरें सोंची जाती होंगी ? क्या ताज्जुब है कि निशानाथ ने जायदाद का बंटवारा होते समय हमारे दोस्तों को जो धमकी दी थी, उन्हें काम में लाने की तद्बीरें सोंचता हो। वास्तव में उन के लिये खतरे का मुकाम है । इस के बाद शोभासिंह कपड़े उतार कर तख्ते पर जा लेटा और एक बड़ी पुरानी फटी सी किताब पढ़ने लगा, पर जब उसमें ध्यान न लगा तो किताब रख कर अपने विचार में मग्न हो गया—

अरे यह मुझ से बच कर कहां जाने पाता है वह आप ही आप बोल उठा यद्यपि यह शैतान यथा शक्ति मुझ से अपना भेद छिपाएगा पर किसी न किसी तरह इस का पता तो जरूर ही लगाऊंगा कि शान्तिपुर के नाश करने के लिये, उस ने कौन २ सी तद्बीरें सोंची हैं ॥

शोभासिंह डाक्टर हरिनाथ का नाम बड़ बड़ाता हुआ नींद में मग्न हो ने लगा, पर नींद में उस के मुंह से डाकृर के नाम के बदले सरोजनी--प्यारी सरोजनी का नाम आप ही आप ज़बान पर आने लगा ॥ उसने लड़कपन में जब से सरोजनी को देखा था तब से उसे क्षिण भर के लिये भी नहीं बिसारता था । यद्यपि उसे देखे कई वर्ष हो गये थे और अब सरोजनी बालिका से युवती हो आई थी, पर हमारे जवान का ध्यान हरदम उस की ओर लगा रहता था। यह कोई ताज्जुब की बात न थी कि डाकृर साहब को याद आते ही उसे सरोजनी की भी सुध आ जाय, क्योंकि ऐसा

अक्सर होता है कि विचार के सिलसिले में जिसे दिल चाहता है उस की सुध जल्दी आ जाती है इस लिये जब सबेरे शोभासिंह को-'रविन्द्रनाथ' क्यों न कहिये-आंख खुली तो उस के जी में सरोजनी की मूर्ति समाई हुई थी। उसे इस बात से कुछ आश्चर्य्य न हुआ और इस में उस ने जान स्टूअर्ट मिल के शारीरिक विज्ञान की उम्दगी का एक नया प्रमाण पाया ॥

छठां परिच्छेद ।

पुरानी सुरङ्ग ।

जिस कोठरी में रविन्द्र ने डेरा डाला था उस की मालकिनी पारवती नाम की एक बिधवा बुढ़िया थी ॥ चार वर्ष पहले इस का स्वामी इसी कारखाने के खान में काम करते समय जान से हाथ धो बैठा था, अत एव निशानाथ की तरफ़ से उसे पांच रुपया महीना पेनशन मिलता था। इस के अलावे उस के एकलौता लड़का रामा इसी कारखाने में मज़दूरी कर चार आने रोज पैदा कर लाता था और घर की एक कोठरी किराये पर चला कर बुढ़िया विचारी कुछ वचत भी कर लेती थी। रामा की उम्र तेरह वर्ष से ज्यादा न थी और वह कोयले की ख़ान में चोरद्वारी के खोलने बन्द करने के काम पर नियत था।

उस की मां ने वह मकान जिस का ऊपर जिक्र किया गया है किराये पर ले रक्खा था पर वह खान से बहुत दूर पड़ता था, इस लिये रामा हर रोज़ घर नहीं आता था, रात के लिये उस ने खान के भीतर ही एक काम खोल

रक्खा था। इस में उसे मामूली मेहनत करनी पड़ती थी। खान के नीचे छः घोड़े रहते थे जिन पर एक टहलुआ तैनात था जो रात को खान के बाहर चला जाता था, इस लिये उस के बदले रात को रामा यह काम करता था। इस लिये रामा विचारे को पृथ्वी के पन्द्रह सौ फीट नीचे रहना पड़ता था। दिन भर तो वह द्वार की रखवाली करता और रात को घोड़ों के पास सूखी घास पर सो रहता था! फ़क्त हफ़्ते में एक दिन रविवार को उसे सूर्य्य के दर्शन होते थे और बुढ़िया मां के लाड़चाव का आनन्द प्राप्त होता था।

हफ़्ते भर बाद जब रविवार को वह घर आता तो उस की शकल विचित्र ही रहती थी। कपड़े सब कोयले में सने हुए और चेहरा काला हबशी सा नज़र आता था। इस की मां पहले नांद भर के गरम पानी और डेढ़ पाव साबुन तैयार रखती थी और घर आते ही घण्टों तक रगड़ २ कर उसे मल धोकर साफ़ करती, फिर उस के बाप के पुराने कोट से काट कर बनाया हुआ एक सब्ज़ रंग के सर्ज का सूट पहिना कर, बेटे की खूबसूरत और भोलेपन पर बलायें लेने लगती थी। यह सूट हफ़्ते भर तक काठ की बड़ी अलमारी में बन्द रहता था, फक्त एक रोज के लिये रामा के बदन पर चढ़ता था। साबुन से रगड़े जाने के बाद नहाने धोने पर रामा का सुन्दर चेहरा दमकने लगता था। देखने में यह दुबला पतला छोटा सा दस वर्ष का लड़का मालूम होता था, पर इस के रेशमी मुलायम बाल और काली २ बड़ी २ तेज़ आंखों में एक प्रकार की मोहनी शक्ति जरूर थी। सदा अन्धेरे में रहने के कारण इस का रंग बिलकुल सफ़ेद हो गया था, खून की सुर्खी का कहीं निशान भी नज़र नहीं आता था। इस का स्वभाव बड़ा शान्त और सरल था पर हां हमेशा जान के

खतरे के मुकाम पर काम करते २ उस में एक हिम्मत सी आ गई थी जिस का उसे थोड़ा बहुत घमण्ड भी था ॥

यह तो पहले ही लिखा जा चुका है कि हफ़्ते में इसे एक दिन छुट्टी मिलती थी, इस लिये खेल तमाशे का मोका उसे कम मिलता था, पर लड़के चाहे जहां कहीं रहें देश काल के अनुसार खेल का कुछ न कुछ सामान इकट्टा कर ही लेते हैं अत एव रामा भी खान के नीचे रंग बिरंगे तरह२ के भयानक कीड़ों को छांट २ कर एक छोटे से काठ के डिब्बे में बन्द करता जाता और घर आने पर मां के पास टेबुल पर बैठ कर उन कीड़ों की डिब्बे से निकाल २ कर उन की चाल ढाल तजबीजा करता था ॥

जब खान के इञ्जीनियर महाबीरसिंह ने उसकी इस तरफ़ रुचि देखी तो इसने उसे हर एक नए क़िस्म के कीड़े के लिये कुछ इनाम देने का वादा कर इस काम में उस की और भी हिम्मत बढ़ाई क्योंकि उसे क़ीड़ों मकोड़ों की बिद्या में बड़ा प्रेम था, अत एव नये २ कीड़ो की तलाश में रामा खान के हर एक कोने अन्तरे में घूमा करता ॥ रामा रात को जिन घोड़े घोड़ीं की रखवाली करता था वह खान के भीतर कोयले से भरी गाड़ी वग़ैरह खींचने के काम में आते थे और छः बर्ष से धर्ती मे डेढ़ हजार फीट नीचे रहते २ उनकी आंखें अन्धी हो गईं थीं, पर इशारे पर वे अपना काम सब ठीक २ करते थे ॥ मां के पास बैठकर रामा बूढ़े घोड़े रेलोंकी बात, खान के अन्धेरे और बनावट का ज़िक्र तथा दो चिमगीदड़ और एक चूहे की दोस्ती का हाल इसी प्रकार के लड़कपन की बातें किया करता था" उसकी मां बहुत चाहती थी कि एक बार वह जगह जहां उसका रामा काम करता है और जहां चार बर्ष पहले खान उड़ने पर कोयले

ऐसा मलना हुआ उसके स्वामी का मुर्दा पाया गया था जाके देख आवे पर खान के अन्दर औरतों के जाने की मनाही थी इस लिये लड़के के ही मुंह से वह वहां का ज्यों का त्यों बर्णन सुन कर जी भर लिया करती थीं ॥

घर में झोपड़ी में चुप चाप बैठी हुई रामा की बुढ़िया मां मन के नेत्रों से दो हज़ार फीट गहरे खान का दृश्य देखा करती थी ॥ बड़े २ गोल ताख़ों पर बैठे हुये मजदूरों और कारीगरों का जंजीर के द्वारा खान के भीतर लटकाया जाना और काम खतम होने पर बिना रामा के (क्योंकि वह रात को घोड़ों की रखवाली के लिये नीचेही रहजाता था) सब लोगों का उपर आजाना, खान के नीचे काले २ ठोस क़ोयले या पत्थर के खम्भों के सहारे खड़े हुये अगल बगल सैकड़ों दरों में किसी का खान खोदना किसी का कोयलों के ढेरों को उठा २ कर गाड़ी में भरना-बढ़इयों का लकड़ी के छील छाल का काम करना लोहारों का रेलकी पटरियां बिछाना, और मेमारों का छत जोड़ना रात होतेही रामा का घोड़ों को दाना देना, चमगीदड़ों का थप थपाना और चूहे से खेलना और फिर सूखी घास पर सो जाना, यह सब घर बैठे २ बुढ़िया पार्बती के आंखों के सामने घूमता जाता था ॥ रामा की मां अपने पुत्र से उसकी दैनिक कहानी सुनना बड़ा पसंद करती थी और चुप चाप अपने बच्चे के सिर पर हाथ फेरती हुई बड़े प्रेम से उसकी बातें सुना करती थी ॥

'मां, मां कल महाबीरसिंह ने जो बात कही है तुमने शायद कभी सोंचा भी नहोगा वह कहते थे कि दो एक रोज में तुझसे दो एक हिसाब के स्वाल पूछे जांयगे, अगर तैने उनका ठीक २ जबाब दिया तो जब मैं कम्पास लेकर खान

देखने जाऊंगा, तुम्हारे ज़िम्मे नापने की ज़ञ्जीर थामने का काम सुपुर्द किया जायगा ॥

मालूम पड़ता है कि शायद 'करा वेवर' नाम के खान को मिलाने के लिये कोई नई गैलरी खोदी जायगी, पर इसका ठीक मौका तजबीज़ करने में कुछ कठिनता पड़ेगी ॥

क्या इञ्जीनियर साहब ने ऐसी बात कही है बुढ़िया ने खुशी खुशी कहा और फौरन ही उसकी निगाह के सामने खान के भीतर रामा के जंजीर थामने का दृश्य दौड़ गया॥

'पर क्या कहें मां हमें हिसाब अच्छी तरह नहीं आता' रामा ने रोनी सूरत बनाकर कहा और शायद ऐसा हो कि मुझे हिसाब ठीक न आया तो क्या होगा, इसी बीच में रबिन्द्र जो अब तक एक कोने में बैठा चुरुट पी रहा था बोल उठा तुम्हें हिसाब का कौन सी जगह मुश्किल मालूम पड़ता है ? मुझे बतलाओ तो शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं--

'हैं तुम' बुढ़िया ने कुछ विस्मित हो के पूछा--'बेशक' रविन्द्र ने जवाब दिया, क्या तुम समझती हो कि इतने दिनों तक नाइट स्कूल (रात के स्कूल) में जाकर भी मैं ने कुछ सीखा नहीं? मास्टर साहब मुझ से बड़े खुश हैं उन्हों ने मुझे मनेजर बना देने का वादा किया है । इस के बाद रविन्द्र ने अपनी गठरी से एक सादी कापी निकाली और रामा को पास बैठा कर उसे हिसाब अच्छी तरह समझा दिया ॥

इस दिन से पार्वती रविन्द्र की ज्यादे खातिरदारी करने लगी । कारखाने में रविन्द्र बड़ी मुस्तैदी के साथ काम करता था और शीघ्र ही दर्जे बदर्जे तरक्की करते २ वह अव्वल दर्जे में दाख़िल हुआ । हर रोज़ सबेरे ठीक सात बजे वह 'ओ' विभाग के फाटक पर आ खड़ा होता और

हर रोज़ शाम को मिस्टर 'रे' इञ्जीनियर साहब के पास काम सीखने जाया करता था॥

रेखा गणित, बीज गणित, और कल पुर्जों के नकशे खींचने वग़ैरः का काम उसने ऐसी तेजी से सीख लिया कि इञ्जीनियर साहब ताज्जुब करते थे॥ कारखाने में आने के दो महीने बाद ही फ़क़त 'ए' विभाग ही में नहीं वरं लोहापुर भर में वह अव्वल दर्जे का होशियार और लायक़ कारीगर समझा जाने लगा। महीने के अन्त में उस के बिभाग के इञ्जिनियर ने उस के बारे में हेडक्वार्टर को यह रिपोर्ट भेजी॥

शोभासिंह नाम का एक कारीगर जिस की उम्र छब्बीस वर्ष की है, अव्वल दर्जे में ढलाई का काम करता है। मैं इस आदमी की ओर डाइरेक्टरों का विशेष ध्यान दिलाया चाहता हूं, क्योंकि यह नये २ तरीकों के जानने, उन्हें काम में लाने और नई २ तरह की कारीगरी और कल पुर्ज़े के ईज़ाद करने में अपनी बराबरी नहीं रखता, और इस में इस की औकात से कहीं ज्यादः इस को लियाक़त है। पर इस रिपोर्ट के अलावा शायद और कुछ भी डाइरेक्टरों का ध्यान इस की ओर दिलाने के लिये आवश्यक था। वह मौक़ा भी तुरन्त आ गया पर दुर्भाग्यवश यह मौक़ा बड़े ही शोक दायक घटना का नतीजा था। बात यह हुई कि एक दिन रविबार को सवेरे दस बज जाने पर भी जब रविन्द्र को अपने बालक मित्र रामा की सूरत नज़र न आई, तो उसने नीचे उतर कर बुढ़िया से इस का सबब पूछा। बुढ़िया बिचारी खुद बड़ी फिक्र में हो रही थी, क्योंकि रामा हर बार आठ ही बजे तक घर आ जाया करता था अत एव पार्वती को ढाड़स दे कर रविन्द्र उस के खोज में निकला। राह में उस ने लौटते

हुये कई एक खान खोदने वालों से रामा के बारे में पूछा, पर कुछ पता न लगा। ग्यारह बजे के लगभग वह उस गहरे खन्दक के पास जा पहुंचा॥ हमेशा की तरह आज भी यहां कुछ गोल माल न था सिर्फ़ एक युवा दर्ज़ी खड़ा हुआ खान के द्वारपाल से कुछ बातें कर रहा था।

'क्यों भाई क्या तुमने नं० ४१९०२ के रामा नाम के लड़के को आज सवेरे खान से उपर आते देखा है" रविन्द्र ने उस द्वारपाल से पूछा-द्वारपाल ने फिहरिस्त पर एक निगाह डाल कर सिर हिलाया। 'क्या खान से बाहर आने का और भी कोई रास्ता है' रविन्द्र ने पूछा-

"नहीं" द्वारपाल बोला-उत्तर तरफ़ वाला सुरंग अभी ख़तम नहीं हुआ है। तब क्या रामा अभी नीचे ही है रविन्द्र बोला "ज़रूर होगा" द्वारपाल ने कहा, पर ऐसा तो न होना चाहिये क्योंकि रविवार को सिर्फ़ पांच मज़दूरे नीचे रह जाते हैं 'मैं क्या नीचे नहीं जा सक्ता' रविन्द्र ने पूछा, नहीं बिना हुक्म के नहीं द्वारपाल ने जवाब दिया-शायद कोई घटना हुई हो दर्ज़ी बोला, रविवार को ऐसा होना भी सम्भव नहीं क्योंकि सब काम बन्द रहता है, "चाहे जो हो", रविन्द्र बोला इस का पता तो अवश्य लगाऊंगा कि लड़का कहां गया॥

'यदि ओवरसियर साहब चले न गये हों तो उन से इस बारे में जाकर तुम मालूम कर सक्ते हो द्वारपाल ने कहा। अत एव तुरन्त ही रविन्द्र उन के पास पहुंच गया, सौभाग्य वश वह अब तक घर नहीं गये थे, अपने हिसाब किताब में लगे हुए थे। यह एक बुद्धिवान दयालू पुरुष थे अत एव रविन्द्र से सब हाल सुन कर बोले कि 'चलो हम लोग अभी चल कर देखें कि वह क्या कर रहा है"

और द्वारपाल को नीचे लटकाने की डोरी का पेंच खोल देने का हुक्म दे कर वह नीचे जाने के लिये तय्यार हो गये। 'क्या आप के पास "गिलवर्ट अपरेटस" नहीं है रविन्द्र ने पूछा शायद उस की ज़रूरत पड़े॥

'ठीक कहते हो' न जाने खान के नीचे क्या घटना हुई हो' यह कह कर ओवरसियर ने एक अलमारी से जिस्ते के बने हुए दो बक्स निकले। इन बक्सों में घनी वायू भरी हुई थी और दोनों तरफ से दो रबड़ की नालियां निकली हुई थीं जिन दोनों को मिला कर सींघ का एक मुखड़ा बना हुआ था जो दांतों के बीच दबा कर मुंह में रक्खा जाता था और उसी नल का दो हिस्सा उपर काठ की चिमटी से सटा हुआ था॥ इसी चिमटी को नाक में लगा कर और मुखड़े को दांत में दबा कर तथा बक्स को गर्दन के पीछे पीठ पर रख कर कोई आदमी गन्दी हवा में बेफ़ीक्री से जा सक्ता है॥ यह सब तय्यारी कर ओवरसियर और रविन्द्र तख़्ते पर बैठ गये और डोरी खुलने लगी और वे नीचे जाने लगे। साथ में बिजली की रोशनी के दो लम्प भी यह लोग लेते गये थे, जिस की रोशनी में धीरे २ बात चीत करते हुये दोनों पातालपुरी में उतरने लगे। तुम हिम्मती मालूम पड़ते हो ओवरसियर बोला क्योंकि मैं अक्सर देखता हूं कि नीचे उतरते समय लोग डर कर तख़्ते से चिपक कर एक कोने में दबक जाते हैं॥

"मैं इस की कुछ प्रवाह नहीं करता" रविन्द्र ने कहा मैं पहले भी दो तीन बार कोयले की खान में उतर चुका हूं, पर कभी भी इस का कुछ ख्याल न आया॥ थोड़े ही देर में यह लोग सुरंग के नीचे जा पहुंचे और वहां के पहरे दार से भी रामा का कुछ पता नहीं लगा॥ पहले यह लोग

अस्तबल में गये, पर वहां घोड़ों के सिवाय और किसी की सूरत नज़र न आई और वे भी अकेले उकताये हुये मालूम पड़ते थे। एक खूंटी पर रामा का झोला लटक रहा था और एक कोने में खरहरे के पास उस की अर्थमेटिक (पाटी, हिसाब की किताब) पड़ी हुई थी परउस की लालटेन का कहीं पता न था जिस से रविन्द्र ने यह नतीजा निकाला कि लड़का अभी नीचे खान ही में होगा।

शायद कहीं की ज़मीन धस गई हो और लड़का दब गया हो 'ओवरसियर ने कहा' पर शायद ही ऐसा हो, भला रविवार के दिन गैलरियों में उस का क्या काम है। अच्छा! शायद वह ऊपर जाने के पहले, वहां कीड़े मकोड़ों की तलाश में गया हो, उसे इस का एक नशा सा है' खान के चौकीदार ने कहा॥

थोड़ी देर बाद साइस भी आपहुंचा और उसने भी यह कहा कि मैने सात बजे उसे लालटेन लिये हुये जाते देखा है; इसी अनुमान की पुष्टी की॥ अब चारों तरफ़ खोज शुरू होगई और ओबरसीयर ने और भी कई चौकीदारों को बुलाकर सुरंग ओर खान की गैलरियों के हर एक कोने अन्तरे में खोजने भेजा॥ दो घंटे के बाद जब सातों चौकीदार इकट्ठे हुये तो मालूम हुआ कि कहीं भी सुरंग धसने का कोई भी निशान न मिला और न लड़के ही का कुछ पता लगा 'ओवरसियर साहब के पेट में भूख के मारे चूहे दौड़ रहे थे इस लिये उकता कर उन्होंने कहा 'चलो उपर चलें, लड़का शायद बिना किसी के देखे निकल गया होगा और शायद इस वक्त घर पर होगा पर रबिन्द्र ने नहीं माना और फिर से एक बार खोज करने के लिये ज़िद्द करने लगा॥ रबिन्द्र ने ओबरसीयर के हाथ का नाकशा लेकर अच्छी

तरह जाचां ओर एक जगह जहां कई बिन्दु पड़े हुये थे दिखा कर कहा 'यह क्या है'? यह एक सुरंग का घेरा है जो सतह के पतले हो जाने के कारण कुछ दिन के लिये छोड़ दी गई है ओवरसीयर ने जवाब दिया ॥

क्या यह बिल कुल बन्द है? अच्छा चलो वहां चलकर खोज करें रबिन्द्र ने कहा, और सब लोगों ने भी उसकी हां में हां मिलाई ॥ सब लोग अभी थोड़े ही दूर आगे बढ़े थे कि रबिन्द्रनाथ सहसा रुक गया ओर बोला क्या तुम लोगों के सिर में दर्द नहीं होता और अरे! यह क्या! सिर में चक्कर क्यों आरहा है!

हां २ ठीक तो है हमारी भी यही दशा है और लोग भी चिल्ला उठे ॥ ठीक है मेरा सिर भी चकराया जा रहा है रबिन्द्र ने कहा ॥ हो न हो कहीं पास ही यहां कारबोनिक *गैस ज़रूर है ॥

आप कहिये तो दिया सलाई जलाकर देखूं रबिन्द्र ने ओवरसीयर से पूछा ॥

'हां २ जलाओ' ओवरसीयर ने कहा। अत एव रबिन्द्र ने जेब से दिया सलाई की डिबिया निकाल कर घिसा और जलने पर झुक कर उसे जमीन के पास लिये रहा जिस से तुरंत ही वह †बुझ गई ॥ ओवरसियर ने कहा तुम सब लोग यहां से चले जाओ अर्थात जिनके पास गिलवर्ट अपरेटस न हो ॥

---

*यह एक तरह की जहरीली हवा है, जिस से हम लोग हर दम सांस के बाहर निकालते हैं, यह हवा जब भीतर रुक जाती है तो दम घुटकर मृत्यु हो जाती है ॥

†रोशनी बिना अक्सीजन (प्राण पद वायू के नहीं जलती और कारबोनिक गेस से बुझ जाती है) ॥

अगर आपकी मर्ज़ी हो तो हम दोनों अकेले रामा की तलाश करें रविन्द्र ने ओवरसीयर से कहा'

'क्योंकि हवा से ज्यादा भारी होने के कारण यह गैस ज़मीन से सटी हुई है यही तय हो जाने पर दोनों ने उस बक्स का मुखड़ा दांतों में दबा लिया और चिमटी को नाक पर चिपका कर बड़े हिम्मत से एक पुराने सुरंग के सिलसिले में जाने लगे॥

पन्द्रह मिनट बाद बाहर आकर उन्होंने फिर बक्स में ताज़ी हवा भरी और फिर आगे बढ़े॥ तीसरी बार उनकी मेहनत सुफल हुई॥ बिजली के लेम्प की धीमी २ नीली रोशनी दूरसे अन्धेरे में टिम टिमाती नजर आई॥ दोनों उसी तरफ़ लपके॥ वहां जाकर क्या देखते हैं कि एक नम दिवाल के नीचे बिचारा रामा चुप चाप पड़ा हुआ है॥ उसकी धंसी हुई आंखे और होठ का नीला रंग बिचरे के दशा की गवाही देरहा है॥ उसकी अवस्था से साफ जाहिर हो रहा था कि कुछ चीज़ उठाने के लिये वह जमीन पर झुका था और कारबोनिक एसिड गैस ने एक दम से उसका दम घोट दिया॥

इन लोगों ने उसे हिलाया डुलाया पर जिन्दगी के कुछ चिन्ह नज़र न आये॥ इसको मरे कम से कम पांच छः घन्टे जरूर हो चुके थे॥ उसी रोज शामको उसकी लाश ऊपर लाकर जलादीगई और बिचारी बुढ़िया पार्वती एकलौते बेटे से हाथ धो बैठी॥ अभागी बिधवा तो पहले ही हो बैठी थी॥ उसके शोक रोदन और दुःख का बर्णन न करना ही अच्छा है॥

सातवां परिच्छेद।

मध्य विभाग।

इसी विभाग के डाकृर जी० एन० दास ने रिपार्ट की कि २२८ नम्बर की सुरंग के चोरद्वार का रक्षक रामा नम्बर ५१९०२ की मृत्यु इतफाकिया द्वार भीतर चले जाने से हुई है। दूसरी रिपोर्ट महाबीरसिंह इञ्जीनियर की हुई जिस में उन्हों ने नकशे नम्बर १४ में हवा आने जाने के लिये जिन २ सुरंगों में छेद बनने वाले थे, उन में उन्हों ने 'बी' घेरे के सुरंगों को भी शामिल किया था! क्योंकि बहुत सी गन्दी गैस धीरे २ छन २ के उस विभाग में इकट्ठी हो गई थी। अन्तिम रिपोर्ट में इञ्जीनियर साहब ने ओवरसीयर रामदास और फर्स्टक्लास कारीगर शोभासिंह के मेहनत, निर्भयता और साहस की सिफ़ारिश भी की। दस घण्टे बाद जब रविन्द्रनाथ अपने काम के ठिकाने पहुंचा तो वहां उसे यह हुक्म नामा मिला :---

'शोभासिंह--आज दस बजे मध्य विभाग में जाकर डाइरेकृर जनरल के आफिस में हाज़िर हो। फाटक और रास्ता 'ए' विभाग से जाने पर मिलेगा।

'जो कुछ हो' रविन्द्र ने सोचा आखिर यह पहली सिढ़ी तो तय हुई।

रविवार के दिन साथी कारीगरों के संग लोहापुर के इर्द गिर्द घूमते समय बात चीत से रविन्द्रनाथ को इस का बखूबी पता लग चुका था कि मध्य विभाग में रोज़ जाने की आज्ञा नहीं मिलती। इस जगह के बारे में तरह २ के गप्प उड़ा करते थे॥ कुछ लोग यह भी कहते थे कि

कई आदमियों ने छिप कर इस सुरक्षित स्थान में जाने की कोशिश की थी, फिर उन को किसी ने नहीं देखा ॥ इस विभाग के भीतर काम करने वाले कारीगरों से पहले ही इस बात की सख़्त कसम ले ली जाती थी कि वहां की कोई बात बाहर न कहें और यदि कोई इस प्रतिज्ञा को भङ्ग करता था तो एक गुप्त अदालत बड़ी निर्दयता से उन्हें प्राण दण्ड देती थी। बाहर से यहां आने जाने के लिये सुरंग काट कर एक रेल बनाई गई है, रात की ट्रेन में अजनबी लोग आते हैं। इस विभाग में बड़ी २ कमेटियां होती हैं और कभी २ सभा में अद्भुत अद्भुत लोग शामिल होते हैं, इत्यादि २, पर रविन्द्र ने इन सब अफ़वाहों पर कुछ विश्वास नहीं किया पर हां इतना उसे ज़रूर मालूम था कि इस विभाग में प्रवेश करना सहज नहीं है, लोहे तथा कोयले के खान में व ढलाई के काम पर उस के जितने जान पहचान थे उन में से कभी भी कोई उस बिभाग में जाने नहीं पाया था। इस लिये बड़ी ही उतकण्ठा से मन २ में खुश होते हुये नियत समय पर रविन्द्र वहां जा मौजूद हुआ, पहुंचते ही उसे अच्छी तरह से साबित हो गया कि वास्तव में बड़ी सख़्ती से यहां का सब भेद छिपाया जाता है। फाटक पर खाकी वर्दी पहने और कमर में तलवार तथा तमंचा लगाये दो आदमी इसका आसरा देख रहे थे ॥

इस फाटक के भीतर एक कोठरी थी जिसके सामने और एक फाटक था ॥ पहले बाहर वाला फाटक खोला गया और इसे बन्द करने के बाद तब भीतर का फाटक खुला और रविन्द्र के पास का नियम पूर्वक जांच करने और दसखत मोहर करने के बाद उसके दोनों साथियों ने एक सफ़ेद रुमाल खूब कसकर उसकी आंखों पर बांध दिया, फिर उसका हाथ

पकड़ कर चुप चाप उसके साथ चलने लगे॥ दो तीन हज़ार कदम चलने के बाद यह लोग एक सीढ़ी पर बढ़े और फ़िर एक दर्वाज़े के खुलने और बन्द होने की आवाज़ सुनाई दी इसके बाद रबिन्द्र के आंख की पट्टी खोलदी गई॥ पट्टी खुलने पर जो रबिन्द्र ने चारों तरफ़ देखा तो अपने को एक बड़े से कमरे में पाया, जहां कुछ कुर्सियां, एक काला तख़्ता एक लम्बा डेक्स जिस पर नकशा खीचने के ज़रूरी औज़ार रक्खा हुआ था॥ खिड़कियां बहुत ऊँचे पर थीं जिन में अन्धा शीशा लगा हुआ था॥ थोड़े ही देर बाद दो शख्स जो किसी यूनीबरसिटी के अधिकारी मालूम पड़ते थे इस कमरे में आये और आते ही उनमें से एक ने रबिन्द्र से कहा 'अपने काम में मुस्तैदी दिखाकर तुमने कुछ नामवरी हासिल की है इस लिये तुम्हारी परीक्षा की जायगी कि तुम सांचा बनाने के बिभाग में दाखिल होने के लायक़ हो या नहीं॥ क्या तुम हमारे सवालों का जबाब देने के लिये तयार हो ? रबिन्द्र ने बड़ी नम्रता से परीक्षा देने की सम्मति जताई॥ दोनों परिक्षकों ने उससे रसायनशास्त्र, बीज गणित, के कई प्रश्न किये और रबिन्द्र भी बड़ी सफाई और यथार्थता से सब प्रश्नो का उत्तर देता गया॥ इसके बाद एक बड़े पेचीले इञ्जीनियरिङ्ग का नकशा खीचने के लिये देकर परिक्षकों ने कहा 'इसके लिये तुम्हें दो घन्टे का वक्त दिया जाता है, यदि इसमें भी तुम ठीक उतरे तो 'अति श्रेष्ठ और परम संतोष दायक सार्टीफिकट के साथ तम दाखिल कर लिये जाओगे" ॥ यह कहकर दोनों शकस कमरे के बाहर चले गये और रबिन्द्रनाथ अकेला अपने काम में लगा रहा॥

नियत समय के बाद जब दोनों परिक्षक वापस आये तो रबिन्द्रनाथ के चित्र को देख कर ऐसा प्रसन्न हुये कि

अपने पहले वादे के साथ (हमारे कारखाने में दूसरा कोई नकशे में ऐसी लियाक़त नहीं रखता) इतना उसमें और बढ़ा कर डाइरेक्टरों से उसकी सिफ़ारश की ॥

हमारे युवा कारीगर की बांह पकड़ कर फिर उन्हीं दोनों रक्षको ने उठाया और पहले की नाई फिर उसकी आखों में पट्टी बांध कर उसे डाइरेक्टर जेनरल के आफ़िस में ला खड़ा किया ॥

'सांचा खींचने के चित्रशालाओं में तुम भर्ती किये जाते हो' डाइरेक्टर ने कहा क्या तुम वहां के सब नियम और कानून की पाबन्दी करने को तय्यार हो' ॥

'इसका क्या क्या नियम है मुझे कुछ मालूम नहीं पर मैं अनुमान करता हूं कि वे मेरे मंजूर कर लेने लायक ही होंगे'॥

'सुनो! डाइरेक्टर ने कहा, पहला नियम तो यह है कि जब तक तुम्हारी नौकरी कायम रहेगी तुम्हें इसी बिभाग के भीतर रहना पड़ेगा ॥

खास हुक्म नामे और पास के बिना बाहर नहीं जाने पाओगे दूसरे तुम्हें फ़ौजी कायदे की मातहती में रहना पड़ेगा ओर फौज़ी कानून की नाई तुम्हें आंख बन्द कर अफ़सरों की आज्ञा माननी पड़ेगी तथा आज्ञा भंग करने के अपराध की सजा भी फौजी दी जायगी ॥

दूसरी तरफ़ यह क़ायदा भी है कि तुम एक नियोजित सैना के नानकमिशनड अफ़सरों के नाई समझे जाओगे और सब से ऊंचे ओहदे तक तुम्हारी बाकायदा तरक्की भी होती जायगी ॥ तीसरे तुम्हें जिन२ बिभागों में जाने का अख़्तियर होगा वहां की बातें कभी किसी से न कहोगे इस बात की धर्म्म से क़सम खानी पड़ेगी ॥ चौथे तुम्हरी जो कुछ चिट्ठीयां बाहर जायगी या बाहर से तुम्हारे पास आवेंगी उन्हें

तुम्हारे अफ़सरों को खोलकर पढ़नेका अख़्तियार होगा और सिवाय अपने बाल बच्चों के तुम दूसरे किसी से पत्र ब्योहार भी नही करने पाओगे ॥

तात्पर्य्य यह है कि यह एक प्रकार का कैदखाना है रबिन्द्र ने मन में कहा और धीरे से जवाब दिया 'यह नियम सब दुरुस्त हैं और मुझे मंजूर हैं ॥

अच्छा अब हाथ उठाकर कसम खाओ॥ चौथी चित्र-शाला में तुम नकशा नवीस नियत किये जाते हो ॥ रहने के लिये तुम्हें एक कमरा मिलेगा और भोजन भी वहीं पहुंच जाया करेगा ॥ साथ कुछ असबाब तो नही है ? 'जी नहीं' रबिन्द्र ने जवाब दिया' मुझे यह मालूम न था कि किस लिये मेरी बुलाहट हुई है, इस लिये अपनी सब चीज़ें अपने कमरे में छोड़ आया हूं ॥

'वह सब यही पहुंच जायगी, तुम्हें बाहर जाने की कोई ज़रूरत नही' ।

मैं ने अच्छा किया कि अपने नोट संकेत के अक्षरों में लिखे नहीं तो इन की निगाह यदि उस पर पड़ जाती तो सब खेल चौपट हो ही चुका था रविन्द्र ने मन में सोंचा ।

शाम होने के पहले ही हमारे जवान को एक इमारत के चौथे खण्ड में साफ़सुथरा एक छोटा सा कमरा मिला, जहां से नीचे एक बड़ा चौड़ा सा हाथा दिखाई देता था । जैसा उसने पहले सोचा था, यहां वैसी उदासी न थी । उस के साथी सब जो उस के साथ काम करते थे और जिन से उस की जान पहचान हो गई थी साधारण तौर से शान्त स्वभाव के मनुष्य थे जैसा कि मेहनती कारीगर अक्सर हुआ करते हैं । मन बहलाने के लिये यह लोग हररोज़ शाम को गाया बजाया करते थे उसी मकान के पुस्तकालय में जाकर

पुस्तकें देखा करते थे। इन लोगों को नियत समय पर वैज्ञानिक और साहित्य विषय की परीक्षा भी देनी पड़ती थी और उस के लिये यह लोग पुस्तकालय से पुस्तकें ले २ कर फुरसत के वक्त पढ़ा करते थे। पर यहां ताज़ी हवा और स्वतन्त्रता का बड़ा संकोच था ! तात्पर्य्य यह कि एक तरह का खासा कालिज था जहां कि पूरे जवान लोगों पर लड़कों से ज्यादः सख़्ती की जाती थी, और यह विचारे ज्यों त्यों कर समय काटते थे।

जाड़ा तो इन्हीं कामों में बीत गया और रविन्द्र भी अपने काम में जी जान से लगा रहा ! थोड़े ही दिनों में अपनी निपुणता, बुद्धिमानी, फुर्ती और हर विषय में आसाधारण उन्नति के कारण होशियार कारीगरों में यह फ़र्द हो गया । सब लोग इस की बुद्धि, निपुणता और चित्रकारी की तारीफ़ करने लगे। जब कभी कोई पेंचीला काम आ पड़ता, फ़ौरन लोग उस के पास जाके, यहां तक कि ज़रूरत पड़ने पर अफ़सर लोग भी उस के अनुभव का सहारा लेते और उस की यथा योग्य खातिरी करते थे, पर यदि सांचे खीचने के बिभाग में ही अच्छी तरह प्रवेश कर रविन्द्र ने सोंचा हो कि मैं अति गुप्त भेदों के कुछ निकट पहुंच गया हूं, तो यह उस की भूल थी।

इस समय उस के दिन तीन सौ गज़ के घेरे के लोह के पिञ्जरे में बीतते थे, क्योंकि मध्य बिभाग के चारों तरफ़ लोहे का छड़ लगा हुआ था।

धातुओं की कारीगरी में अपनी योग्यता दिखाने की उत्कट अभिलाषा रहते भी उसे स्टीम इनजिनों के नक़शे ही खींच कर संतोष करना पड़ता था । तोप, छापे खाने और बहुत से कामों के लिये वह नाना प्रकार

के आकार और रंग रूप के नक़शे तय्यार किया करता था। वह हर दम काम में रहता था। दम मारने की भी फ़ुरसत नहीं मिलती थी।

रविन्द्रनाथ को 'ए' विभाग में आये चार महीने हो गये, पर शुरू २ यहां आने पर लोहापुर के बारे में उसे जो कुछ मालूम था। उस से कुछ भी ज्यादः उसे मालूम न हो सका। ज्यादा से ज्यादा उसे अपने खींचे हुये कलों की बनावट का मामूली हाल मालूम हो सका, सो भी कुछ २, पूरा नहीं। उसे इस बात का पता लग चुका था कि इस मकड़ी के जाले के बीचो बीच, लोहापुर की एक खास चीज़ बड़ी ही भयानक बनावट की एक मीनार है जो आस पास की सारी इमारतों से बहुत ऊँची है। बातों ही बात में उसे यह भी पता लग गया कि प्रोफ़ेसर निशानाथ का बास-स्थान इसी मीनार के नीचे है। और वह विख्यात गुप्त कमरा जिस का इतना ज़िक्र है इसी मीनार के बीचो बीच में है। ऐसा कहा जाता था कि इस के नीचे एक सुरंग है, जो भीतर से लोहे के पत्तर से मढ़ा हुआ है और एक खास तरह के पेंच के ताले से इस सुरंग का द्वार खुलता और बन्द होता है लोग यह कहते थे कि निशानाथ एक अनहोनी ताकत की तोप तय्यार कर रहा है, जिस से वह किसी देश पर कब्ज़ा जमाना चाहता है।

रविन्द्र ने भेष बदलने और कमन्द के सहारे दिवाल पर चढ़ने की बहुत सी तजबीजें सोंची पर बिचार कर देखने पर इस का काम में लाना असम्भव प्रतीत हुआ क्योंकि इन मोटे २ प्रचण्ड दीवारों पर रात को हर घड़ी बिजली की तेज़ रोशनी हुआ करती थी और उस पर हरदम बिश्वासी संत्रियों का पहरा रहता था, पर मान लो कि यदि मैं ने

इन सब कठिनाइयों को सह भी लिया तो सिवाय इधर उधर की बातों के असली बातों का अच्छी तरह जानना असम्भव है॥ 'खैर क्या हुआ' रविन्द्र ने सोचा मैं ने तो इस बात की कसम खाई है कि निशानाथ को अपने ऊपर गालिब नहीं होने दूंगा और मैं उस से हार कर अपनी कोशिशों से हरगिज़ बाज न आऊँगा । क्या हर्ज है, यदि दस वर्ष भी बीत जांय तो बीत जांय, पर एक न एक दिन कुल भेदों का पता लगाये मैं यहां से टलने वाला नहीं । ज़रूर यहां का भेद जानूंगा। शान्तिपुर आनन्द की हिलोरे ले रहा है, इस के तथा सर्व साधारण के उपकार करने वाली जो सभायें वहां हैं उन की दिन पर दिन उन्नति हुई जा रही है और हताश मनुष्यों से हृदय में आशा के नये अङ्कुर उग रहे होंगे । इस में कोई सन्देह नहीं कि हरिनाथ की इस सुफलता पर निशानाथ जरूर ही जल भुन गया होगा और जरूर ही दी हुई धमकी का नतीजा दिखावेगा। क्या लोहा-पुर और यहां के प्रचण्ड कारखाने यह प्रतीत नहीं करा रहे हैं' इन्हीं सोच विचार में कई हफ़्ते गुजर गये ॥

यों हीं एक दिन जब कि मार्च का महीना था, खाकी वर्दी डाले चौकीदारों में से एक ने रविन्द्रनाथ को आकर इत्तला दी कि डाइरेक्टर जनरेल साहब आप को बुलाते हैं । वहां पहुंचने पर इस अफ़सर ने कहा 'निशानाथ ने यह आज्ञा भेजी है कि एक सब से अव्वल नकशा नवीस मेरे पास भेज दो अत एव तुम्हीं इस के लायक समझे गये हो और वहां भेजने के लिये चुने गये हो । भीतरी मण्डली में जाने की सब तय्यारी कर लो । अब से लफ़टनेण्ट के ओहदे पर तुम्हारी तरक्क़ी की जाती है ।

रविन्द्र मन माना मौका पाकर फूला नहीं समाता था।

'बड़े खुशी की बात है कि मैं ही तुम्हे ऐसे शुभ समाचार के सुनाने का ज़रिया हुआ हूं यह आदमी कहने लगा और ईश्वर करे तुम इसी तरह सच्चे उत्साह परिश्रम और ईमानदारी से काम करते हुये सब से ऊंचे पद पर सुशोभित हो। अच्छा अब जाओ। अस्तु इतने दिनों की इन्तजारी के बाद हमारे जवान की अभिलाषा पूर्ण होने के चिन्ह दिखाई देने लगे और ट्रंक में कपड़े वग़ैर। भर कर खाकी वर्दी वाले पहरेदार के साथ अजीब तरह की राह और सुरंगो को तय करता हुआ हमारा जवान 'उसी प्रचण्ड मीनार' के नीचे जा खड़ा हुआ अब तक केवल जिस की ऊँची चोटी ही को उसने आकाश से बातें करते देखा था।

अब तो इस के चारों तरफ़ का दृश्य ही नया दिखलई देने लगा। इतने ही में समझ लो कि मानो कोई आदमी कोयले की खान से निकल कर सहसा कश्मीर के आनन्द बन में आ पहुंचा हो। प्रोफ़ेसर निशानाथ के बासभवन के चारों तरफ़ का मैदान नाना प्रकार के फल फूल और सब्जी से शोभायमान था। बाग के चारों तरफ़ किनारे २ ताड़ नारियल, खजूर देवदार और शीशम के पेड़ लहरा रहे थे और उन्हीं के नीचे पास पास अनारस, अमरूद और सन्तरे के पेड़ों में पक्के २ फलों को देख कर जीभ से पानी टपका पड़ता था, इस के अलावे करीने से लगाई हुई फूलों की क्यारियों में रंग बिरंगे फूल आंखों को तृप्त करने के अलावे मन को अपनी ओर खींच लेते थे तथा उन की सुगन्धी से वायू सुगन्धित हो रही थी। रङ्ग विरङ्गे पक्षियों का इस टहनी से उस टहनी पर कूदना फिरना और श्यामा, कनेर, तथा सुग्गों की मीठी मीठी सुर से चुह चुहाना और कोयल का सप्तम स्वर से कूकना अजीब समा दिखा रहा था। बाग

के बीचों बीच एक बड़ी सी झील थी जिसमें एक पहाड़ी झरने का पानी आता था । यह झील पचीस मील तक आगे ले जाकर चम्बल नदी से मिला दी गई थी और इसी झील से छोटी २ नहरें काट कर पेड़ पल्लवों में पानी पहुंचाया जाता था और मीनार के सामने घास का एक बड़ा लम्बा चौड़ा मैदान सब्ज़ मखमल के फ़र्श का धोखा दिलाता था।

रबिन्द्रनाथ ने छ: महीने से कोयले तथा जलते हुए भठ्ठों में लाल २ अंगारे ऐसा लोहा और कोयले के धूंये के सिवाय एक हरी पत्ती भी नहीं देखी थी, इसलिये इतने दिनों बाद ऐसा सुहावना दृश्य देख कर उसका जी खिल गया। लाल कंकरीले रास्ते से होकर जो क्रमश: ढालुवां होता गया था और जिसके दोनों किनारे गोल २ खम्भे लगे हुये थे, वह संगमरमर के सीढ़ी पर आ चढ़ा। सीढ़ी पर चढ़ते समय पैर के नीचे की धीमी २ घड़घड़ाहट से उसे मालुम होगया कि सुरंग वाली रेल इसी के नीचे से गई है। ऊपर जाकर उसने सात आठ नौकरों को लाल वर्दी पहने और चपरास लगाए देखा जिनका सर्दार हाथ में एक अर्सा लिये हुए बड़े शान से द्वार पर बैठा था। रबिन्द्र के नाम बतलाने पर एक नौकर उसके साथ हो लिया और एक बड़े सुन्दर सजे हुए दालान में होता हुआ उसे ले चला, इस दालान के दिवारों का रंग काला था और उसपर सुनहरे बेल बुटे का बड़ा सुन्दर काम किया हुआ था इसके बाद दूसरा दालान लाल सुनहरे काम का और तीसरा पीले सुनहरे काम का मिला जहां उसे ठहरा कर नौकर भीतर चला गया। पांच मिन्ट के बाद वह लौट आया और उसे बड़े ही ठाट बाट से सजे हुए एक सब्ज़ सुनहरे काम के दफ़्र में ला खड़ा किया। यहां ही प्रोफेसर निशानाथ एक बड़ी सी मखमली कुर्सी पर बैठा हुआ चुरुट पी रहा था और बगल में एक गोल

आबुनूस की टेबुल पर कांच के पात्र में लाल अंगूरी शराब रक्खी हुई थी । यद्यपि निशानाथ इतनी सजधज और शान शौकत के साथ बैठा हुआ था पर रबिन्द्र की तेज आंखों ने उसके पेटेन्ट चमड़े के जूते पर का मट्टी का छीटा देख ही लिया। निशानाथ ने बिना सिर उठाये ही बेपरवाही से पूछा "क्या वह नकशानवीस तुमही हो"। 'जी हजूर' रबिन्द्र ने जबाब दिया ।

निशानाथ। "मुझे तुम्हारे नकशे बहुत पसन्द आये हैं, पर क्या तुम फ़क्त स्टीम इञ्जीनों ही का नक़शा बनाना जानते हो ?" "और किसी विषय में मेरी परिक्षा नहीं की गई" रबिन्द्र ने जबाब दिया ।

निशानाथ ने पूछा 'क्या तोप के ढालने की विद्या से तुम्हें कुछ इल्म है? 'जी हां योंहीं फुरसत के वक्त जी बह-लाने के लिये मैं कभी २ इस विद्या का भी अभ्यास किया करता हूं । रबिन्द्र के इस जबाब से निशानाथ ने उसकी ओर सिर उठा कर देखा । 'अच्छा आओ हमारे साथ एक तोप का नकशा तो बनाओ,पर शायद ही तुम पगले सोहन-सिंह का मुकाबला कर सको जो आज सवेरे अपनी बेवकूफ़ी से हम सभों को उड़ाही चुका था, ख़ैर कहो कि जान बच गई । निशानाथ को ऐसी बेपरवाही से एक मौत का ज़िक्र करते देख कर रबिन्द्र को उसके दिल की सख्ती का पूरा बिश्वास हो गया ।

—:o:—